DrSCUSSION UNDER RULE 176 RE SITUATION IN BIHAR

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURAB1 MUKHOPADHYAY) : Mr. Rajnarain.

SHRI HARSH DEO MALAVIYA (Uttar Pradesh) : What is the time allotted ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Twenty-five minutes for him.

SHRI HARSH DEO MALAVIYA : I hope he will stick to it.

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : माननीया, आज बिहार की स्थिति पर जब मैं इस सदन के माननीय सदस्यों के सम्मुख कुछ कहने पर विवश होता हूं तो बात शुरू करने के पहले आपके द्वारा मैं विनम्रता से एक निवेदन करना चाहूंगा । हम जनतंत्री और संसदीय प्रथा को अख्तियार किए हुए हैं । जनतंत्र की एक मान्यता है कि दूसरों की बात सुनो, अपनी बात सुनाओ, यदि दूसरों की बात अपने लिए अरुचिकर हो तो भी सुनो और अपनी बात दूसरों के लिए अरुचिकर हो तो भी दूसरे सुनें । यदि इस मूल मान्यता का हम तिरस्कार कर दें तो जनतंत्री पद्धति खराब हो जाती है । इसलिए मैं आपसे निवेदन करूंगा और सम्माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि वे बिहार की स्थिति पर हृदय से और दिमाग से काम लें, भावावेश से काम न लें । आखिर बिहार की स्थिति बिगड़ी क्यों ? बिहार की स्थिति आज ऐसी है क्यों ? जो कार्य-प्रणाली आज तक रही है, अगर वही कार्य-प्रणाली रखनी है तो फिर बिहार की स्थिति पर चिन्ता क्यों ? यह सभी प्रश्न हैं जिनको मैं पहले ही रख देना चाहता हूं ।

माननीया, हमारे मित्र श्री हर्षदेव मालवीय जी की, जब तक मैंने उनको देखा नहीं था, मेरे मन में बड़ी इज्जत थी । मैं नहीं चाहता कि हमारे दिल में उनकी वह इज्जत कम हो । (*Interruption*) बिहार की स्थिति क्या है, क्या वातावरण है उस वातावरण का मैं दूसरों की बोली में सुना रहा हूं । एक संकट मोचन जी हैं, वे कविता करते हैं । बिहार की स्थिति पर उनकी कुछ कविताएं हैं, रचनाएं हैं, वे सभी मैं माननीय सदस्यों को सुनाना चाहता हूं । इसका हेडिंग है "रोग कुछ, इलाज कुछ"—

बिहार से निकलना चाहिए था,
भ्रष्टाचार को, बेकारी को,
भुखमरी को, लाचारी को,
पर निकाले गये राजनारायण ।
बुद्धि का बन्द है वातायन ।
ट्रेन रोक कर खोजना चाहिए था,
बिना टिकट सवारों को,
चोरों को, आवारों को,
पर खोजे गए चरण सिंह ।
विरोध करना चाहिए था,
भ्रष्ट शासकों का, मंत्रियों का,
टिप लेने वाले सन्तरियों का,
ईमानदारी के विनाश का,
पर विरोध हुआ जयप्रकाश का ।
रोग कुछ और इलाज कुछ और ।
भगवान जाने कहां मिलेगी,
बिहार के भविष्य को ठौर ।

यह एक स्वतंत्र अखबार है, बहुत प्रचलित अखबार है जिसमें संकट मोचन जी की कविता है । मैं चाहूंगा कि हमारे मित्र इसको हृदय में रखें । दूसरी कविता है —

कुर्सी निकालती है पैसों का जलूस,
पर बिहार में छात्रों ने निकाला भैंसों का जलूस ।
भैंसा जो यम का वाहन है, हुआ उन्हीं का प्रदर्शन है
जिससे यमराज खुश हो जाएं
और वह गोली न चलायें ।

बिहार के छात्रों ने भैंसे का जलूस इसलिए निकाला था कि हे यमराज महोदय, अब तो प्रसन्न हो जाओ, अब हम छात्रों पर गोली न चलाओ । इसलिए मैं चाहूंगा कि हमारे सम्मानित सदस्य बिहार की स्थिति को ठीक से समझें । एक और कविता है, अंजाम क्या होगा । सुनिये:—

पूरे बिहार पर,
असन्तोष के प्रेत की छाया,
कांप उठी आंदोलित काया,
पर समझ में आता नहीं,
दिल्ली की माया ।
जो हर मसले को
लोकशाही के नाम पर टालती है
अपने करतब पर
परदा डालती है ।
शायद उसे मालूम नहीं,
परिणाम क्या होगा ?
कुर्सी और धरती की लड़ाई का
अंजाम क्या होगा ?

मैं चाहता हूं कि हमारे मित्र लोग आज जो बिहार में कुर्सी और धरती की लड़ाई है उसके अंजाम को जरा समझें ।

माननीया, एक अखबार है 'जनवार्ता' । 20 तारीख अप्रैल और 18 तारीख अप्रैल, 1974 को उसने अपने अग्र लेख लिखे हैं । मैं उसकी कुछ पंक्तियों को सुना देना चाहूंगा; क्योंकि सदन के सम्मानित सदस्यों को बिहार की स्थिति से जानकारी न कराऊं तो यह हमारी धृष्टता है—

"नये असहयोग आन्दोलन की दुन्दुभी"

जो जनता को गोली मारे वह एक जालिम सरकार है । जो जालिम सरकार है उसकी हमें नहीं दरकार है। यह उद्घोष तो बहुत से दलों के नेता करते हैं । लेकिन इसे पहली बार व्यवहार में चरितार्थ किया, दो लाख व्यक्तियों की सार्वजनिक सभा में जालिम सरकार के तिरस्कार की घोषणा और गोली कांड की न्यायिक जांच न कराने पर अपनी अस्वीकृति के रूप में श्री जयप्रकाश नारायण ने की और कहा । बड़ी भयंकर बात है । अभी तक तो कमिटेड जुडिशियरी की बात होती थी । प्रतिबद्ध न्यायपालिका की बात होती थी । अब कमिटेड संसद् के सदस्यों की बात हो रही है । हम कहां जा रहे हैं ? मैं चाहूंगा कि हमारे मित्र बुजुर्ग घर मंत्री श्री दीक्षित यहां बैठे हुए हैं, जरा इन बातों की ओर ध्यान दें । उनके घर मंत्री रहते हमारे घर में कितनी अग्नि की ज्वाला प्रज्जवलित हो रही है उसमें तमाम जल कर क्षार होगा, इसको समझना चाहिए ।

माननीया, इस अग्र लेख को मैं पढ़ रहा हूं । आज की सरकारें नैतिकता को तिलांजलि दे चुकी हैं तो निष्पक्ष असहयोग करने के अलावा कोई कल्याणकारी और रचनात्मक रास्ता हो ही नहीं सकता है । जिस सरकार की मशीनरी लाठी गोली चलाती है और अत्याचार कराती है उससे जांच करने के लिए प्रार्थना करने की क्या जरूरत है । इसलिए जयप्रकाश नारायण जी ने कहा कि आज न्यायिक जांच कराने की मांग करना उचित नहीं है; क्योंकि आज जुडिशियरी कमिटेड है । उन्होंने इसकी भी चुनौती दी है कि क्या कोई जांच आयोग ऐसा है जिसके बारे में बताया जा सकता है कि जिसकी रिपोर्ट निष्पक्ष है । इसलिए उन्होंने कहा कि हम न्यायिक जांच की मांग नहीं करेंगे । उन्होंने एक वकील और 3 आदमियों को जो जानकार हैं, जिनकी जनता में ख्याति है, उन लोगों की नियुक्ति कर दी है कि 15 दिन के अन्दर रिपोर्ट दें ।

"आकाशवाणी की पातालवाणी", मैं चाहूंगा कि इसको आपकी इजाजत से पढ़ूं । इसमें उसने लिखा है, अपने अग्र लेख में कि संसदीय लोकतंत्र के अग्रणी देश ब्रिटेन में प्रेस संबंधी रायल के कमीशन के समक्ष एक समाचार के मामले में गलत नीति के उदाहरण के रूप में एक पत्र की शिकायत की गयी कि उसने 23 वर्ष तक श्री विस्टन चर्चिल, राष्ट्र नायक का नाम नहीं छापा । पत्र की ओर से इस के विरुद्ध यह सफाई दी गयी कि चर्चिल का नाम इस अवधि में एकाधिक बार छपा । यहां चाहे कुछ भी हो जाए, सरकार जो रुचिकर रिपोर्ट है उस को निकलवा देती है और उस के बाद कोई सुनवाई नहीं हो रही है । एक बिलकुल झूठी खबर है, इस अखबार ने भी उस को झूठी कहा, लेकिन मैं उसको ब्यौरे से कह देना चाहता हूं । हमारे देश में कुछ शक्तियां है जिन्होंने जयप्रकाश जी को फासिस्ट नेता कहा, सुभाषचन्द्र बोस को फासिस्ट कहा, डा० राम मनोहर लोहिया को फासिस्ट कहा। 1942 की जनक्रान्ति साम्राज्यवादी युद्ध कहा। हमारे यहां बहुत से ऐसे चेहरे दिखाई दे रहे हैं जो कि इस बात से अवगत हैं, वह जानते होंगे जब कि पीपुल्स वार का नारा लगा था और हमारे कम्युनिस्ट पार्टी के लोगों ने कहा था कि आज देश में साम्राज्यवादी शक्तियां संघर्षरत नहीं हैं । 1939 से, जब से युद्ध शुरू हुआ, द्वितीय विश्वव्यापी युद्ध, तब तो वह कहते रहे कि यह युद्ध साम्राज्यवादी है । गांधी जी ने उस के लिए व्यक्तिगत सत्याग्रह चलाया था, तो माननीया, उन्होंने कहा था कि गांधी जी अंग्रेजों के दलाल हैं, वह ब्रिटिश एजेंट हैं और अंग्रेजों से मिल कर जनक्रान्ति को टालने के लिए गांधी जी ने यह व्यक्तिगत सत्याग्रह चलाया है । यह जो सी० पी० एम०, सी० पी० आई० से अलग हो गयी, इस से मैं बहुत ही प्रसन्न हूं, मैं खुश हूं, मगर सी० पी० आई० के लोग आज कह रहे हैं कि जयप्रकाश जी फासिस्ट हैं ।

एक माननीय सदस्य: वह सी० पी० आई० के एजेंट हैं ।

श्री राजनारायण: यह सी० पी० आई० के लोग आज जयप्रकाश जी को कहते हैं अमरीकन एजेंट । पहले फासिस्ट थे जर्मनी और जापान के एजेंट अब अमरीकन एजेंट हो गए । मगर 1942 में जब तक हिटलर के बम और गोले पेरिस और लंदन पर गिरते थे, तब तक तो वह युद्ध कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा साम्राज्यवादी युद्ध कहा जाता रहा और जैसे ही हिटलर की तोपों के गोले मास्को में गिरने लगे, जैसे ही स्टालिन में और अंग्रेजों में फ्रेंडशिप कायम हुई तो वह तीन मित्र राष्ट्र बन गए और वह साम्राज्यवादी युद्ध बदल कर जनक्रान्ति हो गयी, पीपुल्स वार हो गयी । मैं समझता हूं कि हमारे लघु भ्राता जो आज हमें छोड़ कर चले गये हैं कांग्रेस की गोद में और हमारे जो दूसरे भाई उधर बैठे हैं वह इस बात को मानते होंगे कि इस के पीछे भावना क्या थी। आचार्य नरेन्द्र देव जी ने एक लेख लिखा था : "Is War Indivisible" आचार्य नरेन्द्र देव जी ने कहा था कि यह युद्ध डिविजिबल है, यह पूरा युद्ध बांटा जा सकता है । यह रूस के लिए युद्ध हो सकता है, लेकिन जब तक भारत गुलामी में जकड़ा हुआ है तब तक यह जनक्रान्ति नहीं है, उस समय तक यह साम्राज्यवादी युद्ध ही रहेगा । माननीया, हम लोगों ने अपनी पूरी जवानी गंवा दी, अपने सारे अरमानों को ले कर हम ने अंग्रेजों को चुनौती दी और उन की चूलें हीली कर दी थीं, उस समय हमारे मित्र जो आज जयप्रकाश जी को फासिस्ट और अमरीकन एजेंट कहते हैं, कहने की धृष्टता करते हैं वह कहां थे । वह सामूहिक जुर्माना वसूल करवाने के लिए, हम लोगों को गिरफ्तार करवाने के लिए, हम लोगों का भेद अंग्रेज साम्राज्यवादी ताकतों को बताने के लिए काम करते थे । उस समय यही तो उन का काम था ।

श्री योगेन्द्र शर्मा (बिहार) : प्वाइंट आफ आर्डर राजनारायण जी कम्युनिस्ट पार्टी के 1942 के रोल की चर्चा कर रहे हैं और चर्चा करते हुए उन्होंने जो बातें कहीं वह सब तथ्यतः गलत हैं और ऐतिहासिक तौर पर गलत हैं। बल्कि हकीकत यह है कि जयप्रकाश जी जो 1942 के आंदोलन में . . .

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Mr. Sharma, I told you that some speaker from your Party will also speak.

श्री योगेन्द्र शर्मा : मेरा तो प्रश्न यह है कि श्री जयप्रकाश जी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के हत्यारे आर० एस० एस० के लोगों के साथ मिलकर ये चीजें कर रहे हैं। इस बात पर ये कम्युनिस्ट पार्टी को गाली दे रहे हैं . . .

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : You will take your opportunity. Please don't interrupt.

श्री भैरों सिंह शेखावत (मध्य प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदया, आर० एस० एस० के लोगों ने महात्मा गांधी की हत्या नहीं की है। यह बिल्कुल गलत कह रहे हैं।

श्री राजनारायण : माननीया, मैं अदब के साथ अर्ज करना चाहता हूं कि यह सारा समय मेरे समय में शामिल नहीं होना चाहिए।

मैं यह कहना चाहता हूं कि कम्युनिस्ट पार्टी ने भी गलती की, देशद्रोह का काम किया . . .

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal): Now, is it a debate for attacking the Communist Party ? Is tirelatable to the Bihar situation ? If it is so, then let it be taken as such. We are not running away. We shall be discussing it on its merits. Who supported the Anand Margis ? Who said all kinds of things? We have been saying that you are being financed by the Birlas. If in relation to Bihar we have done anything wrong, let them say so. We will reply to it when our member speaks. You have one point of view and one line of action. We have another point of view and another line of action. Let this be debated in a dispassionate and objective manner in the House.

श्री राजनारायण : मैं तो पार्लियामेन्टरी पद्धति को मानता हूं किसी को कुछ नहीं कहता हूं।

माननी ा, मैं पुनः आपके द्वारा निवेदन करूंगा सम्मानित सदस्यों से कि मैं भावावेश में नहीं हूं। मैं बताना चाहता हूं कि रात-दिन मेरे साथ रहने वाले, कुर्ता-पजामा पहनने वाले गोपाल दास जो जोनपुर के रहने वाले हैं इन्होंने यह करवाया। सारे रेल के खम्बे, रेलवे स्टेशन तोड़ दिए। केवल मुगलसराय, इलाहाबाद, मिर्जापुर रह गए। जब हमारे जवान जा रहे थे तो कम्युनिस्टों ने वहां जाकर साजिश की . . .

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Do you want a debate on this or not ? Please don't interrupt. I won't allow it.

श्री राजनारायण : माननीया, वहीं तो आ रहा हूं। अगर आप बीच में ऐसे रोकेंगी तो मैं बोलूंगा कैसे। आप जरा पेशेंस रखिए।

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती पूरबी मुखोपाध्याय) : आपका टाइम चला जाएगा। आप बोलिए।

श्री राजनारायण : जैसे आप भूपेश गुप्त को सुनती हैं, जैसे आप हर्षदेव मालवीय को सुनती हैं वैसे ही हम को भी सुनें।

माननीया, मैं बताना चाहता हूं कि आज से कुछ दिन पहले गंडासा और पिस्टल से लैस, बम, गोले लेकर कम्युनिस्ट पार्टी ने बेगूसराय में हमला किया . . .

श्री योगेन्द्र शर्मा : झूठ है, बिल्कुल झूठ है। इसके लिए पार्लियामेन्टरी कमेटी बनाई जाए जो इसकी जांच कर सके।

श्री राजनारायण : शर्मा जी अगर सहमत हैं तो एक पार्लियामेन्टरी कमेटी बना दी जाए जो इसकी जांच करे।

श्री गुणानन्द ठाकुर (बिहार) : ठीक है, हम तैयार हैं। इसकी जांच होनी चाहिए।

(*Interruption*)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (राजस्थान) : कांग्रेस के लोग भी कहते हैं, अपोजिशन के लोग भी कहते हैं तो कमेटी बना देनी चाहिए।

(*Interruption*)

श्री राजनारायण : माननीया, मैं अपने मित्र श्री शर्मा के प्रस्ताव का स्वागत करता हूं और मुझे बड़ी खुशी है कि इन्द्रदीप जी ने भी स्वागत किया, कि एक कमीशन बना दिया जाए। आप जरा लोगों को बीच में बोलने से रोकिए। मेरा भाषण चलने दीजिए। हमारी भोजपुरी में एक कहावत है कि सूप तो बोले बोले चलनी क्या बोले जिसमें सौ सौ छेद हैं ?

श्री योगेन्द्र शर्मा : चलनी कोसे सूप को जिसमें हजारों छेद।

श्री राजनारायण : मैं नहीं जानता बिहार की स्थिति क्या है। अगर वहां की बातों को समझा नहीं जाएगा तो मुझे अफसोस है कि शायद बिहार की स्थिति को हम ठीक से हृदयंगम नहीं कर पाएंगे। इसलिए मैं पुनः माननीय सदस्यों से अपील करूंगा कि वे अपने हृदय में शांति रखकर हमारी बातों को सुनें।

"लाक्षागृह काण्ड के बाद वन-वन भटकते फिरते पांडवों को पांचाल नरेश द्रुपत की पुत्री कृष्णा, स्वयंवर में धनुर्धर अर्जुन द्वारा मत्स्यवेध किये जाने पर, मिल गयी तो उन्होंने वन की झोपड़ी में वापस आने पर चौंकाने के लिए दरवाजे से ही आवाज दी "मां हम आज एक अनुपम उपहार लाये हैं" । कुन्ती ने असलियत को जाने बिना भीतर से कहा "पांचो भाई उसका उपयोग करो" मां के इस वचन को आज्ञा के रूप में शिरोधार्य कर पांचो भाई पतिव्रता द्रोपदी के पति बन गये । बिहार में सत्तारूपी द्रौपदी का इससे भी बुरा हाल हुआ है । दिल्ली रूपी मां के आदेश और सलाह के अनुसार मजबूत खूंटे वाले जिन 9 पुराने कैबिनिट मन्त्रियों तथा एक पुराने राज्य मंत्री सहित चार नये सदस्यों की सरकार सत्ता का भोग करने के लिए बनी है वे पांचों पाण्डवों की तरह आपस में घनिष्ट तथा एकमत नहीं बल्कि परस्पर विरोधी गुटों के है ।"

यह है बिहारी नाटक : दूसरा अंक, तीसरा दृश्य— "जनवार्ता" में 20-4-1974 का लेख ।

अब मैं आ रहा हूं माननीया— हमारे बहुत से मित्र इसको एक दिन, दो दिन, चार दिन की घटना न समझें नित्य प्रति वहां चीजें बद से बदतर होती जाती हैं । बिहार में जुल्म, अन्याय, भ्रष्टाचार, महंगाई और गरीबी का मामला बढ़ते बढ़ते वहां के विद्यार्थियों, वहां के नवयुवकों में, वहां की आम जनता में जो क्रोध की ज्वाला को भभका दिया है, इसलिए मैं चाहता हूं हमारे मित्र उन दृश्यों को ठीक से समझें । श्री ललित नारायण मिश्र हमारे मित्र हैं, आप यह न समझिए मैं श्री मिश्र को यहां से जानता हूं । जब वे छात्र जीवन में थे तब से मैं उनको जानता हूं इन्होंने मेरा लेक्चर कराया था । ये जहां चुनाव लड़ने जाते हैं माननीया, दरभंगा में, श्री राम सेवक यादव ने हमारी मदद की थी । आज भी हमारे पास 25,000 रु० के चेक की फोटो स्टेट कापी मौजूद है, कानपुर के एक स्कूल को वह 25,000 का चेक दिया जाता है । जब उसके प्रेसीडेन्ट को पता चलता है तो प्रिन्सिपल को कहता है कि अब तुम लालत बाबू के पैसे से इस कालेज को चलाओगे ? फेंक दो । फोटोस्टेट कापी ले लिया और 25,000 रु० का चेक फेंक दिया धन्यवाद के साथ और श्री जगन्नाथ मिश्र जो इस मंत्रिमण्डल में फिर आए हैं उन्होंने उसको रिसीव किया और लिख कर के दे दिया प्रिन्सिपल को कि मैं आपका भेजा हुआ . . . .

श्री कमलनाथ झा (बिहार) : श्रीमान हमारा पाइन्ट आफ आर्डर है । श्री ललित नारायण मिश्र जी के खिलाफ जो चुनाव याचिका दाखिल की गई थी वह चुनाव याचिका आनरेबल सुप्रीम कोर्ट द्वारा रद्द कर दी गई । इसलिए इसके ऊपर कन्ट्री के हाइएस्ट कोर्ट का एक डिसीजन हो चुका है । उस प्रश्न को सदन में उठाना और उनको एक्यूज करना, क्या वह न्यायसंगत है ? इसका प्रोटेक्शन हम चाहते हैं नहीं तो अगर इसी तरह से माननीय सदस्य दूसरे सदस्यों का चरित्र हनन करेंगे तो सदन का चलना असंभव हो जाएगा ।

(Interruption)

श्री राजनारायण : मैं विनती कर रहा हूं कमल नाथ झा . . . .

श्री सीताराम सिंह (बिहार) : कमल नाथ झा उनके संबंधी हैं, इसलिए ऐसा कह रहे हैं ।

श्री राजनारायण : मैं हाथ जोड़ रहा हूं, सुन लीजिए, नहीं तो बिहार की समस्या का समाधान नहीं हो पाएगा । मैं बता देता हूं कि बिहार के हाई कोर्ट ने जब नोटिस जारी किए तो सम्बन्धित मन्त्री महोदय जिनके विरुद्ध याचिका थी । उन्होंने नोटिस लेने से बहुत दिन तक इनकार किया । वे मंत्री थे, वहां रहते थे । फिर हम लोगों ने उसको गजट कराया और गजट के जरिए वहां बुलाया गया । हमारी पिटीशन मेरिट पर खारिज नहीं हुई । उसमें कहा गया कि आखिरी दिन सन्डे था, सन्डे को पिटीशन दाखिल हुई । बिहार हाईकोर्ट में दूसरा रूल है, उसमें इन दि हाई कोर्ट लिखा हुआ था । सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि 45वें दिन सन्डे था उसको सन्डे को ही जमा करना था, मन्डे को जमा करने से नहीं होगा । इस टेक्नीकल ग्राउन्ड पर खारिज हुई । बिहार के हाई कोर्ट ने नहीं किया । जब बिहार की इस स्थिति को वहां के छात्रों ने देखा कि किस तरह, किस ढंग से चुनाव जीते जा रहे हैं, किस ढंग से जनमत की अवहेलना की जा रही है, किस ढंग से जनता की ताकत को दबाया जा रहा है तो धीरे धीरे विस्फोट हो रहा है । वह विस्फोट हुआ । यह हमारे पास पोथी है—

WE ACCUSE

Memo of charges submitted to the President of India on 12th November 1973 against Mr. Lalit Narain Misra, Union Railway Minister and his younger brother, Dr Jagannath Misra Bihar Power & Irrigation Minister.

यह राष्ट्रपति को मैमोरेंडम वहां के तमाम विधायकों ने दस्तखत करके दिया है । सब कितना नीचे गिर गए है । राजनीति में रिश्तेदारी चलेगी, राजनीति में भाई-भतीजावाद चलेगा तो देश बर्बाद होगा, तबाह होगा । राजनीति में जो सत्य है, जनतंत्र में जो सही बात है उनको मान कर बहस होती है । जब सही बात सोचेंगे ही नहीं तो बहस कहां होगी । यह किताब लम्बी है, मैं पढ़ना नहीं चाहता ।

माननीया, आप इस सदन की सम्मानित सदस्या रही हैं । चार साल पहले मैंने इसी सदन में कोसी बांध के सिलसिले में भारत सेवक समाज की पैसे की लूट के संबंध में सवाल उठाया । उस सवाल पर चर्चा भी हुई । बाद में सदन उठ गया । बिहार में जब श्रीबाबू मुख्य मंत्री थे,

[श्री राजनारायण]

कृष्णकान्त डिप्टी शिक्षा मंत्री थे, उन्होंने बाकायदा नाम लिया कि लाखों लाख रुपया श्री ललित नारायण मिश्र और लोटन चौधरी ने निकाला है । उसकी रिपोर्ट हमारे पास विद्यमान है । मैं पूछना चाहता हूं कि दत्ता आयोग एल० एन० मिश्र के खिलाफ बैठा था, उसकी सारी फाइल कहां गई ?

एक माननीय सदस्य : बिहार पर चर्चा है ।

श्री राजनारायण : माननीया, आज बिहार की यह स्थिति है केवल एक परिवार के सत्ता को हमेशा हमेशा अपने हाथ में रखने की लालसा के कारण ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURAM MUKHOPADHYAY) : Please finish.

श्री राजनारायण : माननीया, आप देखिए कितन डिस्टर्बेंस है, एक मिनट दे दीजिए ।

SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY: Your time is up. Not a minute more.

श्री राजनारायण : अच्छा कन्क्ल्यूड कर लेने दीजिए । मैं आपके द्वारा आज कहना चाहता हूं कि हमारे मित्र इस बात को जरा समझ लें कि जब इस तरह से चुनाव में अनियमितताएं होंगी, पैसे के बल पर चुनाव जीता जाएगा, असामाजिक तत्वों के बल पर चुनाव जीता जाएगा तो मैं आज मुबारकबाद देता हूं बिहार के छात्रों को, आज मैं मुबारकबाद देता हूं श्री कर्पूरी ठाकुर को जिनके नेतृत्व में छात्रों ने, जिस तरह से पहले भारत के छात्रों ने 42 में अंग्रेजी साम्राज्यवाद की चूलें डीली की थीं, वैसे ही आज भ्रष्टाचारी शासन के खिलाफ आवाज बुलन्द की है । धन्यवाद के पात्र हैं । वह इस मौजूदा केन्द्र की सरकार और बिहार की सरकार और भ्रष्टाचार, मंहगाई, बेकारी पैदा करने वाली सरकार का नाश करेगी और करके रहेगी । यह ताकत आज छात्रों ने पैदा की है । हम उनके साथ हैं, हम अपनी पूरी कुव्वत, पूरी ताकत, शक्ति देकर छात्रों की और जनता की जो लड़ाई है— यह छात्रों की अपनी लड़ाई नहीं है— छात्र जन संघर्ष लड़ रहे हैं, इसलिए मैं इस सदन के माध्यम से छात्रों को धन्यवाद देना चाहता हूं और छात्रों से अपील करता हूं कि जब तक गफूर मंत्रिमंडल का नाश न हो, विधान सभा भंग न हो, नये चुनाव न कराए जाएं, तब तक छात्र न शान्त हों, न दूसरों को शान्त होने दें ।

मैं चाहता हूं कि हमारे जो घर मंत्री है वह जयप्रकाश जी से सबक लें । जब वह जेल में थे श्रीमती प्रभा देवी उनसे मिलने गईं । जयप्रकाश जी ने नीचे से चिट्ठी दी उसमें हमको कहा कि सत्याग्रह की लड़ाई छोड़ो, हथियारों की लड़ाई करो । वह चिट्ठी पकड़ ली गई । चारों तरफ़ अखबारों में छापा गया । लोग कहने लगे कि मुकदमे में उनको फांसी हो जाएगी । गांधी जी चुप । हम लोग परेशान थे । हम लोगों ने वह चिट्ठी छाप दी । चार दिन तक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी चुप थे । चार दिन बाद गांधी जी बोलते हैं कि मुझे हैरत है कि जो सरकार तलवार के बल पर टिकी है उस सरकार को जयप्रकाश अगर तलवार के बल से हटाना चाहता है तो उसको वह बुरा मानती है । (*Interruption*) गांधी जी ने कहा कि अगर जयप्रकाश यह समझता है कि अहिंसा से अगर मुल्क से अंग्रेजी साम्राज्यवाद को हटाना काफी नहीं है और तलवार के बल पर उसे हटाया जा सकता है तो उसको सरकार को हटाने का पूरा हक है और उसे मेरा आशीर्वाद प्राप्त है । यह गांधी जी का वाक्य है । इस बात को समझ लो । इसलिए मैं कहना चाहता हूं आपके द्वारा सदन को कि बिहार की स्थिति को ठीक से समझें आवेश में मत आओ । सारा प्रशासन ठप्प, शासन ठप्प, जिला प्रशासन ठप्प । इन्हीं शब्दों के साथ मैं समाप्त करता हूं ।

SHRI D. P. SINGH (Bihar) : Madam, Vice-Chairman the manner in which the debate on the Bihar situation has been initiated would immediately give the impression that at least, as far as the initiator is concerned, he is hardly interested in the affairs of Bihar.

SHRI RAJNARA1N : Yes I am.

SHRI D.P. SINGH : And today in this House he wants to discuss various all-India politics, his bickerings for the last twenty or thirty years, his frustrations, his failures and he is trying to settle old scores.

{Interruptions)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Members will please keep quiet.

श्री राजनारायण : इसीलिए आप कांग्रेस में चले गये ।

(Interruptions)

SHRI D. P. SINGH : The honourable Mr. Rajnarain has all the time been trying to criticise the Congress Party, the Congress Government, in the State as well as in the Centre for time anti-democratic postures. But at least this he has tripped up and put his wrong foot in because if the choice before the Government was either to preventively detain him in Bihar or to check the odium of an ugly situation—what he creates here—then certainly it is a democratic posture to allow him to be present here and talk what he likes. It was possible to stifle his voice. He was trying to come and create difficulties in that unfortunate Stale.

Madam, Bihar is in distress today. The situation in Bihar is calamitous. People for years, and particularly in th's year, have been suffering cons'iderably, when there is a scarcity of food and of materials necessary for life; prices have been skyrocketing like everywhere, but-while in other places the people have a caushion and past years' savings to bear this burden, it is our people—unfortunate men—whose suffering has been aggravated this year in this calamitous situation. And we are trying to make every effort to solve th' problem. After all, the problem would not b; solved by inciting innocent students to come forward and by making them victims of bullets. This is what they are trying to do today. At a moment when th;y should have tried to solve th; situation by creating a healthy atmosphere to produce more food, to have a better system of distribution and to alleviate the suffering of the people as far as they can, then come these gentlemen, particularly our great friend. Mr. Rajnarain, with his socialism. I have great respect for Mr. Rajnarain because he was trained under Acharaya N&rendra Deo, the great socialist, whom we respect. But from Acharya Narendra Deo to th? company that he finds himself in today—the company of Mr. Charan Singh—one can very well imagine the erosion that his socialism has undergone.

श्री राजनारायण : सोशलिज्म तो रानी जी की साड़ी में समा गया ।

SHRI D.P.SINGH: Inspiredbythismodern socialism, now he goes a step further. Now he is thinking of—actually, he is the prime-mover, the prime negotiator—bringing about, forging, unity of strange bed-fellows, the most significant of whom is Mr. Balraj Madhok whose championsh'p of capitalism and everyth'ng that he stands for is known to the people at large. In their latest manifesto, everything finds a place except socialism, except what our friend wants to champion today.

About Bihar, we would have appreciated if some constructive suggestions had been made to solve the problem. Madam, you will appreciate that when the movement started on the 18th, it was not the students who came forward but it was the goondaelementsthat predominated the scene, and not content with that, the whole effort had been to bring in these elements to take them into awkward situations, to get these innocent popic killed, to get them suffer and to make political capital out of it.

Now these are the people who are the friends of the students. These are the people who are champions of the cause of the suffering humanity of Bihar. Such is the friendship, such is the credential of the champion of the people of Bihar. We are no apologist for the present state of affairs as to who has brought it in...

श्री राजनारायण : एक मिनट जरा आप सुन लीजिए। क्या आपमें इतनी हिम्मत नहीं है कि बैठ जाएं और सुन लें ।

SHRI D. P SINGH : I will remind of 1967.. (Interruption by Shri Rajnarain) Raise a point of order and I will sit down. Unless you do that I will go on I will remind my friend of 1967 when the S.S.P. was in power when Mr. Karpoori Thakur, whom he has tried to eulogise this moment...

श्री राजनारायण : यह एक सभ्य और संसदीय परम्परा है कि अगर कोई भी प्वाइन्ट पर एक सदस्य खड़ा हो तो दूसरा बैठ जाए । यह जरूरी नहीं कि प्वाइन्ट आफ आर्डर पर बैठे ।

SHRI D. P. SINGH : Will you please answer that ? Mr. Karpoori Thakur resorted to shooting of students. .

श्री राजनारायण : कर्पूरी ठाकुर ने कोई गोली ऐसी नहीं चलाई जिसके बारे में न्यायिक जांच न कराई हो । कर्पूरी ठाकुर ने दत्ता आयोग बैठाया । अगर कमीशन की फाइंडिंग आती तो आज ललित नारायण हटाए जाते, जगन्नाथ मिश्र हटाए जाते और आज यह स्थिति बिहार में नहीं आती ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAV) : Please sit down.

SHRI D. P. SINGH : Today the Government, my party—and I am proud to say about my party—have been responsive to the urges of the people. This party has reacted in a manner in which no party in this country has. We have been able to respond to the call of the people. Mr. Jayaprakash Narayan, for whom we have the highest respect, we have acted on his advice. He wants to economise. We have pruned the Ministry from 46 to 13. What more do you want ?

SHRISHYAMLAL GUPTA (Bihar) : Again you are expanding it.

SHRI D. P. SINGH : Expanding according to the exigencies. We will now take people who will work. Therefore, at a moment of this national crisis we would expect that you rather co-operate, that you should have come forward

[Shri D. P. Singh] with a scheme in which the largest of investment couid have been made in Bihar. I am disappointed. You have not pleaded for the case of Bihar. You have not pleaded even for reform in land, even for consolidation of holdings. You have not pleaded for supply of food, for instance, or for development of industries which are agriculture-oriented so that there could be improvement in a State which is predominently agricultural. We do agree that Bihar calls for colossal investment. Now we have a refinery in Bihar. There are refineries in Assam and in Gujarat. What is an investment of Rs. 500 crores in Bihar compared to much larger investment in other States 1 If more of investment had been made in Bihar, more of employment would have been generated. But, Madam, we are faced with a difficult situation in Bihar. After 25 ye^rs of abolition of the zamindari sytsem we have not been able to get over the feudal mind of the people.

Madam, I sympathise with the sufferings of millions of students who are unemployed today. But will any one of them go and ask them to go to the fields ? Not one of them will do that Please have the courage to go and tell them to go to the fields. 3 P.M.

श्री राजनारायण : माननीया, मैं जाने को तैयार हूं, मुझे भिजवा दीजिए ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY): You have got a free pass. You can go anywhere.

SHRI D.P. SINGH : They would rather like to be clerks than work in the field. It is possible to bring about reform in Bihar. It is possible to provide employment to our young men in agriculture. Unle?s we are able to introduce talent in agriculture and treat agriculture as an industry, this State has no future. This State has a future only when the political parties come and take a healthy interest in it and not take an interest in the suffering of its peoples They are trying to-day to exploit the suffering of Bihar. They are trying to make the best out of a bad bargain. People are dying there and they wish that more people were dead so that they can come and parade more and more and capitalise on the suffering of that State. We take a healthier attitude, a more helpful attitude and so we are fighting the problem on many fronts. We have he problem of unemployment; we have the problem of underinvestment; we have various other problems. They have many States in which they can carry on their struggle. We would request that they may spare Bihar and not give us unsolicited help and unsolicited support so that our people can develop according to their own genius and come to their own fulfilment.

श्री राजनारायण : प्वाइन्ट आफ आर्डर । अगर कोई आदमी अपने भाषण में सौलहों आने असत्य भाषण कर जाए तो उसके लिए क्या हो ?

श्री एन० पी० चौधरी (मध्य प्रदेश) **:** जैसे आपने किया ।

श्री राजनारायण : वे चाहते हैं हम भ्रष्टाचार बढ़ाने में, गरीबी बढ़ाने में, मंहगाई बढ़ाने में कौआपरेट करें ? अगर वे हमारा कौआपरेशन मांगते हैं तो मैं आपके द्वारा कहना चाहता हूं इस गफ्फूर मंत्रिमंडल को आज बर्खास्त करो, विधान सभा को भंग करो ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Mr. Rajnarain, you will not be allowed to speak every time. Please sit down.

श्री राजनारायण : मैं चाहता ही नहीं

SHRI RANBIR SINGH (Haryana) : On a point of order, Madam. My submission is that when he was not called, whatever he has said should not go into the record.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Mr. Mariswamy.

श्री राजनारायण : माननीया, इनसे कहिए कि पगड़ी उतार दें ।

SHRI NIREN GHOSH (West Bengal) >. New things will be manufactured for you.

SHRIS.S. MARISWAMY (Tamil Nadu): Madam, there is a proverb in Tamil that there is no smoke without a fire. It is a fact that something is wrong in the state of affairs in Bihar. Otherwise this sort of violence would not have erupted. It is the duty of the people of Bihar particularly and the people at large in the whole of India to ponder over what the real difficulty is. We had the difficulty in Gujarat and even before it was over, trouble started in Bihar. So, what is wrong really ? In my opinion. Madam, the mistake lies in Delhi. Whenever there is to be an election of the leader, the legislators are expected to meet and elect the leader. This is the system that we have been following right from 1935. Unfortunately we have bid good-bye to that system very recently and now this election is being made in Delhi.

This is the root cause of all the trouble in Gujarat. Elections were conducted; ballot boxes were carried to Delhi and they were opened in Delhi and the results were announced from Delhi. And in six months' time the trouble started there. Before that the same thing was adopted in Andhra Pradesh and Mr. Narasimha Rao had to go into exile. And now we find the poor Mr. Ghafoor has to make repeated sojourns to Delhi every second or third day. This is the state of affairs. This system must go. When legislators are elected, you must give them a free hand. I appeal to the Congress High Command to come back to the old system so that there may not be much trouble. Many people have been speaking about Mr. Jayaprakash Narayan. I am very glad that people like Mr. Krishan Kant came out with a statement collecting about fifty signatures condemning the sections that were maligning Mr. Jayaprakash. We have not forgotten this contribution to our national struggle. We have not forgotten his close association with Panditji and Mahatma Gandhiji. Even now it is in our memory, his exploits during the freedom movement, his escape during the 1942 movement from the Hazaribagh jail, his movement against the Britishers. If his contribution is to be compared with that of anybody, I would compare his contribution with that of Netaji who was noted for his exploits outside India for overthrowing the Britishers. And to see that great patriot, who had not enjoyed even for a day any office of profit, maligned by the new entrants to the Congress is something most pathetic, and I am very glad that the Home Minister, Shri Umashankar Dikshit, came out with a statement in the Lok Sabha praising the past services of Shri Jayaprakash. Now what is the position ? There is corruption. There is no doubt about it. How dees it arise ? I am glad that the Congress High Command has taken a very serious view of the matter and they have summoned the Ministers to come to Delhi to discuss the matter. The largest Cabinet in the whole of India was in Bihar, about 46 members. I do not know the total strength of the Assembly. I am reminded of what Panditji said once looking at the size of the Cabinet of Shri Pratap Sing Kairon in Punjab. He said, "I might as well address a public meeting amongst the Cabinet members here." And most probably the leaders of Bihar wanted to have a big gathering in the Cabinet so that they can speak to them if they cannot get people to speak to outside. Whatever it might have been, now this number of 46 has been reduced to 14, I believe, and I do not know how many they are going to include. I am quite sure the number might come up to 30. Tha is the rumour in the Central Hall, whether it is 30 or it is 40, it is immaterial. But I would appeal to the Congress High Command to take good people, to take people who command the respect and confidence of the general public.

So far as violence is concerned, I am second to none in condemning viobence, whether it is indulged in by the RSS or the Ananda Marg or the Socialist Party or the Congress Party or, for that matter, any party; even if my own party indulges in it, I would condemn it. If at all a Government is constituted, it must serve its full term. And when the party loses its majority in the House, it should quit the office. So long as it does not lose its majority, it has every right to continue in office. And to uproot it by inciting students or by creating violence in the country is not a right step and should not be encouraged at all. And to use students in the process is a very dangerous method. Today it may serve our purpose, but tomorrow it may go against us. Therefore, I would appeal Jo the responsible party to see that as far as possible they do not allow students to take to violent activities.

Then, what were the conditions prevailing just before the dismissal of this Ministry in Bihar? We read in the newspapers when the Assembly was going on, the Assembly Secretary's house was set on fire; then the Secretariat staff went to the police and requested them to intervene and called the fire fighting service. The fire fighting service, I understand, had said that they could not reach the spot because they were afraid that they would be beaten on the way.

So they wanted Police to accompany them. When the staff approached the Police, they said : "We cannot go unarmed. We want Armed Police to accompany us". When the staff approached the Armed Police people, they said : "We cannot act unless we are asked to do so by the Magistrates". When the Magistrates were approached, they said : "We cannot interfere because some higher-ups are involved". This clearly indicated that in the Congress Party itself there were small sections or dissident sections—you may call them by whatever name—who were actively supporting these activities. So the trouble started. It has now subsided and I hope the peace that we have now in Bihar will last long. If this peace is to last long the Congress High Command here should open their eyes and see that initiative must be given to the local leaders. Delhi is already burdened with

[Sliri S.S. Moriswamy] responsibilities. They have already lot of power which they cannot bear. Why should they take up Bihar, Orissa and other States over and above what they already have ? I would rather say that they should give autonomy to the State leadership so far as selection of Ministers is concerned.

श्री इन्द्रदीप सिंह (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं अपने मित्र राजनारायण जी के भाषण को बहुत ध्यान से सुन रहा था और सोच रहा था कि वह सचमुच में बिहार के बारे में कुछ कहेंगे, लेकिन मुझे तो बड़ी निराशा हुई । आखिर में उन्होंने सिर्फ यही कहा कि वह गफूर सरकार को उखाड़, फेकेंगे, विधान सभा को भंग करा देंगे और नया चुनाव करायेंगे । इस के अलावा कोई बात उन्होंने बिहार की आज की परिस्थिति के बारे में नहीं कही । इस से मैं स्वयं, और मैं समझता हूं कि यह पूरा सदन, एक ही निष्कर्ष पर पहुंचेगा कि राजनारायण जी के पास वहां की सरकार को तोड़ो, वहां की विधान सभा को भंग करो, इस के इलावा न कोई और उद्देश्य है और न और कोई कार्यक्रम है ।

श्री राजनारायण • जब तक यह भ्रष्ट सरकार जाएगी नहीं तब तक भ्रष्टाचार बंद कैसे होगा

श्री इन्द्रदीप सिंह : मैं आप से बात नहीं कर रहा हूं । मैं, अध्यक्ष महोदया, आप का ध्यान उन तथ्यों की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं जिन तथ्यों ने इस तथाकथित आंदोलन को जन्म दिया । यह निर्विवाद है कि सारे देश में जीवनोपयोग वस्तुओं के दाम जितने बढ़े है हमारे बिहार में उस से कहीं ज्यादा बढ़े हैं । चावल पौने 3 से 3 रुपये किलो और कुछ दिनों तक गेंहू भी इसी रेट पर मिलता रहा, अभी वह दो सवा दो रुपये किलो मिलता है । कोयला जो बिहार में पैदा होता है और दो सौ मिल की दूरी से दो रुपये मन के हिसाब से आता है, वह पटना में 9 और 10 रुपये मन मिलता है । वहां की सरकार मुनाफाखोर है, जो काले-चोर हैं उन के खिलाफ़ कोई भी कार्यवाही करने से कतई इन्कार करती रही है ।

इस परिस्थिति के खिलाफ बिहार की जनता में व्यापक असंतोष है, यह बात सही है, और इस असंतोष को संगठित आंदोलन का रूप देने के लिए बिहार के मजदूरों ने, वहां के कर्मचारियों ने, वहां के शिक्षकों ने पेशकदमी की और 21 जनवरी को लगभग दो सौ ट्रेड यूनियनों और सेवा संगठनों के आवाहन पर बिहार में बंद मनाया गया और ऐसा बंद मनाया गया जैसा कि पहले कभी नहीं मनाया गया था । लेकिन यह चीज, बिहार की जनता का यह आंदोलन मजदूरों द्वारा, शिक्षकों द्वारा, कर्मचारियों द्वारा, वामपक्षी द्वारा, कम्युनिस्टों द्वारा संचालित किया जाये, यह बात दक्षिण पंथियों को पसंद नहीं थी और इस लिए उन्होंने तुरन्त कदम उठाया, एक साजिश की और विद्यार्थियों के एक गिरोह को इकट्ठा किया और उन का एक कंवेंशन बुलाया । अध्यक्ष महोदया, यह कंवेंशन 16, 17 फरवरी को पटने में हुआ । सभी विचारों के स्टूडेंट इस में मौजूद थे । वहां पर प्रस्ताव लाया गया कि सोवियत संघ के साथ भारत की मैत्री तोड़ देनी चाहिए, यह देश के हित के खिलाफ है, और राष्ट्रीयकरण का अंत कर देना चाहिए और गल्ले का थोक व्यापार सरकार को नहीं, सेठों को करना चाहिए और विद्यार्थियों का आंदोलन जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चलना चाहिए ।

इस पर विद्यार्थियों में झगड़ा हो गया, स्पिलिट हो गया और दो समितियां बन गई । एक छात्र संघर्ष समिति, जिसके नेता हैं विद्यार्थी परिषद के लोग, राजनारायण जी के समाजवादी युवजन सभा के लोग, संगठन कांग्रेस के युवा संघ के लोग और भारतीय क्रांतिकारी युवा संघ के लोग । इस संघर्ष समिति ने 18 मार्च को विधान मंडल के घेराव का आवाहन किया । उद्देश्य क्या था ? उद्देश्य था गवर्नर को असेम्बली में नहीं पहुंचने देंगे, विधायकों को, मंत्रियों को नहीं पहुंचने देंगे और जो संविधान में आवश्यक है कि दोनों सदनों का संयुक्त अधिवेशन हो, वह नहीं होने देंगे । इसके लिए उन्होंने जो पर्चा निकाला उसमें लिखा था : "बन्धुओं संघर्ष का बिगुल बज उठा है । होली के बाद बिहार के लड़ाकू छात्र युवा वर्ग का अब सत्ता से परिवर्तन की होली खेलने का संघर्ष छिड़ चुका है "।

ये लोग अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन करने नहीं आए थे वे तो सत्ता से परिवर्तन की होली खेलने आए थे । To bring about a revolution through forced and violence. That was their objective is not winning of demands but organising a counter revolutions. यह उनके पर्चों में लिखा है । आखिर में उस पर्चे में था "अतः आप परिवर्तन के सैनिक बनकर 18 मार्च, 1974 को विधान सभा पर अभूतपूर्व प्रदर्शन करके उसका घेराव करने अवश्य आएं They called upon the students to go in for a change—a change for the subversion of democracy ये लोग चेंज चाहते हैं । राजनारायण जी इस प्रकार का चेंज विद्यार्थियों को साथ लेकर न लाएं ।

श्री राजनारायण : 41 में भी, 42 में महात्मा गांधी जी भी विद्यार्थियों को साथ लेकर चेंज लाए ।

श्री इन्द्रदीप सिंह : 18 तारीख को ये लोग विधान सभा में आग लगाने आए थे . . .

श्री राजनारायण : झूठ है ।

श्री इन्द्रदीप सिंह : विधानसभा के सचिव का घर जला दिया । उनके बीवी-बच्चे तमाम घर में थे, आग लगाकर उसको फूंक दिया । अनेक सरकारी भवनों को फूंक दिया 'सर्चलाइट' 'इंडीयन नेशन' अखबार को फूंक दिया ।

(Interruption)

श्री राजनारायण : माननीया, मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है । माननीया आप जानती हैं कि 'सर्चलाइट' का दफ्तर जो फूंका गया है वह कम्युनिस्ट पार्टी के एक विधायक ने फूंका है। वह विधायक पकड़ा भी गया था ।*(Interruption)* आज यह झूठ बोल रहे हैं ।

SHRI BHUPESH GUPTA : Madam Vice-Chairman, it is well known who set the office of the "Searchlight" on fire.

SHRI RAJNARA1N : It is the Communist Party of India ...

(Interruptions)

SHRI BHUPESH GUPTA : Nonsense. It is nonsense.

SHRI RAJ NARAIN : What nonsense ?

SHRI BHUPESH GUPTA : It is nonsense. You are talking nonsense.

SHRI RAJNARAIN : You are talking nonsense. You are talking rubbish... (Interuptions)

SHRI BHUPESH GUPTA : You are the agent provocateur.

SHRI RAJNARAIN : You are talking rubbish. You are the agent provocateur.

SHRI BHUPESH GUPTA : We ourselves do not believe in these things. If we wanted to do it, we would have done it openly.

SHRI RAJNARAIN : You might have ' done anything openly. But you are doing every thing secretly today.

SHRI BHUPESH GUPTA : Madam, it is aot a very surprising thing…

SHRI RAJNARAIN : Yes, it is not surprising.

SHRI BHUPESH GUPTA : Are you the Government '?

SHRI RAJNARAIN : Yes, I want to form a Government. I want to form a people's government and I want to

श्री इन्द्रदीप सिंह : उपसभाध्यक्ष महोदया, समय मेरा है ...

श्री राजनारायण : माननीया, मैं अंग्रेजी में बोल पड़ा इसका मुझे दुख है । मैं चाहता नहीं था ।

श्री इन्द्रदीप सिंह : पटना से 18 मार्च को वाई 'यू० एन० आई०' एक समाचार में पेट्रियट में जो छपा है वह मैं आपको पढ़कर सुनाना चाहता हूं ।

"PATNA, March, 18 (UNI) : The frenzied mob which let loose a reign of terror and anarchy throughout the State capita] here overthrow this wretched government. today completely gutted the Bihar Journals Ltd., the publishers of the "Search Light" and the "Pradeep"..."

"According to newspaper sources, the mob, reteating from the State Legislature: first brickbatted the office and after terrifying the employees stormed into it and set it ablaze. The office of the Hindustan Times is located in the same building."

उपसभाध्यक्ष महोदया, मुझे समय की कमी पड़ जाएगी नहीं तो मैं हिन्दुस्तान टाइम्स के कौरेस्पांडेन्ट की रिपोर्ट आप को पढ़ कर सुना देता । वह कारेस्पांडेन्ट उसी दफ्तर में था और उसने लिखा कि विधान सभा से लौटती हुई। भीड़ ने सर्चलाइट को जला दिया । तो इसलिए यह बिलकुल झूठा प्रचार है ।

श्री राजनारायण : उसमें एक कम्युनिस्ट विधायक रहा ।

श्री इन्द्रदीप सिंह : वह इसका इल्जाम कम्युनिस्ट पार्टी पर लगाना चाहते हैं ।

श्री राजनारायण : इसीलिए वह सारा नहीं पढ़ रहे हैं ।

SHRI NIREN GHOSH : I want to seek one clarification...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Why did you get up, Mr. Niren Ghosh ? Please look on this side; do not look on that side.. .

SHRI NIREN GHOSH : I want to seek one clarification. Madam, this is my parliamentary right...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : You did not ask for permission. It is also not parliamentary practice to get up...

SHRI NIREN GHOSH: The hon. Member is yielding to me. This is my parliamentary practice. You need not interfere. The 'Searchlight' and 'Pradeep' were the Press organs and were critical of the Congress Government. The point arises, how is it that this very critical press was burnt ? That is a mystery, because...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : There is no 'because' in it, Mr. Ghosh...

(Interruptions).

श्री इन्द्रदीप सिंह : महोदया, पटना से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी में इस दूसरे अखबार "इंडियन नेशन" के सम्पादकीय का 20 मार्च का एक अंश मैं पढ़ देना चाहता हूं ।

श्री राजनायायण : छोड़ दीजिए ।

श्री इन्द्रदीप सिंह : क्यों छोड़ दूं । वह इस प्रकार है

"So far as the students are concerned they have iost the sympathy and support of all sensible people. Now they are coming out with the excuse or explanation that it is not they but the anti-social elements who indulged in arson and loot. But is the general public blind not to see as to who have indulged in all these crimes ? It is the bus.hijacked by the students that broke the gate of the Indain Nation It is again they who brought petrol on hijacked bus to burn this institution. And all this when this paper been fair to them by publicising all their activities. What harm had we done to them to get this reward ? What harm had The Searchlight and Pradeep done to be reduced to ashes ?

यह "इंडियन नेशन" का संपादकीय है, किसी कम्युनिस्ट अखबार का नहीं है । यह राजनारायण जी का समर्थक है ।

श्री राजनारायण : यह ललितनारायण मिश्र का समर्थक है । महाराजा दरभंगा का है । ललित नारायण के गुण्डों ने जाकर सर्चलाइट को लुटवा और जलवा दिया ।

श्री इन्द्रदीप सिंह : उपसभाध्यक्ष महोदया, अंत में मैं एक पैराग्राफ श्री जयप्रकाश नारायण के वक्तव्य से पढ़ देता हूं, जो उन्होंने 20 मार्च को जारी किया :

"A final word about what happened on Monday in Patna. (I have no personal information about the rest of the State). Everyone talks vaguely of hooligans and goondas. Hooligans, of course, were abroad in large numbers. It also seems reasonably sure that those responsible for the major incidents of arson were outsiders, probably hailing from Bhagalpur and had a certain amount of expertise. For one, some of the drivers of the hijacked buses seemed to be well-trained; for another, the incendiary used appeared to be more powerful than ordinary fire and spread very quickly. I understand the Government is enquiring into the matter. But there were also some of the violent revolutionaries, their followers among the students and students who were attracted by the action or the loot, or who had simply felt provoked. Perhaps these people thought that they were re-enacting 1942. But arson and loot do not make a revolution.

जयप्रकाश जी ने इसी वक्तव्य में कहा है कि छात्र संघर्ष समिति के नेताओं ने उनसे कहा है कि वह लाठी खाकर आये थे । उन्होंने बतला दिया है कि—

•'..I should add that among the student... leaders who saw me were several members of I the S.S.P., Youth Congreess (O) and the Vidyarthi Parishad ..... (Interruptions).

श्री राजनारायण : हमारे लोगों ने डंडे खाये । जयप्रकाश जी ने सही कहा है कि वह लाठी खाकर आये, उनको कम्युनिस्टों ने पीटा, ललित नारायण मिश्र के गुण्डों ने पीटा था ।

श्री इन्द्रदीप सिंह : महोदया, इसके बाद मैं आपके सामने एक फोटोस्टेट प्रति रखना चाहता हूं जोकि एक जनसंघी नेता ने अपने दोस्त को लिखा । इसमें कहा गया है 'बिहार सरकार का सम्बन्ध दो पार्टियों से है, सत्तारूढ़ कांग्रेस और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी । अतः इन दोनों दलों के दो दो, चार चार व्यक्तियों को चुनकर उनका घेराव हो, उन पर पथराव हो और उन के घरों को जलाने और उनके दल के कार्यालयों को जलाने का कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए ।'

SHRI BHUPESH GUPTA : This is a very important document. This is the photostate copy of a circular letter written by some Jana Sangh people.

(Interruptions)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURAM MUKHOPADHYAY) : Shri Inder Deep Singh in the course of his speech, has referred to a photostat copy. He can hand it over to the Table if he likes, but there should be no debate on it. It is not to be laid on the Table of the House.

SHRI BHUPESH GUPTA : First of all, I would like to know which rule of the House prevents a document which a Member of the House claims to be a photostat copy of an originl lettei to be laid on the Table when it bears on the subject and relates to the crux of the matter. Why should we, on this side of the House, not be allowed to lay it on the Table of the House ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Mr. Bhupesh Gupta, you please refer to the rule under which you have a right to lay a photostat copy which is not attested. What I have requested him is to hand it over to the Home Minister so that he can take appropriate steps...

SHRI BHUPESH GUPTA : You are not seeing the obvious. If I had a fundamental right, I am sure I am not such a fool that would insist on laying it on the Table. I would have just laid it on the Table of the House. I do not claim a fundamental right, but I have a fundamental....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : You chal-

lenged me and asked me the rule under which I could object. I asked you to quote the rule SHRI BHUPESH GUPTA : Madam Vice-Chairman, you may have been challenged in other quarters in your life. But I have no challenged you here. I accept your authority and having accepted it, I say that a good lady that you are, kindly exercise what you have, namely, the discretion, in public interest. When such a document has been made available to Parliament and through Parliament to the nation, it should be allowed to be laid on the Table of the House.

श्री राजनारायण : मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है । मैं यहां पर अपने मित्र भूपेश गुप्त के साथ हूं । जब एक लिखित फोटोस्टेट कापी इस सदन में आई है और वह काफी रोशनी दे सकती है आगे के लिए तो मैं जरूर चाहूंगा कि भूपेश गुप्त की बात को माना जाए। अगर वह गलत होगा तो प्रिविलेज कमेटी के पास भेज दीजिएगा । भूपेश गुप्त के आदमी इसकी खोज करके लाये हैं ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : You have finished your point of order.

श्री राजनारायण : इसको भूपेश गुप्त पेश करेंगे । इसकी सही जानकारी रख रहे हैं ।

श्री भैरो सिंह शेखावत : महोदया, मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है । इस फोटोस्टेट कापी को सदन की मेज पर रखने का प्रश्न खड़ा हुआ है । उस सम्बन्ध में मैं निवेदन करना चाहूंगा कि फोटो स्टेट कापी का ओरिजनल लेटर माननीय सदस्य बतायें । इनके पास ओरिजनल कापी नहीं है । अब तक की जितनी भी व्यवस्थायें हैं, इस सदन की और लोकसभा की जो व्यवस्थायें मैंने पढ़ी हैं, उस आधार पर मैं कहना चाहूंगा कि कोई भी फोटोस्टेट कापी सदन की मेज पर रखी नहीं जा सकती जब तक उसकी आथैंटिकेशन के बारे में पूरी तरह से प्रमाण नहीं हों । सवाल यह है कि इनके पास ओरिजनल कापी है या नहीं ।

दूसरा प्रश्न मेरा यह है कि इसमें कहीं जनसंघ का उल्लेख नहीं है या वह जनसंघ का नेता हो, या सदस्य हो इसमें कोई उल्लेख नहीं है । मैं स्पष्ट रूप से कहता हूं कि यह व्यक्ति जिसका नाम लिया जा रहा है वह जनसंघ का पदाधिकारी किसी भी स्थिति में नहीं है । इसलिए पार्टी के नाम पर जो बात कही गई है यह गलत है, इसको प्रोसीडिंग्ज से ऐक्सपंज किया जाना चाहिए ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Since the hon. Member has referred to a photostat copy and since it ircites violence, I would request the hon. Member to hand it over to the hon. Home Minister. I will not allow it to be placed on the Table of the House.

श्री इन्द्रदीप सिंह : महोदया, मैं दूसरा पोस्टकार्ड भी आपके सामने पेश करता हूं । यह आनन्द मार्ग का है । इसमें जो सबसे गम्भीर बात है वह यह है कि बिहार सरकार के एक आफिसर के पास यह भेजा गया है । आफिसर का नाम है ए० आर० सारंगी, अंडर सेक्रेट्री, रिवर वैली प्रोजेक्ट्स डिपार्टमेंट, न्यू सेक्रेटेरियेट, पटना । इस पोस्ट-कार्ड में हिंसा की बात नहीं है, लेकिन आन्दोलन की बात है । लेकिन सरकार के अफसर के पास खुले आम आनंद मार्ग का सर्कुलर भेजा जाए यह गम्भीर बात है । वह अफसर है उस डिपार्टमेंट में जिसका टेक्निकल आफिस जला दिया गया । दो करोड़ के सरकार के औजार और दसियों साल के फ्यूचर प्लान सब जलकर खाक हो गये ।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही (उत्तर प्रदेश) **:** सरकारी अफसर की चिट्ठी आपको कैसे मिल गई ?

श्री राजनारायण : यह तो हो सकता है कि वह सरकारी अफसर भी कम्युनिस्ट पार्टी का हो ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURAM MUKHOPADHYAY) : Please sit down.

श्री राजनारायण : मैंने 5 तारीख को इसकी जांच की । मैंने गफूर से बात की । यह नारा गफूर की तरफ से लगवाया गया था ।

श्री इन्द्रदीप सिंह : महोदया, श्री जयप्रकाश नारायण ने स्वयं इन नारों की निन्दा की है और राजनारायण जी कम से कम जयप्रकाश नारायण सच बोलते हैं, यह तो आपको मानना चाहिए ।

श्री राजनारायण : मैं भी उसकी निन्दा करता हूं ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Mr. Raj Narain, nobody wanted your opinion on this, please sit down.

श्री इन्द्रदीप सिंह : हमको कंक्लूड करने दीजिए । हमारा समय राजनारायण जी ने ले लिया ।

महोदया, यह जो परिस्थिति है, यह जो आन्दोलन चल रहा है नाम के लिए कहा जाता है कि वह आन्दोलन मंहगाई, भ्रष्टाचार के खिलाफ है । लेकिन आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि संघर्ष समिति के नेताओं ने खुलेआम ऐलान कर दिया है कि हम अपनी मांगों के बारे में गफूर सरकार से कोई बात करना नहीं चाहते हैं । कहते हैं कि हमारी एक मांग है और वह है विधानसभा को भंग करो । और नारा क्या लगाया, पटना सिटी में जुलूस निकला जिसमें नारा लगाया गया---गाय हमारी माता है, गफूर गाय को खाता है, इसलिए गफूर हत्यारा है । यह किस का नारा है ?

श्री राजनारायण : माननीया यह बात गलत है । मैंने इसकी जांच की है, 5 तारीख की रात में । मुझे बताया गया है कि गफूर के गुण्डों द्वारा लगवाया गया ।

[श्री राजनारायण]

गफूर के गुंडों ने यह नारा लगवाया । हमने गफूर को 12 बजे रात में...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY): Mr. Rajnarain I want to know from you if you will allow the House to proceed with its business.

SHRI RAJNARAIN : Yes, yes, I will do that.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : All right. Please sit down.

श्री इन्द्रदीप सिंह : उपसभाध्यक्ष महोदया, अंत में मैं कुछ शब्द वहां की सरकार के बारे में कहना चाहता हूं । अभी जो वहां पर सरकार है गफूर साहब के मुख्य मंत्रित्व में, उस से वहां कोई खुश नहीं है । हमारी पार्टी ने 17 मार्च को ही प्रस्ताव कर के मांग की थी कि उस का पुनर्गठन होना चाहिए । बदकिस्मती से आज तक सरकार का पुनर्गठन नहीं हुआ ।

हमें तो बहुत ही अफसोस होता है कि दक्षिण पंथी प्रतिक्रियावादी बिहार शक्तियां में विधान सभा तोड़ने पर लगी हुई हैं, तुली हुई हैं और बिहार के बाद उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की विधान सभाओं को भंग करने का उन का प्रोग्राम है ताकि राष्ट्रपति के चुनाव को या तो वे होने ही न दें या उस पद पर कब्जा कर लें । यही उन का मंसूबा है ।

जब ऐसा खतरा है उस समय वहां की सरकार पैरेलाइज्ड है और बदकिस्मती से कांग्रेस दल भी पैरेलाइज्ड है । कम्युनिस्ट पार्टी अकेले लड़ रही है, लेकिन मैं समझता हूं कि हमारी अकेले की ताकत इस प्रतिक्रियावाद का मुकाबला करने के लिए काफी नहीं न इस लिए मैं आप के माध्यम से सरकार से और कांग्रेस दल के, उस के नेताओं से अपील करना चाहता हूं कि इस संकट की घड़ी में अंदरूनी झगड़ों को थोड़े दिन के लिए छोड़ दिया जाये और एक हो कर इस संकट का मुकाबला किया जाये और इस के लिए मैं सात सुझाव आप के सामने रखना चाहता हूं ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY): You have already taken 30 minutes.

श्री इन्द्रदीप सिंह : मेरा सुझाव यह है कि एकनावद्ध मंत्रिमंडल बनाया जाये, असेम्बली की बैठक शीघ्रातिशीघ्र बुलाई जाये, बिहार को मिलने वाली केन्द्र से अनाज की आपूर्ति में बढ़ोत्तरी की जाये, गल्ला चोरों, नफाखोरों के खिलाफ कार्यवाही की जाय और ऐंटी होडिंग ड्राइव किया जाये, भ्रष्टाचारी मंत्रियों और अफसरों के खिलाफ कार्यवाही की जाये, विद्यार्थियों की मांगों से दिलचस्पी रखने वाले जितने भी छात्र संगठन हैं उन के साथ सरकार समझौता वार्ता चलाये और उन के सवाल को हल करे और जो शिक्षकों की मांगे हैं उनको भी सरकार समझोते के जरिये हल करे और स्कूल और कालेज शीघ्रातिशीघ्र खोले जायें । यही बिहार की स्थिति को सुधारने का रास्ता फौरी है ।

SHRI NIREN GHOSH : No Congress Government has ever stood by the people or will ever stand by the people.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Mr. Niren Ghosh you did not take the permission of the Chair to speak Shri Gunanand Thakur.

श्री गुणानन्द ठाकुर : उपसभाध्यक्ष महोदया मैं तो व्यक्तिगत रूप से बहुत दुखी हूं कि लिच्छिवियों का बिहार, महावीर का, बिहार, गौतम बुद्ध का बिहार, राजेन्द्र बाबू का बिहार, जयप्रकाश नारायण का बिहार, अशोक का बिहार आज संपूर्ण देश में चर्चा का विषय बना हुआ है । उस बिहार में आज तमाम राजनीतिक पार्टियां जनतंत्र के साथ मखौल उड़ा रही हैं । सभी वहां जा कर एक तमाशा खड़ा कर प्रजातंत्र की नींव को तोड़ने की कोशिश में लगे हुए हैं और इस से हम बहुत चिंतित हैं और मैं समझता हूं कि पूरा सदन चिंतित होगा । मैं कहना चाहता हूं कि आज बिहार में जो परिस्थिति हुई है उस परिस्थित के पीछे बहुत से कारण है और उन कारणों में, अंदरूनी कारण में तो मैं जाना नहीं चाहता, लेकिन इतना तो मैं जरूर कहना चाहता हूं कि आज बिहार को जिस अनुपात से धन मिलना चाहिए था, जिस अनुपात से उस की उन्नति होनी चाहिए थी उस अनुपात से वह नहीं हो सकी । बिहार बहुत से मामलों में बहुत पिछड़ रहा है । मैं एक उदाहरण देना चाहता हूं आज जनसंख्या के हिसाब से जब कि भारतवर्ष में जनसंख्या 183 पर-स्क्वायर किलोमीटर है वहां वह बिहार में 324 है । साक्षरता के हिसाब से भारतवर्ष में वह 29.34 है तो बिहार में 19.94 है, जब कि वह केरल में 60.42 है, जब कि वह चंडीगढ़ में 61.51 परसेंट है और दिल्ली में वह 56.61 परसेंट है ।

इसी तरह से अग्रिकलचर के मामले में मैं कहना चाहता हूं कि बिहार में 1961 में 22 परसेन्ट अग्रिकलचर लेबर था तो आज 1974 में 38 परसेन्ट अग्रिकलचर लेबर है ।

इसी तरह से मैं कहना चाहता हूं एजुकेशन के मामले में भी बिहार बहुत पिछड़ा रहा है । लेकिन वह प्रश्न आज नहीं है । ये विरोधी दल के लोग जो दरअसल आज जनतंत्र पर हमला करने की कोशिश कर रहे है कि विधान सभा को भंग करो, सरकार को भंग करो, और फिर उसमें एक नयी दिशा दो—यह मांग करना शुरू कर दो कि लोक सभा को भंग कर दो । इस समय मैं विरोधी दल के नेताओं से, खास कर के राजनारायण जी से पूछना चाहता हूं : हर दल की सरकार बनी है और जनता ने देखा लिया है संविद की सरकार को । दूसरी सरकारों को भी देखा है, लेकिन छः महीने से अधिक कोई टिक नहीं सकी । कौन आमूल परिवर्तन करने वाले हैं, यहां की जनता ने देख लिया है । श्री कर्पूरी ठाकुर को भी देखा है, श्री बिन्देश्वरी प्रसाद मण्डल को भी देखा है, श्री हरिहर सिंह को भी देखा हैं, उसी तरह से जन संघ के

लोगों को भी देखा है, शोषित दल के लोगों को भी देखा है । मैं कहना चाहता हूं, जो बिहार में यह स्थिति पैदा करने वाले हैं, आज जब देश संकट की घड़ी से गुजर रहा है, प्रधान मंत्री ने, राष्ट्र की नेता श्रीमती गांधी ने स्पष्ट कहा था लोक सभा में बहुत दिल खोल कर कहा था—कि उन्हें आज इस प्रश्न पर सोचना चाहिए कि उनका तर्जे अमल क्या हो ? देश की नेता और देश की प्रधान मंत्री ने दिल खोलकर सदन के सामने और देशके सामने इस बात को रखा कि विरोधी दल के लोगों को देश के साथ और प्रजातंत्र के साथ सौदा नहीं करना चाहिए । प्रधान मंत्री ने कहा :—

"Our party is a party that has brougt democracy to India, that has laid solid foundation to democracy and pledged to keep democracy and to deepen its roots in our country. But democracy is not a licence to abuse, to make false allegation .....or to denigrate its achievements."

मैं पूछना चाहता हूं आज राजनारायण जी संसोपा से गए बी० के० डी० में हो गये, मौजूदा प्रोग्रामों से तो शायद उनको कोई आस्था नहीं है, मान लीजिए, वहां आज विधान सभा भंग कर दी जाए तो उसका क्या अंजाम होगा ? और अगर यह परम्परा चली तो सोच लीजिए कि इस देश के प्रजातंत्र का क्या होने वाला है । आज यह एक बुनियादी प्रश्न है, जो देश को और सदन को गंभीरता से विचार करना चाहिए ।

दूसरी ओर उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं आग्रह करूंगा कि जब भी प्रधान मंत्री को एक बार भी जनता से कांफिडेंस ले लेने की जरूरत पड़ी है वे हिचकी नहीं । देश में आज भी दो-तीन बातों को लेकर बड़ी क्राइसिस है । लोग बड़ी चर्चा करते हैं करप्शन की । जब करप्ट लोगों को निकाला जाता है तो विरोधी दल के लोगों उनको हीरो बना कर घुमाते हैं । इसका क्या इलाज होगा । किसी पार्टी ने हिम्मत की—जो आज कलिंग एयरवेज की बात चल रही है आज उनको हीरो बनाकर घुमाया जा रहा है । गुजरात में जब करप्शन के सवाल पर हंगामा हुआ, देश की प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने हिम्मत के साथ मुख्य मंत्री को सस्पेण्ड किया, दल से निकाला । अब विरोधी दलों के पास कोई चारा नहीं रहा तब उनका काम कैसे चले यह प्रश्न उनके सामने है । छाती पर हाथ रख कर सोचिए, जब भ्रष्टाचार की बात करते हैं या मंहगाई की बात करते हैं या बेकारी की बात करते हैं, जो विद्यार्थी अंगरेजी हुकूमत को पलट सकता था, जो विद्यार्थी दूसरी हुकूमतों को पलट सकता है, जिस विद्यार्थी को आप हमारे खिलाफ भड़काते हैं, वह विद्यार्थी आपको भी एक मिनट बैठने भी नहीं देगा—इस बात को जान लीजिए । आज जरूरत इस बात की थी और उपसभाध्यक्ष महोदया, आपके माध्यम से मैं इस सदन में कहूंगा कि आज शिक्षा के संबंध में बुनियादी तौर पर सोचा जाए । आखिर आज क्या बात हो गई है ? आज से 5 साल पहले भी हम लोग छात्र आंदोलन के प्रोडक्ट थे । आज से 5 साल पहले किसी मेडिकल कालेज, किसी इन्जीनियरिंग कालज में, किसी नेता की हस्ती नहीं थी हड़ताल करा दे ।

लेकिन आज वहां भी यह चर्चा उठ जाती है । क्यों ? छात्रों को लगता है कि उनका भविष्य अन्धकारमय है ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : जब आप जैसे नेता दल बदलने लगे ।

श्री गुणानन्द ठाकुर : आप कुछ करने वाले नहीं है । मैं कहता हूं, माथुर साहब, देश के तमाम अर्थशास्त्रियों को बैठना चाहिए, बुद्धिजीवियों को बैठना चाहिए क्योंकि देश आज क्राइसिस से गुजर रहा है ।

बंगला देश का सवाल उठा । प्रधान मंत्री चुप थीं, परन्तु सभी पार्टियां चिल्ला रहीं थीं फौज भेजी जाए । उन्होंने फौज भेजी बंगला देश आजाद हुआ, लेकिन आपके अटल बिहारी वाजपेयी पटना गए बिहारी मुसलमानों को बचाने के लिए । उस समय आप क्या कर रहे थे ? इस्लामिया हाल में सम्मेलन हुआ था । तमाम पार्टियों के लोगों के साथ अटल बिहारी वाजपेयी पहुंचे थे बिहारी मुसलमानों की हिफाजत के लिए और यह बात कहते थे कि इन्दिरा गांधी ने बंगला देश में मुसलमानों को कत्ल किया अतः इन्हें वोट मत दो ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : बिल्कुल गलत ।

श्री राजनारायण: आप बिल्कुल गलत बोल रहे हैं ।

श्री गुणानन्द ठाकुर : आज मंहगाई का प्रश्न लीजिए । मैं मानता हूं और प्रधान मंत्री ने ईमानदारी से कबूल किया है कि मंहगाई है । कौन कहता है कि मंहगाई नहीं है ? मैं पूछना चाहता हूं कि क्या मंहगाई रेल जलाने से दूर होगी ? क्या मंहगाई हड़ताल कराने से दूर होगी । इस सवाल पर आज बैठने की जरूरत है, इस सवाल पर तमाम विरोधी दलों को बैठकर सोचने की जरूरत है और उस पर विचार करके कुछ रास्ता निकालने की जरूरत है । मैं अपने नेता से प्रार्थना करूंगा कि फिर समय आया है, जैसे बंगला देश के समय में उन्होंने हिम्मत से काम लिया था और संकट में तमाम दुनिया को नेतृत्व दिया था, देश को नेतृत्व दिया था । आज प्रजातंत्र संकट में फंसता जा रहा है । आज जरूरत इस बात की है कि इस मंहगाई, भ्रष्टाचार और बेकारी के सवाल पर विरोधी नेताओं को बैठाएं और उनसे रचनात्मक सुझाव मांगे और एक रास्ता ढूंढने का प्रयास करें ।

DR. RAMKRIPAL SINHA (Bihar) : She is the mother of *mahangavi*.

श्री गुणानन्द ठाकुर : यदि प्रजातंत्र नहीं रहा तो कोई नहीं रहेगा । जाके पैर न फटी बिवाई वो क्या जाने पीर

[श्री गुणानन्द ठाकुर]

पराई । जो आजादी की लड़ाई में नहीं थे वे डेमोक्रेसी को क्या समझेंगे । गांधी फोटो में पीला झंडा लटकाने से क्या होगा ।

डा० राम कृपाल सिंह : क्या माननीय सदस्य उस समय पैदा भी हुए थे ?

श्री गुणानन्द ठाकुर : मैं इस समय यही कहना चाहता हूं कि आज बिहार की परिस्थिति पर सभी पार्टियों को बड़ी गम्भीरता से सोचना चाहिए, और पिछड़ा हुआ बिहार किस तरीके से आगे बढ़े इस सम्बन्ध में सुझाव देने चाहिएं ।

बहुत से लोग जयप्रकाश जी की बात करते हैं । जयप्रकाश जी बड़े आदरणीय व्यक्ति हैं । इस सम्बन्ध में हमारे सदन के नेता माननीय दीक्षित जी ने बहुत स्पष्ट कर दिया है । मैं उसे दोहराना नहीं चाहता, लेकिन एक बात जयप्रकाश जी ने गांधी मैदान में कही है कि ये विरोधी दल के लोग कांग्रेस से नीचे हैं, घटिया हैं, अच्छे नहीं हैं ।

श्री राजनारायण : नहीं ।

श्री गुणानन्द ठाकुर : हमारे नेता जी उन्हें राष्ट्रपति बनाना चाहते थे । जयप्रकाश जी ने कहा क्यों बुढ़ापे में मुझे बर्बाद करते हो । जयप्रकाश जी को राजनीति में मत घसीटिए । वे बड़े महान व्यक्ति हैं, आदरणीय पुरुष हैं, रचनात्मक काम करते हैं, लेकिन उन्होंने एक नया मोड़ जरूर लिया, तमाम विरोधियों को उन्होंने बता दिया कि इस मुल्क में हिंसा की कोई गुंजाइश नहीं है । उन्होंने अहिंसा का जो इजहार पटना में किया मैं समझता हूं कि वह गांधीवाद का बहुत नमूना था । उन्होंने गांधी जी को नहीं पहचाना, न गांधी को देखा, न गांधी में आस्था रखी, न जवाहरलाल नेहरू में आस्था रखी, न आजादी में भरोसा किया, न आजादी में साथ दिया उनको इस आजादी से क्या लेना है । वे अच्छे दिनों के मित्र है । अगर हम रहते हैं तो वे हमारी बारात में है, हम विरोध में जाएं तो वह जनता की बारात में चले जाएंगे ।

श्री राजनारायण : यह कम्युनिस्टों के लिए बोल रहे हो ?

श्री गुणानन्द ठाकुर : हम उनकी कोई चर्चा नहीं करना चाहते ।

श्री राजनारायण : कम्युनिस्टों के बदले बोल रहे हो ।

श्री गुणानन्द ठाकुर : जिनके लिए कहिये, मैं नहीं कहना चाहता । लेकिन हम कहना चाहते हैं कि आज बिहार की आर्थिक स्थिति क्या है । भ्रष्टाचार की बात बहुत हुई । कम से कम गफूर साहब को जयप्रकाश जी ने भी कहा कि भ्रष्ट नहीं है, वह व्यक्तिगत रूप से चोर नहीं है । गहराई में मैं नहीं जाना चाहता । लेकिन इन लोगों के पास क्या नमूना है ? इसलिए हम उसमें नहीं जाना चाहते हैं । अगर भ्रष्टाचार है तो वह भ्रष्टाचार भी इंदिरा गांधी मिटायेगी, यह भी कठिन काम उन्हीं के हाथों होगा । यह इस देश की जनता को भरोसा है । हमने अब तक बहुत ऐक्जामपुल दिखला दिया है । सारा देश इस बात को समझ रहा है कि इंदिरा गांधी के मारे हुए बहुत से तत्व घूम रहे हैं सड़कों पर ।

मैं इस सदन के माध्यम से प्रार्थना करूंगा कि आज बिहार की जो हालत है मैं दिल खोलकर बात करना चाहता हूं कि बिहार की जनता इस बात को समझ रही है । लेकिन प्रधान मंत्री को चाहिए कि पिछड़े हुए राज्यों को, पिछड़े हुए इलाकों को एक सतह पर लाने के लिए, बराबरी पर लाने के लिए कुछ युद्ध स्तर पर प्रयास करें । इसके लिए 6 साल की नहीं, 6 महीने की, 3 महीने की योजना होनी चाहिए । इस सम्बन्ध में उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं कहना चाहता हूं कि वर्तमान समय में जो कृषि पर आधारित व्यक्ति हैं वह .69 है प्रति व्यक्ति, जब कि बिहार में .32 है । नम्बर आफ कंपनीज बिहार में मैं बताता हूं । बिहार में 502 कारखाने हुए, बंगाल में 9700, महाराष्ट्र में 7676 । अप्रैल 1972 से मार्च 73 तक बिहार में 54, बंगाल में 445, महाराष्ट्र में 700 । अथाराइज्ड कैपिटल बिहार में 7.3 करोड़ बंगाल में है 49.5 करोड़, महाराष्ट्र में 170 करोड़ ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Please finish.

SHRI NIREN GHOSH : You are using the army again and again. Are you not putting the army into disrepute ?

श्री गुणानन्द ठाकुर : दो मिनट और दीजिए । आज हालत यह है महोदया कि जब कि देश में हायर एजुकेशन पर प्रति स्टुडेंट 170 रुपया खर्चा है तो बिहार में हायर एजुकेशन पर प्रति स्टुडेंट 20 रुपया खर्चा है । मैं कहना चाहता हूं कि अरबन पापुलेशन के लिए कहीं पर 20 परसेंट है, तमिलनाडु में 30 परसेंट है, पर बिहार में 10 परसेंट है । तो मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आज बिहार बहुत पीछे हो रहा है । विद्यार्थियों पर गोलियां चली हैं, नौजवानों पर गोलियां चली हैं । सर्चलाइट अखबार जलाया गया है, यह भी मैं मानता हूं । (*Interruption*)

मैं गृह मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि जुडिशल इंक्वायरी की बहुत मांग होती है । जुडिशल इंक्वायरी के सम्बन्ध में कई माननीय सदस्यों ने कहा उसका हश्र देख चुका हूं । लेकिन मैं गृह मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि ऐसी इंक्वायरी जरूर करा दें ताकि बिहार के नौजवानों को सन्तोष हो, विश्वास हो । बड़ी कंट्रोवर्सी है सर्चलाइट अखबार के सम्बन्ध में । कोई कहता है कि कम्युनिस्टों ने जलाया, कोई कहता है जनसंघियों ने जलाया ।

कभी कभी कहा जाता है कि कांग्रेसी जलाये । मैं चाहूंगा कि इसकी भी जांच होनी चाहिए । अपने आप जो चीज सामने आयेगी उस को दुनिया देखेगी कि किस ने उस को जलाया है । मैं चाहूंगा कि बिहार के सभी स्कूल और कालेज खोल दिये जाएं, विधान सभा चालू की जाए और मैं खास कर बिहार के विद्यार्थियों से आग्रह करूंगा कि आजादी की लड़ाई में बिहार के विद्यार्थियों ने पटना सेक्रेटेरियेट पर झंडा फहराने की कोशिश की थी और उस में सात विद्यार्थी शहीद हुए थे और आज यह विरोधी पार्टियां आज उन्हीं से इस आजादी को तुड़वाने का काम करा रही हैं । मैं कहना चाहूंगा कि उन को अपने इतिहास को कलंकित नहीं करना चाहिए और प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी पर भरोसा करना चाहिए। वही आज इस देश की नेता हैं जिन के नेतृत्व में बिहार और इस देश का उद्धार हो सकता है । दूसरों के बहकाने से उन लोगों को सावधान रहना चाहिए, यही मुझे निवेदन करना है ।

डा० रामकृपाल सिंह : महोदया, आप के माध्यम से मैं सदन के सदस्यों को बिहार की ओर और जलते हुए बिहार की ओर, जो बिहार आज नौजवानों के खून से रंगा गया है, निरीह शिशुओं के रक्त से प्लावित हो गया है, उधर ले जाना चाहता हूं । इस सदन में अनेक सदस्यों ने बिहार के बारे में अनेक ढंग से अपनी बातें रखी हैं । माननीय मित्र और बिहार से अभी हम लोगों के साथ साथ चुन कर आये हुए श्री इन्द्रदीप भाई ने बिहार के बारे में जो कुछ रखा, जो बातें रखीं उन को उन के मुंह से सुन कर मैं स्तम्भित रह गया । आखिर आज बिहार में क्या हो रहा है ? जो कुछ हो रहा है उस की भूमिका भी आप अनेक सूत्रों से सुन चुके हैं । यह सही है कि बिहार की परकैपिटा इन्कम कम है । वहां गरीबी है, जहालत है और पिछले साल, डेढ़ साल में लोगों को न तो सरकारी दूकानों से ही गल्ला मिलता था और न ओपन मार्केट में ही वह गल्ला पा सकते थे । न उन को किरासिन तेल मिलता था, न डीजल मिलता था, यानी जरूरत की जितनी चीजें हैं उन सब की बिहार में कमी थी और जहां तक मैं समझता हूं देश के किसी अन्य हिस्से में उतनी कमी नहीं थी जितनी कि बिहार में थी । जिस समय उत्तर प्रदेश में 140, 150 रुपये क्विंटल गेंहू बिक रहा था उस समय बिहार में वह 300 रुपये क्विंटल मिल रहा था । यह सब पृष्ठभूमि है, लेकिन यह पृष्ठभूमि चली आ रही है बिहार में पहले से ही । जब से बिहार में कांग्रेस का मंत्रिमंडल बना, कांग्रेस भ्रष्ट थी, कांग्रेस भ्रष्ट है और कांग्रेस भ्रष्ट रहेगी । मैं उदाहरण देता हूं । स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व चंपारन में जमीन की लूट हुई जिस को साठी की जमीन की लूट का कांड कहा जाता है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1967 में जब संविदा की सरकार बनी, हम ने अय्यर कमीशन बहाल किया और उस में कांग्रेस के सारे वरिष्ठ नेता एक कठघरे में खड़े दिखाये दिये और 1967 के बाद भी जब जब कांग्रेस की सरकारें बनीं तो रिलीफ के लिये पंजाब से भूसा गया तो उस भूसे में भी लूटखोरी और घूसकांड मचा, रिलीफ के लिए जब कंबल गये तो वह कंबल मंत्रियों के घर में चले गये, तिरपाल गये तो वह चोरी चले गये, एक बात हो तो कही जाए यहां तो कूप में ही भंग परयो है । तो भ्रष्टाचार तो ऊपर से नीचे तक वहां व्याप्त है और 1969 में जब से कांग्रेस मर गयी और एक नयी कांग्रेस पैदा हुई तब से तो भ्रष्टाचार सीमा पार कर चुका है क्योंकि भ्रष्टाचार की गंगोत्री जब दिल्ली से चलती है तो उसे कौन रोक सकता है । जब दिल्ली के नेता मनी बैग्स लेकर पटना हवाई अड्डे पर उतर कर होटलों में बैठ कर मंत्रिमंडल को गिराने का काम करते हैं तो जब विधायक खरीदे जा सकते हैं, उन को प्रलोभन दिया जा सकता है और उन को घूस दे कर जब बिहार के मंत्रिमंडल में लोग शामिल हो सकते हैं तो उस मंत्रिमंडल पर बिहार की जनता को, बिहार के नौजवानों को बिहार की नौकरशाही को, बिहार के लोगों को कैसे आस्था रह सकती है । इस लिए भ्रष्टाचार है और उस के बाद अनइंप्लायमेंट है और उस के विशेष विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है ।

4 P.M.

इन सब चीजों के बाद जब आप चुनाव कराते हैं—जैसे अभी मधुबनी में गफूर साहब का चुनाव हुआ—उससे लोगों की आस्था इस बात से समाप्त हो जाती है कि हमारी जो वर्तमान पद्धति है डेमोक्रेसी की और जो चुनाव पद्धति है इन दोनों पद्धति के माध्यम से कोई बदल हो सकती है । पैसा-तंत्र, लाठीतंत्र और राजतंत्र—इन तीनों का उपयोग करके जबर्दस्ती वोट लेकर के, मतपेटियों का गोल-माल करके जिस ढंग से चुनाव जीता गया, मधुबनी में गफूर को जिताया गया वह इस देश में जो राजतंत्र के पोषक हैं उनके लिए एक बहुत ही चेतावनी का विषय है और इसी के कारण आज बिहार में किसी को भी सरकार में आस्था नहीं रही । गुजरात में नौजवानों ने रास्ता दिखाया कि कैसे बदला जा सकता है इस भ्रष्ट सरकार को । अब बिहार के नौजवान गुजरात से प्रेरणा ले रहे हैं । उनकी समस्याएं तो पहले से ही बहुत ज्यादा हैं । निराशा के गर्त में पड़े हुए हैं । उन्हें लगता नहीं कि कोई सही रास्ता निकलेगा । इसलिए सभी नौजवान छात्र दलों ने अपना एक संगठन खड़ा किया ।

मैं जनसंघ का हूं हमारे अनेक कांग्रेसी भाई कहते हैं कि जनसंघ की विद्यार्थी परिषद् ने उत्पात मचा दिया । क्या बिहार में जनसंघ की इतनी बड़ी ताकत है कि वह गांव-गांव में, नगर-नगर में, डगर-डगर में नौजवानों, महिलाओं, युवकों, विद्यार्थियों, वकीलों और प्रोफेसरों आदि सब का जुलूस निकाल सकें ? क्या यह संभव है ? जनसंघ की आज उतनी ताकत नहीं है । जनसंघ की जब इतनी ताकत हो जाएगी तो आप उसके आन्दोलन को दबा नहीं सकेंगे । आज यह भी नहीं रहा कि किसी पालिटिकल

[डा० राम कृपाल सिंह]

पार्टी के माध्यम से चेंज हो सके । यह नौजवान भलीभांति जानते हैं इसलिए उन्होंने सोचा कि पालिटिकल पार्टीज से अलग हटकर हम अपनी समस्याएं रखें । इसके लिए पहले विद्यार्थियों ने अपनी समस्याएं रखीं । विद्यार्थी जब अपनी समस्याएं लेकर सरकार के पास गए तो सरकार ने अनसुनी कर दी । वह बहाना बनाने लगे । उनकी समझ में आ गया कि ऐसे मांगे नहीं मानी जाएंगी ।

हम पालिटिकल पार्टीज के लोग हैं हमें मालूम हैं कि हम 10 मांग लेकर जाएं तो उसमें से दो मांगें मानी जाती हैं । ट्रेड यूनियन के लोग 15 मांगें लेकर जाएं तो दो मांगें मानी जाती है । इसके बाद बाकी मांगों को लेकर फिर आते हैं और चले जाते है । जब कुछ नहीं होता तब जाकर एजीटेशन करते हैं लेकिन ये छात्र, नौजवान यह तरीका नहीं जानते । वह तो कहते हैं कि हमारी मांगे जायज हैं । हमारे होस्टल में खाना नहीं मिलता, उसके दाम बढ़ गए, किताबें नहीं हैं, पैसा नहीं है, मंहगाई बढ़ती जा रही है । यह सब सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिएं । आप उन्हें ये सुविधाएं उपलब्ध नहीं कराते केवल थोथे आश्वासन देते हैं । वे कोई पालिटिकल पार्टीज की तरह के लोग नहीं हैं, ट्रेड युनियन्ज की तरह के लोग नहीं है कि डिमांड्स लेकर गए और नहीं मानी तो दुबारा चले आए । उनमें उबाल आ गया है । उनके इस उबाल ने जन-आन्दोलन का स्वरूप ले लिया है । गफूर साहब ने हमारे कम्युनिस्ट भाइयों का सहयोग मांगा और उनसे कहा कि यह जो मास मूवमैन्ट खड़ा हो रहा है इसको दबाओ । कम्युनिस्ट लोगों से संचालित विद्यार्थी फैडरेशन ने नौजवान युवा संघ करके एक संघ बनाया । 16 तारीख को कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से विद्यार्थी 'कवि' के घर पर और फिर सर्चलाइट इंडियन नेशन की प्रैस पर आक्रमण हुआ ।

बेतिया में 16 तारीख को ही गोली चली–आठ दस लोग मारे गए । क्या विद्यार्थी परिषद ने या युव जन सभा ने या और लोगों ने आंदोलन किया ? यह आंदोलन, जो छात्र फेडरेशन में पहले थे और सी० पी० आई० के द्वारा संचालित नौजवान संघ ने किया । जो 16 तारीख का कार्यक्रम हुआ, उसके बाद भी, हम सब लोग पढ़ चुके हैं, कई बार वहां के जो मैनेजर होते हैं उन्होंने सरकार को टेलीफोन किया, मंत्रियों को टेलिफोन किया, कलक्टर को टेलीफोन किया । किसी ने कोई प्रोटेक्शन नहीं दिया । 16 तारीख की घटना के बाद भी उन्होंने कुछ सहायता नहीं भेजी । दिल्ली तक खबर आई । दिल्ली से ही खबर गई कि हम लोग भेज रहे हैं । इसको रिपीट करने की आवश्यकता नहीं है । 18 तारीख को क्या हुआ ? छात्रों ने कहा राज्यपाल जी का भाषण नहीं होगा, आज हम भूखों मर रहे हैं, हमारी समस्याओं का समाधान हो । ठीक है, भाषण टल भी सकता था । उन्होंने कहा हम विधान मण्डल घेराव करेंगे । तो सबसे पहली कम्युनिस्ट पार्टी थी जिसने कहा कि हम बहिष्कार करेंगे विधान सभा का । यहां पर हमारे माननीय सदस्य उपस्थित हैं और मैं उनके सामने कह रहा हूं कि बिहार में पहले कम्युनिस्ट पार्टी थी जिसने वक्तव्य दिया कि हम राज्यपाल के भाषण का बहिष्कार करेंगे । 18 तारीख को . . .

श्री इन्द्रदीप सिंह : छात्र संघर्ष समिति के निर्णय के पहले ही हमने बहिष्कार कर दिया था ।

डा० रामकृपाल सिंह : पोलिटिकल पार्टियों में सब से पहली कम्युनिस्ट पार्टी थी जिसने ऐसा निर्णय लिया । अब उसके बाद गवर्मेन्ट ने देखा कि मास मूवमेन्ट होगा तो पहले उन्होंने कोशिश किया कि यह छात्र आंदोलन नहीं है, पोलिटिकल पार्टीज का आंदोलन है । यह पिक्चर है । इसके लिए उन्होंने 3 काम किए । एक यह कि जो भी शक्ति थी पुलिस की, बार्डर सेक्योरिटी फोर्स की, सबको विधान सभा को घेरने के लिए रखा, मंत्रियों के बंगलों को प्रोटेक्शन देने के लिए । और कहीं पुलिस को पैट्रोलिंग पार्टी नहीं थी, न सर्चलाइट के इर्दगिर्द न आर्यावर्त के इर्दगिर्द । सर्किट हाऊस जहां बंगले जलाए गए, कहीं भी कोई प्रोटेक्शन नहीं था । क्यों सरकार ने जान बूझ कर छोड़ दिया ? इसलिए कि गुण्डागर्दी होगी, उत्पात होगा, लूटपाट होगी तो यह मूवमेन्ट बदनाम होगा और यह समझा जाए कि गुण्डों ने यह मूवमेन्ट किया । जब आप जानते थे कि आंदोलन होने वाला है तो आपने क्यों नहीं पैट्रोल पार्टी मजिस्ट्रेट रेकरूट किए । कुछ प्रिवेन्टिव ऐक्शन तो लेते, वह लिया नहीं, और दूसरे दिन जिन नेताओं को पकड़ा वह किन नेताओं को पकड़ा ? संसोपा के, जनसंघ के नेताओं को । सदन में और रेडियो से बराबर यही कहा कि उत्पात करने वालों में संघ और जन संघ के लोग हैं क्योंकि ये चाहते थे कि छात्र आंदोलन के प्रभाव में जितने लोग हैं वे सब आइसोलेट हो जाएं । उस छात्र आंदोलन को पोलिटिकल आंदोलन है, यह कलर देना, फिर उसमें भी केवल जन संघ को और संघ को पिक् अप करके बाकी को आइसोलेट करना यह स्ट्रैटेजी रही है, लेकिन यह सब फेल कर गई । और इसके बाद क्या हुआ । बिहार में जो कुछ हुआ किसने किया ? किसने जलाया सर्चलाइट को ? सर्चलाइट के अखबार के एडिटर ने अपनी प्रेस कांफरेन्स में कहा :

"I had been fighting with the Ghafoor Ministry for attacking the freedom of journalism by providing some journalists with privileges of a Ministerial level."

गफूर ने उस जर्नलिस्ट को मिनिस्टीरियल लेवल् का प्रिवलेज दिया था । राव ने उसको चैलेन्ज किया था कि यह गलत ढंग से अखबारों को प्रभावित करना है और एक कमिटेड जर्नलिस्ट क्रिएट करने का एक रास्ता है । उसके बाद उनका कहना है :

"Referring to the CPI, the Editor pointed out that his paper was also denouncing this

patty for pursuing one policy in one State and another in a second." ....

"When the Searchlight was attacked on Monday the 16th by Congress demonstrators the CPI leaders were requested to give out a condemnation of the incident; but the CPI leaders refused to criticise that attack. The CPI leaders did not condemn even the arson on March 18.", Mr. Rao said. Reiterating that the Ananda Marg.....

श्री योगेन्द्र शर्मा : उपसभाध्यक्ष महोदया, फैक्ट यह है कि हमारी पार्टी के सैक्रेटरी. . .

(*Interruption*)

डा० रामकृपाल सिंह : मैं खड़ा हूं, मैं बोल रहा हूं ।

"Reiterating that the Ananda Marg or the RSS did not have any hand in the incendiarism, Mr. Rao mentioned that even before March 18 the Government seemed angry with the Searchlight."

श्री योगेन्द्र शर्मा : उपसभाध्यक्ष महोदया, फैक्ट यह है कि हमारी पार्टी के नेता. . .

(Interruption)

डा० रामकृपाल सिंह : सर्चलाइट और प्रदीप अखबार के जलाए जाने से पहले ही सरकार ने सब एडवर्टाइजमेंट देना बन्द कर दिया । इस सम्बन्ध में न उन्होंने वहां की प्रेस कन्सल्टेटिव कमेटी से पूछा, न आल इंडिया जर्नलिस्ट्स कमेटी को रिफर किया, लेकिन बिहार गवर्नमेंट ने अपनी तरफ से सारे एडवर्टाइजमेंट देना बन्द कर दिया । यह स्पष्ट प्रमाणित करता है कि सरकार इस अखबार के रुख को कमिटेड बनाना चाहती थी । इससे यह स्पष्ट हो गया कि कांग्रेस और हर मास्टर्स वोइस इन दोनों की सांठगांठ स्वतंत्र, निर्भीक, पत्रकारिता के विरुध रही है । कुछ लोग यह भी कहते हैं 6 लाख रुपए की जमीन पटना में सी०पी०आई० को कलेक्टर ने 50-60 हजार रुपए में अलाट कर दी और वहां पर एक नया अखबार . . . .

श्री इन्द्रदीप सिंह : आन ए प्वाइन्ट आफ आर्डर ।

श्री राजनारायण : इसमें क्या प्वाइन्ट आफ आर्डर है ?

श्री इन्द्रदीप सिंह : किसी प्रकार की कोई जमीन कलेक्टर ने कम्यूनिस्ट पार्टी को नहीं दी है, यह गलत बयानी है ।

डा० रामकृपाल सिंह : सी०पी०आई० के द्वारा नवचेतन समिति बनाई गई है उस समिति को 6-7 लाख रुपये की जमीन 50 हजार रुपये में अलाट कर दी गई है, यह निर्विवाद सत्य है ।

श्री इन्द्रदीप सिंह : नवचेतन समिति को जो जमीन अलाट की गई है उसका दाम कलेक्टर ने रेवेन्यू डिपार्टमेंट के रूल्स के मुताबिक लगाया था ।

श्री राजनारायण : और मारुति को जो जमीन दी गई है उसका दाम आप लोगों ने लगाया था ?

डा० रामकृपाल सिंह : मैं इस बारे में और नहीं कहना चाहता । आखिर गया में क्या हुआ । गया के सम्बन्ध में सरकार ने वक्तव्य दिया कि गया में 8 लोग मारे गए । मेरे पास नामों की एक लिस्ट है । मैं जानना चाहता हूं कि वे लोग कहां मरे, कब मरे (*Time bell rings*) गया बहुत कन्ट्रोवर्शियल और महत्वपूर्ण है । मेरे पास वह मेटीरियल है जो शायद अन्यत्र उपलब्ध न हो । मेरे पास उन लोगों की सूची है जो मरे हैं, जिनकी लाशें पाई गई हैं, लेकिन जिनके बारे में सरकार कुछ नहीं बता रही है । रवीन्द्र प्रसाद, गंगा महल, किरन सिनेमा के पास मरा । किरन सिनेमा उस समय चल रहा था । सिनेमा छूटा तो लोग निकल रहे थे, उस वक्त गोली चली और रवीन्द्र प्रसाद मरा । दूसरा आदमी नारायण, यह सोना साफ करने वाला मजदूर था । यह गया चौक के पास घर के भीतर मारा गया । तीसरा आदमी राम खिलावन सुनार राजाराम सुनार की दूकान पर मारा गया । चौथा सुरेज राम खिजर सराय में मारा गया जो गया से दूर है । लाखन साहू मुराद नगर का रहने वाला था, वह मारा गया । रामफल साहू गुचा का मारा गया । तीन अज्ञात लाशें सब्जी मंडी से उठाई गईं, लोगों ने देखा कि तीन लाशों को उठा कर पुलिस वाले ले जा रहे हैं । वे कौन सी तीन लाशें थीं । पिलग्रिम्स हास्पिटल में 23 इन्जर्ड पड़े थे, उनमें से 10 मर गए । गया में जो गोलीकांड हुआ उसमें सौ से अधिक लोग मरे । अभी कल परसों पटना के अखबारों में संगठन कांग्रेस के नेता सत्येन्द्र बाबू का वक्तव्य है कि गया में अभी भी पिलिग्रम्स हास्पिटल में 23 लाशें रखी हैं । जिनका कि अभी तक पता नहीं चला है कि ये किसकी लाशें हैं । गया जेल में उनको रखा गया है । इसके बाद जिनको दूर दूर से जाकर जलाया गया, जी० टी० रोड फल्गू नदी के किनारे, 22 मील पर दो महिलायें जलाई गईं । डगरा डीधा में 14 लाशें जलाई गईं, रामटोला पहाड़ पर 10-12 लाशें जलाई गईं । खिरयागा में 12 लाशें, पंचाजन पुर, वजीरगंज, गंजा में लाशें जलाई गईं । भारत सरकार ने इंक्वायरी कमेटीज नामन्जूर कर दी । अब्राहम को भेज दिया और अब्राहम ने सरकारी लोगों से मिलकर के एक वक्तव्य दिया । इसलिए मैं सरकार से मांग करता हूं कि सरकार इस मामले में क्लियरकट कहे कि कौन कौन लोग मारे गये हैं । हुजूर में एक बात . . . .

श्री योगेन्द्र शर्मा : हुजूर शब्द से क्या चेयर को संबोधित करेंगे ? यह बिहारी फ्यूडलिज्म है जो कि संसद् में नहीं आलाफ होना चाहिए । यह यहां नहीं चलेगा ।

श्री राजनारायण : आदर का सूचक है, क्यों नहीं चल सकता ?

डा० रामकृपाल सिंह : मैं आपको बताऊं कि जितेन्द्र सिंह जो कांग्रेस के एम०एल०ए० हैं उनका वक्तव्य आया है कि ए० यू० शर्मा ने वक्तव्य दिया है, होम सेक्रेटरी हैं बिहार के, कि 4500 लोग अरेस्टेड हैं और 29 लोग मारे गये और 93 इंज्योर्ड हैं। यह बिलकुल गलत है। पूरे हिन्दुस्तान में ऐसा नहीं होगा और बिहार में भी ऐसा नहीं है।

गफूर मंत्रिमंडल की चार उपलब्धियां हैं। बिहार के इतिहास में कोई प्रैस नहीं जलाया गया After Gaffoor Ministry was installed in the chair in Bihar, for the first time a Press was burnt to ashes.

दूसरी उपलब्धि है For the first time in the history of Bihar, Ministers were beaten inside the Assembly House. मिनिस्टरों को मारा गया विधान सभा में।

तीसरी उपलब्धि है, 1942 के बाद बिहार में जितने मारे गये सरकार की गोली से---वह पटना हो, गया हो, रांची हो, नवादा हो, जमुई हो, मुंगेर हो, देवघर हो, खगरिया हो या कहीं और हो---सवा, डेढ़ सौ, दो सौ से अधिक नहीं जाता है। 1942 के बाद बिहार के इतिहास में यह एक वीभत्स उपलब्धि किसी भी मुख्य मंत्री की नहीं होगी ?

इतना नहीं, मैं आपको बताऊं कि आज जो मूवमेंट बिहार में चल रहा है उतना मास मूवमेंट कभी नहीं चला। आप देखें कि इतनी महिलाओं के जुलूस निकाले गये।

THE VICE-CHAIRMANI (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Please finish. Your time is up.

AN HON. MEMBER : Since this is his maiden speech, he may be given more time.

डा० रामकृपाल सिंह: इन सब चीजों के बाद ये चार मेन उपलब्धियां हैं और फिर भी गफूर को आप बोना चाहते हैं, गफूर को लेकर चलना चाहते हैं। गफूर आये या जाये मेरा इससे कोई मतलब नहीं है, लेकिन आज बिहार में जितने भी कांग्रेसमैन हैं वह सबके सब लोग दिल्ली में बैठे रहते हैं, देवी का चरण छूने के लिए। When Rome was burning, Nero was fiddling बिहार जल रहा है और उसके मुख्य मंत्री, मंत्री और संतरी सब दिल्ली में परेड कर रहे हैं। इसलिए हुजूर···

श्री योगेन्द्र शर्मा : हुजूर शब्द मत अलाऊ कीजिए।

डा० रामकृपाल सिंह : इसलिए मैं कुछ मांगें इस सिलसिले में रखना चाहता हूं। दोनों सदनों की संयुक्त समिति बनाई जाए क्योंकि जुडिशल इंक्वायरी में बहुत समय लगता है और उसमें खर्चे होते हैं। फिर प्रोसीजर कम्बरसम है। इसलिए दोनों हाउसेज की संयुक्त समिति बनाई जाए। सर्चलाइट, प्रदीप को जलाने और गया में फायरिंग की जांच करके दो महीने के अन्दर अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Please finish.

डा० रामकृपाल सिंह : जो अफसर फायरिंग में इंवाल्व हैं उन को सस्पेंड किया जाए और जो लोग मर गये हैं उन को क्षतिपूर्ति दी जाए। जो इंजर्ड हुए हैं उन्हें क्षति-पूर्ति दी जाए। जो स्टूडेंट्स और पोलिटिकल वर्कर्स अरेस्ट कर लिये गये हैं उन्हें तत्काल रिहा किया जाए और असेम्बली को डिजाल्व किया जाए। आखिर 8 तारीख को असेम्बली बंद क्यों की गयी ? आठ तारीख को वहां मतदान होने वाला था और सडेनली आप ने असेम्बली को बन्द कर दिया। असेम्बली को आप को चलाने का मंशा था तो आप को यह नहीं करना चाहिए था। आप ने असेम्बली को रबर स्टांप समझ लिया है और इसलिए...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Please sit down. I am asking you to sit down. I am calling Mr. Kesri. You are taking the time of the House. I am disallowing it. Yes, Mr. Kesri.

डा० रामकृपाल सिंह : और जो स्कूल और कालेज बंद है उन के लिए वहां लड़कों की डिमांड है कि वे खोले जाए। जब तक वह बंद रहे हैं उस समय तक की पूरी फीस लड़कों की माफ की जाए। आठ आठ महीने शिक्षकों को वेतन नहीं मिला है, शिक्षक को भारत सरकार तत्काल वेतन दे और मैं समझता हूं कि भारत सरकार इस पर विचार करेगी और आप के माध्यम से मैंने जो बातें यहां रखी हैं सरकार, मैं आशा करता हूं कि उनपर जरूर विचार करेगी।

श्री सीताराम केसरी (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदया, आपके सामने सारी बातें बिहार के संबंध में हमारे दोस्तों ने कहीं, मगर कुछ कहने के पहले मैं इतना कहना चाहता हूं कि मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता। मुझे इस बात का बहुत बड़ा दुख है कि हमारे भाई ने जो गफूर साहब के संबंध में कहा कि वह चाहते हैं कि वह मुख्य मंत्री पद पर न रहें तो उस के लिए सुझाव क्या है। सुझाव यह है कि जनसंघ की बुनियाद है सांप्रदायिकता और आर० एस०एस० की बुनियाद है सांप्रदायिकता। इतना ही नहीं वह इस भावना को सारे देश में जगाये हैं। उन्होंने सारे देश में सांप्रदायिकता की भावना को जगाया है।

[The Vice-Chairman (Shri V.B. Raju) in the Chair]

डा० रामकृपाल सिंह : यह तो बचपन से आर० एस० एस० में रहे हैं।

श्री सीताराम केसरी : और दूसरी बात यह कि मैं चुनौती देता हूं कि इस आंदोलन में अगर एक भी मुसलमान हो तो मैं उस के लिए सदन को छोड़ने के लिए तैयार हूं। यह शर्म की बात है कि आप इस सारे आंदोलन को देखिये, कहीं भी कोई मुसलमान इस सत्याग्रह में भाग नहीं ले रहा है। यह एक दुखद बात है और मैं चुनौती के साथ कहता हूं कि इस में एक भी मुसलमान नहीं है, इस आंदोलन में और मुझे . . .

श्री राजनारायण : जो हमारी पार्टी के थे उन को सब से पहले पुलिस ने गिरफ्तार किया था।

(*Interruption*)

श्री सीताराम केसरी : और मुझे अफसोस है कि इस तरह की बात वह कह रहे हैं। मधुबनी में क्या हुआ। मुंह की खाते। आप जान गए हैं कि मधुबनी में क्या हुआ। 33 हजार मुसलमान मतदाता हैं और उन 33 हजार मतदाताओं ने और तमाम वहां के हिन्दुओं ने दोनों ने मिल कर गफूर को वोट दिया और ईमानदारी के साथ दिया और उन्होंने क्या किया। आप जानते हैं कि पंडौल में चूंकि वहां कोई मैं भूमिहार नहीं था कोई राजपूत नहीं था, एक बनिया था इस लिए वहां उन लोगों ने मुझे मारने की तैयारी की थी। आप इस तरह की बातें करते हैं। मधुबनी में जो कांड हुआ, जो नीच बर्ताव हुआ, जिस तरह से वहां गुंडाशाही हुई, जिस तरह का उपद्रव मचाया गया वह शर्म की बात है और फिर भी उन के मुंह होता है अपनी बात कहने का। आप जानते हैं कि उन्होंने क्या किया। उन्होंने गया में जनसंघ और आर० एस० एस० के लोगों से तीन दिनों तक खूब उपद्रव मचाया और पुलिस को उत्तेजित किया, वहां के लोगों को उत्तेजित किया।

आप जानते हैं उन्होंने क्या किया। गया में जनसंघ और आर० एस० एस० के लोगों ने उत्पात कराया? सांप्रदायिक दलों ने किस तरह से सांप्रदायिक भावनाओं को उत्तेजित किया। माफ कीजिएगा उन्होंने जितने नाम पढ़े हैं क्या उसमें एक भी स्टूडेन्ट है। (*Interruption*) छात्रों का नाम लेते हैं और मैं आपसे कहूं, आप चलिए, पटना में देखिए, उन्होंने क्या कर रखा है। कहीं कहीं पर उन्होंने जो धरना दिलाया 5 वर्ष से 13 वर्ष के बच्चे उसमें थे। शरम आती है देखकर। दुख होता है, फिर भी अपनी लम्बी चौड़ी बातें सुना रहे हैं।

श्री राजनारायण : धीरे धीरे बोलिए।

श्री सीताराम केसरी : दूसरी बात, श्री जयप्रकाश देश के एक महान नेता हैं, उन्होंने भी कहा कि गफूर ईमानदार आदमी हैं, एक बार नहीं अनेक बार। चूंकि ये राजनैतिक दल वाले जालिम है, क़ातिल हैं और देश के जनतंत्र पर ये हावी होना चाहते हैं उस महान व्यक्ति की छत्रछाया में, किन्तु जयप्रकाश जी अब जागरूक हो गए हैं कि उनकी भावना क्या है, आर० एस० एस० वालों की भावना क्या है, जनसंघ की भावना क्या है शर्म की बात है, जब ये ठुकरा दिए जाते हैं, जनता में जब मार खाते हैं, जब लात पड़ती है, जब घसीटे जाते हैं, जब थूकती है जनता, तब कहते हैं विधान सभा भंग करो। यह फासिज्म का तरीका है। इसको देश नहीं बर्दाश्त करेगा। एक एक व्यक्ति जानता है आपकी इस साजिश के पीछे क्या है। आप जानते हैं पहले उन्होंने भ्रष्टाचार से आंदोलन शुरू किया, फिर उसके बाद छात्रों के डिमाण्ड की मांग की, उसके बाद कहा कि छात्रों की यह मांग है, फिर किस पर आ गए—असेम्बली को भंग करो, विधान सभा भंग करो, जनतंत्र को भंग करो। महोदय, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं हिटलर ने अल्पसंख्यकों के प्रति नफरत पैदा करके, सांप्रदायिक भावना फैला कर फासिज्म को चलाया। उसी तरीके को सनसंघ के लोगों ने और आर० एस० एस० के लोगों ने किया। 1942 सन की बात करते हैं, पवित्र वर्ष की बात करते हैं, उस समय उनका कहां जन्म हुआ था, ये कहां थे—मैं जानना चाहता हूं। उनका दामन, उनका चेहरा काला है जिन्होंने 1942 की आजादी के काल को देने वाले उस महान् नेता की हत्या की। मैं बोलना नहीं चाहता था, मैं कहना नहीं चाहता था, मगर मुझे शरम लगती है, दुख लगता है कि बिहार जैसी भूमि में जिसने बुद्ध को जन्म दिया, राजेन्द्र प्रसाद को जन्म दिया, जयप्रकाश नारायण को जन्म दिया, उस प्रदेश में ये आर० एस० एस० के नौजवान बच्चे लाकर के उन्होंने एक आंदोलन छेड़ने की कोशिश की। आप जानते है, 18 तारीख को 12 बजे तक . . .

(*Interruption*)

एक माननीय सदस्य : खता भी करें और कोसे भी।

श्री सीताराम केसरी : उनको शर्म आनी चाहिए कि वह जनतंत्र पर इस तरह आघात करते है। चोरी और सीनाजोरी---बेईमानी करें और चाहे नेकनामी की बात। तुम्हारा सारा शरीर कालिख से पुता हुआ है, कभी तुम जनतंत्र के समर्थक रहे। हमेशा हमारी सारी नीति, सारा सिद्धांत, फासिज्म पर रहा। यह हमारा मुल्क कभी बर्दाश्त नहीं करेगा।

एक चीज मैं और कहना चाहता हूं आप जानते हैं जब ये फेल कर गए, जब असेम्बली जाने में और असेम्बली के मेम्बरों को रोकने में कामयाब नहीं हुए, गवर्नर साहब को रोकने में कामयाब नहीं हुए तो इन्होंने प्रतिहिंसा के रूप में नौजवान बच्चों के नाम पर घरों को, होटलों को, प्रैस को, और जिसको सामने पाओ जला दिया, लूट लिया, पीट दिया, और यही हुआ। उनको शर्म आनी चाहिए इस तरह की बात करते हुए। ये चाहते हैं अपना रंग बदल कर शेर का रूप धारण करना। यह ज्यादा दिन नहीं चलेगा। भगवान की कृपा से बिहार में शांति आ रही है। 4 डिविजनों में शांति हो गई, सिर्फ एक डिविजन की बात है, वह भी शांत हो जाएगा।

[श्री सीताराम केसरी]

इन शब्दों के साथ मैं फिर आपके द्वारा गुजारिश करूंगा कि गफूर स्वयं जयप्रकाश नारायण जी के शब्दों में एक ईमानदार, शरीफ मुसलमान हैं । वह देशभक्ति से भरा हुआ है ।

इनकी तरह नहीं जिन्होंने अंग्रेजों से हाथ मिलाया है, जिनके हाथ गांधी जी की हत्या से लाल हैं । मैं कह देता हूं कि बिहार पवित्र होकर प्रगट होगा और बढ़ेगा और जनता की रक्षा करेगा ।

श्री राजनारायण : श्रीमान्, पॉइन्ट आफ एक्सप्लेनेशन । देखिए, मधुबनी का चुनाव गफ्फूर ने बेईमानी से जीता । सूरज बाबू की हत्या किसने कराई ? सूरज बाबू 25 हजार वोट से जीते । गफ्फूर बेईमानी से जीता है ।

(Interruption)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU) : Please don't do that.

श्री राजनारायण : श्रीमान्, मधुबनी से सूरज बाबू की औरत खड़ी थी, सूरज बाबू 25 हजार वोट से जीते थे ।

(Interruption)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU): Let there be more light than heat. आप हर भाषण में मदाखलत नहीं कर सकते ।

(Interruption)

श्री राजनारायण : मैं स्पष्टीकरण कर रहा था । सूरज बाबू हमारी पार्टी के उम्मीदवार थे । सूरज बाबू लेबर लीडर थे । सूरज बाबू की हत्या हुई । सूरज बाबू की पत्नी को हमने मधुबनी से खड़ा किया । गफ्फूर ने शुद्ध बेईमानी से सूरज बाबू की औरत को हराया । *(Interruption)* बैठ ।

श्री एन० आर० चौधरी (आसाम) : "बैठ" ऐसा बोल सकते हैं ? कोई कानून है हाउस में ?

उपसभाध्यक्ष (श्री वी० बी० राजू) : आप बैठिए ।

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मैं इतना कहना चाहता हूं कि सूरज बाबू की औरत को बेईमानी से हराया गया, सूरज बाबू की हत्या कराई गई ।

(Interruption) THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU): I won't allow these interruptions. There is a limit for everything. We are having a debate here. We are not having a fight.

SHRI N. P. CHAUDHARI : He should not interrupt.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU): I am here to control and not you.

श्री राजनारायण : यह आपने ठीक कहा ।

SHRI SHYAMLAL GUPTA : Sir, Bihar, the land of Buddha, the land of Ashoka and the land of Gandhiji who started his work at Champaran, is now the land of Huns, Mr. L. N. Mishra and Mr. Kesri, the President of the B.P.C.C. It is being ruled by their stooges who have brought in all kinds of corruption there. There is no law and order. What is the good of the Government ? The ruling party says that the opposition parties are responsible for it. I have been there last week. The barricades are still there. What is the good of such a Government ?

Now, Sir, about the opposition parties what are they? If the ruling party is untruthful, Ravan is being opposed by Ram, who is truthful And Sir, the hon. C.P.I. Member has mentioned the name of Congress (O), Nav Yuvak Sangh and that in Patna and other places, the Congress (O) as an opposition party took part in all these happenings. Sir, I had been to the office of 'Searchlight' and 'Pradeep'. I have seen the valuable Library wherein Mahatma Gandhi and other great leaders used to stay. It had records of so many years. And these have been burnt. If the Opposition was responsible for all this burning, why did the Government stop giving advertisements to 'Searchlight' and 'Pradeep'? 'Searchlight' has been banned and 'Pradeep' has been banned in the departments of the Government. Why ? If there is any truth in it that the Congress (O) or the Jana Sangh or any other opposition party was responsible for this the Home Minister may please tell me why the 'Searchlight' and the 'Pradeep' were banned by the Government for advertisements and for purchases by the jails, the Government departments, and others ? I had been to the searchlight office. All the machins have been burnt. The rooms have been burnt. The library has been burnt. They are carrying on with a small newspaper by using the reassembled machines. What is all this ? Bihar is a very poor State. It is deficit in foodgrains. About a million tonnes of grains are required to feed Bihar annually. What is the monthly ration there ? Seven kilos of wheat for a family of four per month. Do you think that a family of four can survive on such a meagre ration ?

SHRI MAHAVIR TYAGI (Uttar Pradesh): Are you sure about that ?

SHRI SHYAMLAL GUPTA : I am sure, and I had been to Bihar last week. What is

the sugar ration there ? Two kilos of sugar or less whenever it is available for a family of four in a month. And for the rest, you have to go to the black market. A province which is producing coal has coal shortage. It has power shortage, food shortage and there is no irrigation. Why? And all this has been overlooked all these years. There is something wrong somewhere. The Central Government is also responsible for all these shortages. Garibi Hatao was a good slogan for catching the poor people for their votes. I remember that a news-item appeared in a newspaper that Shri Sitaram Kesri, Shri Ghafoor and Shri L. N. Mishra had to take shelter in a railway wagon while they were going to attend a meeting for Mr. Gaafoor's election. What is that ? If the public is with them, why should these so-called leaders of Bihar go and take shelter in a railway wagon?

SHRI SITARAM KESRI : I never took shelter there. Your goondas wanted to disturb the meeting

(Interruptions)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU): Order, order.

SHRI SHYAMLAL GUPTA : In Patna, at every 200 yards in the streets, you have batches of about six students on hunger strike for 12 hours. He says that they have been misled ? How ? How have the students of 12 years and 15 years been misled by the opposition parties ? What was Mr. Kesri doing there ? He had gone there to distribute money so that. . . (Interruptions)

Sir, who is responsible for all this mischief? C.P.I, and Congress—hand in glove with each other—were responsible for bringing all the misery to the State of Bihar. Since they have fallen out in Gujarat, they are falling out in Bihar also. Sir, today is not far off when you will see that Bihar will lead India as it had done under Gandh'ji to start a non-violent non-cooperation from Champaran. You must have read in the newspaper that Kedar Pandey was offered a garland of shoes and not of flowers by the school children. (Interruptions) No doubt, Sir, flowers are much costlier these days but they are much cheaper than shoes.

SHRI MAHAVIR TYAGI : Were they new shoes ?

SHRI SHYAMLAL GUPTA : I do not know. But, this shows how popular your Ministers there are.

Now, you are telling that Gafoor Ministry is becoming a shorter one. Then, why are you expanding the Ministry again ? That shows that dissidents are there. And, in order to appease the dissidents you have no alternative but to expand the Ministry and bring in this rubbish again and that would be the death of the Congress there. All these acts will be nails in the coffin of the ruling party.

Sir, there is no administration there. I had talks with some people in the hospitals. No doctor attends to any patient there. There are no medicines in the hospitals. People have, therefore, to go to private doctors. I will request the Home Minister to visit Patna and see things for himself. There is a very large number of chemists' shops in Patna. You will not find that number in any other capital city of India. Why? Because disease is rampant there. Mal-nutri-tion is rampant there. Whose responsibility is this ? It is the responsibility of the State Government and it is the responsibility of the Centre. Congress Government is there for the last 27 years. Congress Government could not eradicate poverty from the country. If you go to Patna, the capital city of Bihar, you will see most filthy conditions prevailing there; what to talk of other smaller towns in Bihar.

Now, Sir, I come to the shoot at sight order at Gaya. The Home Minister has repudiated this and said that there was no such order by the District Magistrate. But, it is a fact and it has been said at many quarters that there was a shoot at sight order. Why was this done ? My friends have said that there were more than 120 deaths in Bihar. Why did all this happen in Gaya ? The reason is that one District Magistrate had got six innocent women rounded up not by the women police but by policemen. What was the need of rounding up women by policemen ? He should have called the women police force to round them up, if they were culprits.

Sir, some friends say that Ghafoor Ministry is very popular in 'Bihar. If that is so, then why don't they come out of their bungalows and face the public ? They have no guts to face the public. There is no law and order there. All the officials are corrupt. When you go from the airport to the city, you will see for yourself what is happening there.

Mr. Rao, editor of Searchlight, has stated that there was a deep rooted conspiracy behind

[Shri Shyam Lai Gupta.]

burning down the offices and press of the Searchlight. The complicity of the State Government in the conspiracy was clear, as Police were ordered not to take action against the mob and the fire brigade services were not available even on the day after arson.

I have been there and all the people working there told me that for 12 hours there was no policemen available in spite of their approaching the Chief Minister or the high officials. This very clearly shows that because of the leanings of the paper against the ruling party this was done purposely to finish the Searchlight paper and finish it for good. Mr. Rao was emphatic that the mischief mongers were neither students nor the Anand Margis, he also excluded the RSS and the Jana Sangh and he said that the Bihar CPI was particularly unhappy because of the criticism it got. What does it show ? It shows that the Bihar Communist Party and the Congress Ruling Party were responsible for all this mischief and now they are bringing it to the Opposition Parties. What is the strength of the Opposition Parties. It reminds me of a cartoon in the Hindustan Times some time back that if you take a microscope even then you will not be able to find the Opposition Parties because we are too little in number as a pygmy compared to the giants, you giants, and still you say that we are responsible for all this. If we have so much strength that we could paralyse the administration, then you are not fit to rule for a single minute. If we can do all this mischief then you have no right to stay in power. Sir, all these things show the incompetency, inefficiency and the lust for power in the ruling Party. There are many people in the CPI, some are sitting there, some are sitting here and they are all together. Many people in the House are with the Congress Party. They are showing their identity with the Congress. I cannot for a moment distinguish between a CPI man and a Congressman. It is an open fact. Now the root cause of all this is, as my learned friend in the DMK said, that the instructions should not go from Delhi. The people there, the Vidhayaks there in Bihar should have their own leader, whosoever he may be. Let him be for the Prime Minister or against the Prime Minister, against Shri Mishra or against Shri Kesri, whosoever he may be, only then the democracy can work. Moreover, Sir, you have to set right the administrative machinery there. Without that nothing will be all right. With these word, I thank you Sir.

श्री कमलनाथ झा : उपसभाध्यक्ष जी, सदन के माननीय विरोधी दल के नेताओं ने आपस में बिहार के तथाकथित विद्यार्थी आन्दोलन के संबंध में एक दूसरे पर छींटा-कशी की है । हम लोग चुप-चाप सुन रहे थे । विरोधी दल के एक पक्ष का दावा यह है कि उनके दूसरे भाई दूसरे विरोधी दल वालों ने इस आगजनी की घटना में हिस्सा लिया और दूसरा पक्ष यह कहता है कि विरोधी दल के दूसरे हिस्से ने इस आगजनी में भाग लिया है । हम लोग संसदीय जनतांत्रिक प्रणाली में विश्वास करते हैं और विरोधी दल का आदर करते हैं । इसलिए हम ऐसा मानने को मजबूर हैं कि हमारे माननीय विरोधी दल के लोग जो एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप करते हैं वह ठीक है । मैं उनसे निवेदन करना चाहता हूं कि अच्छा यही है कि वे आपस में निपट लें कि किन किन विरोधी दलों ने पटना, गया और बिहार के अन्य क्षेत्रों में हुई आगजनी में भाग लिया है ।

सभापति जी, मैं आपके माध्यम से सदन में यह बात रखना चाहता हूं कि आज बिहार में जो कुछ हो रहा है वह कोई साधारण घटना नहीं है । मैं इसको एक सुनियोजित, आयोजित, प्लान्ड कैलकुलेटिड जनतंत्र विरोधी साजिश मानता हूं ।

सारे देश में आज से नहीं, सन् 1969 के बाद से ही कुछ विरोधी दल के कुछ लोग जब बार बार श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व को अपदस्थ करने में कामयाब नहीं हुए तब से लगातार वे सोच रहे हैं, विचार रहे हैं हम किस तरह से हिन्दुस्तान में जनतंत्र की हत्या करें, और भारत की 57 करोड़ जनता के सर्वमान्य नेता को अपदस्थ करने की साजिश चला रहे हैं (*Interruption*) । सुनिए, मैंने डिस्टर्ब नहीं किया किसी को । और, वे लोग ही बराबर यह चार्ज लगाते हैं कि हमारे नेता को जनतंत्र में विश्वास नहीं, वे डिक्टेटर हैं, और उन्होंने बार बार कहा, 1969 में कहा कि इन्दिरा वेव्ह चला के वोट्स पौकेट कर लिए और उत्तर प्रदेश के चुनाव के समय जब कि देश में अकाल की वजह से, सूखा की वजह से, बाढ़ की वजह से, बंगलादेश की लड़ाई की वजह से हमारे अर्थतंत्र को जबर्दस्त धक्का लगा और देश की हालत पतली हो गई तब उन लोगों ने चार्ज लगाया कि इन्दिरा गांधी चुनाव नहीं कराएगी क्योंकि इस वक्त कांग्रेस की प्रतिष्ठा कम हो गई । लेकिन इतिहास जानता है, इसी राज्य सभा में एक वोट से कांग्रेस पार्टी जब हार गई तो इन्दिरा जी ने अपने सिंहासन को जनता के बीच में छोड़ दिया यह कह कर कि जनता फैसला करे । 7 बार लोक सभा में जब अविश्वास के प्रस्ताव पर ये हमको नहीं डिगा सके, लेकिन एक बार राज्य सभा में एक वोट से हारने पर हमने जनता की अदालत में अपने सिंहासन को फेंक

दिया, और जब जीत कर आए तो हिन्दुस्तान में एक शक्तिशाली सरकार गठित किया । जब इन्दिरा जी पर चार्ज लगाए जा रहे थे—जैसा कि मैंने कहा—कि वे उत्तर प्रदेश में चुनाव नहीं कराएंगी क्योंकि इस समय पानी नाक के ऊपर है, उन्होंने उत्तर प्रदेश में शेड्यूल के मुताबिक चुनाव कराया और जनता का कांफिडेंस हमको मिला । हम बहुमत में जीत कर आए । कांग्रेस उत्तर प्रदेश में जीती जनसंघ तो अटल बिहारी वाजपेयी जी को उत्तर प्रदेश का मुख्य मंत्री देखना चाहता था, बी० के० डी० चौधरी चरण सिंह को उत्तर प्रदेश का मुख्य मंत्री बनाना चाहता था, और राजनारायण जी शेखचिल्ली की तरह उत्तर प्रदेश के घर मंत्री बनने का ख्वाब देख रहे थे, उनका सपना टूटा । जब जनता उनको धक्का देती है, जब जनता की अदालत में ये पिटते है, जब हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में पिटते हैं, तो कैरेक्टर एसेसिनेशन करते हैं और जनता की अदालत में जब पिटते हैं तो आग लगाते हैं और पार्लियामेंटरी डिमोक्रेसी को रेक् करते हैं । यही कुछ विरोधी दलों का आज का इतिहास है । इसलिए आज बिहार में जो हो रहा है यह कोई स्पोरेडिक घटना नहीं है, कोई एक दुर्घटना नहीं है, लेकिन कतिपय विरोधी दलों द्वारा, जिनको देश के जनतंत्र में कोई विश्वास नहीं है, आज उनकी साजिश हो रही, षड्यंत्र हो रहा है । बिहार के आंदोलन को अगर आप गौर से देखेंगे तो इसमें 2 इन्ग्रीडियेण्ट्स आपको मालूम पड़ेंगे । मैं उदाहरण रखता हूं कि किस तरह से साम्प्रदायिक तत्व आज बिहार में फिर एक बार सांप्रदायिकता की ज्वाला को भड़काना चाहते हैं । अभी चंद दिन पहले एक जलूस निकला गधे और सुअर का । यह विचार करने की बात है उसमें कि गफूर साहब जो माईनारिटी कम्युनिटी के हैं, मुसलमान हैं, इसलाम में विश्वास करते हैं, सुअर को इसलाम में हराम करार दिया गया है उस सुअर के गले में अबदुल गफूर की तख्ती लगाई गई थी । यह छोटी घटना नहीं है, ज्वाला प्रचण्ड फैल सकती है छोटी सी चिनगारी भी । 80 वर्ष के बूढ़े लोक सभा के माननीय सदस्य ताहिर साहब जिन्होंने 50 वर्ष का सार्वजनिक जीवन ईमानदारी से बिताया, जिनको किसी ने बेईमान नहीं कहा है . . .

आज उस बूढ़े वकील को वकालतखान में घेरकर इस्तीफा दिलाया गया । आज इसी ढंग से ये लोग काम कर रहे हैं । इनका प्रचार का क्या तरीका है ? ये कौन सी आग फैलाना चाहते हैं इसको बारीकी से देखने की जरूरत है । जिनको जनता ने वोट देकर चुना है उनको जबरदस्ती सड़कों पर नंगा करके, उनसे इस्तीफा लिखवा कर जनता का ये लोग अपमान कर रहे हैं । ये चिरंजीव झा को नंगा नहीं करते हैं बल्कि जिसे जनता न उनको वोट देकर भेजा है उस जनता को नंगा करते हैं । वे ताहिर साहब का ही अपमान नहीं करते हैं बल्कि उस जनता का अपमान करते हैं जिसने उनको चुनकर भेजा है । राजनारायण जी लोहिया जी का जिक्र करते हैं और कहते हैं कि वे संसदीय परम्परा में आस्था रखते हैं । लोहिया जी कहते थे कि सांप की दो जीभ होती हैं, मुंह से बोलते हैं कुछ और करते हैं कुछ । मुंह से कहते हैं संसदीय परम्परा में विश्वास करते हैं लेकिन हाथ से संसदीय प्रणाली का गला घोंटते हैं । मेरे साथी भी इस बारे में कह चुके हैं, मैं दोहराना नहीं चाहता । इनके नेता ने कहा कि मुख्य मंत्री ईमानदार है तो भी उसकी सरकार को भंग कर दो । ये कहते हैं कि भ्रष्टाचार के खिलाफ है लेकिन उसे हटा दो क्योंकि भ्रष्टाचार से इनकी सांठगांठ है, ये ईमानदारी के खिलाफ हैं । गफूर साहब को यह सर्टिफिकैट हमारी पार्टी ने नहीं दिया यह राजनारायण जी के जो आज के नेता हैं श्री जयप्रकाश जी उन्होंने दिया है—कल तक वे जयप्रकाश जी को नेता नहीं मानते थे, मैं जानता हूं ये जयप्रकाश जी में कितनी आस्था रखते हैं, लेकिन आज ये जयप्रकाश जी को नेता मानने लगे हैं । आज उस गफूर साहब को, ईमानदार आदमी को ये मंत्रिमंडल से हटाना चाहते हैं क्योंकि इनकी सांठगांठ बईमान लोगों से है । आज बिहार में कौन आन्दोलन कर रहा है ।

(Interruptions)

श्री राजनारायण : महामाया प्रसाद बेईमान हैं क्या ?

श्री कमल नाथ झा : मैं दस दिन से गांव-गांव का दौरा करके आया हूं, जिले-जिले का दौरा करके आया हूं, कल 12 बजे ओथ ली है । धरना कौन लोग देते हैं ? गांव के खेत मजदूर, रिक्शावाले, तांगेवाले, क्या ये धरना देते हैं ? पटना में चले जाइए, एक भी गरीब आदमी धरना देता नहीं मिलेगा । 500-500 रुपए की साड़ी जिनकी देह पर है, जो टेरीलीन और नायलन का कपड़ा पहने हुए हैं, ऐसे बड़े बड़े अफसर, बड़े बड़े मुनाफाखोर, जमाखोर और भ्रष्टाचार की दरिया में तैरने वाले लोगों के घर वाले धरना देते हैं । उनकी सूरत देखने से ही आपको पता लग जायेगा कि ये हेव्स हैं या हेवनाट्स हैं । आप देखिए ये लोग मैदान में हैं और तथाकथित विद्यार्थियों का नाम लेते हैं । अपना फेस तो है नहीं, जनसंघ पार्टी को तो यह फेस है नहीं, एस०एस०पी० को फेस है नहीं, दूसरी पार्टियों को यह फेस है नहीं कि कहें कि हमारे झंडे के नीचे आओ । ये लोग नाबालिग विद्यार्थियों को, अबोध बच्चों को आगे करते हैं, लेकिन वे भी विद्यार्थी नहीं हैं । मैं माननीय गृह मंत्री से कहूंगा कि वे इसकी जांच कराएं कि ये कौन हैं । ये विद्यार्थी नहीं हैं । विद्यार्थी तो अपने घरों में चले गए, कालेज बन्द हो गए, विद्यार्थी घरों में चले गए । श्रीमान्, एक परसेंट, दो परसेंट विद्यार्थी हो सकते हैं ।

श्री राजनारायण : शहर में विद्यार्थी नहीं रहते ?

श्री कमलनाथ झा : आप जांच कीजिए एक एक जिले में पूर्णिया में और दूसरे जिलों में । ये लोग जाते

□ [श्री कमलनाथ झा]

हैं शाम को दूकानदारों से कहते हैं 500 रुपया लाओ, 300 रुपया लाओ, 200 रुपया लाओ, 100 रुपया लाओ, 50 रुपया लाओ और मोटी मोटी रकम चन्दे के नाम पर वसूल करते हैं।

अब वह खेल आया है कि चन्दे के बटवारे में आपस में लड़ाई हो रही है। पांच पार्टियां इस आन्दोलन में थीं। इसलिए अगर भ्रष्टाचार मिटाना इस आन्दोलन का उद्देश्य होता, अडल्ट्रेशन बन्द करना इसका उद्देश्य होता, आज तक डेढ़ महीने में एक भी होर्डर का इन्होंने पकड़कर सरकार के जिम्मे लाया होता, एक भी घूसखोर को रेड हैंडेड पकड़ कर उसके घर पर धरना दिया होता, एक भी ब्लैक मार्केटियर के घर पर इन्होंने धरना दिया होता तो हम समझ सकते थे। लेकिन मैं आपको कहता हूं कि एक एक होर्डरे, एक एक ब्लैक माकटियर के यहां से चन्दा लिया। इसलिए उप-सभापति जी, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि यह आन्दोलन उन्हीं लोगों का है जिन लोगों के खिलाफ कांग्रेस पार्टी ने लड़ने का संकल्प लिया है, उन्हीं लोगों का है जो प्रति-क्रान्ति करते हैं। यह डेमोक्रेसी को खत्म करना चाहते हैं। यह कैसे खत्म करना चाहते हैं ? वाई फोर्स और साम्प्रदायिकता को उभारने तथा ब्लैक मार्केटियर, रेकेटियर और होर्डर्स के साथ सांठ-गांठ करके तथा वेस्टेड इंटरेस्ट्स से सांठ-गांठ करके। यह लोग इस देश में जनतंत्र की हत्या करने का षड़यंत्र कर रहे है। इसलिए मैं आपके माध्यम से सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि इन लोगों के विरुद्ध सख्ती से कार्यवाही होनी चाहिए। ऐसे लोग जो जबरदस्ती पकड़कर एम०एल०ए०, एम० पी० से हस्ताक्षर करा लेंगे और अगर इस सिलसिले को चलने दिया जाएगा तो देश में कोई पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी नहीं रह सकती। अगर ऐसे लोग जो नवयुवक तत्वों में से कुछ गलत लोगों को पार्टी की लाइन पर डालते हैं, उनके माध्यम से ऐन्टी सोशल ऐलिमेंट के माध्यम से आग लगवाने का काम करें, वह निश्चित ही देश-द्रोही, समाज-द्रोही हैं और उनके विरुद्ध मजबूती से कार्यवाही होनी चाहिए।

(*Time bell rings*)

अन्त में मैं एक सुझाव आपको इजाजत हो तो रख दूं। इसके साथ ही साथ मैं यह भी कहना चाहता हूं कि इन का हौसला, इनको बल कहां से मिलता है, साहस कहां से मिलता है ? कुछ गलती हममें भी है और हममें कमजोरी यह है कि आज जो गरीब हमसे आशा किये हुए हैं, अभी उत्तर प्रदेश के चुनावों में हमने देखा कि वह तमाम लोग जिन्होंने कांग्रेस के झण्डे के नीचे फायदा उठाया वह आज हमारे खिलाफ हो गये और गरीब तबका जिसका हमने भला नहीं किया, उसने ही हमारा साथ दिया। बिहार में भी जनता गरीब है। मगर वह राष्ट्रवादी है, उसके खून में राष्ट्रवाद भरा हुआ है। इसलिए मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि बिहार की गरीब जनता के दुखदर्द को मिटाने के लिए, उनको राहत देने के लिए, वहां के नौजवानों को रोजगार देने के लिए, वहां के गरीबों की स्थिति को सुधारने के लिए, वहां की खेती की तरक्की के लिए आपको अविलम्ब ध्यान देना चाहिए ताकि इन लोगों को भरोसा और आशा हो। ऐसा न हो कि उनकी आशाओं पर भी पानी फिर जाए। इतना कहकर मैं समाप्त करता हूं।

SHRI MONORANJAN ROY (West Bengal) : With Congress rule in our country for the last 27 years, the price of every commodity and article has gone up except the price of the lives of the poor people. The price of the lives of the human beings, particularly that of the poor people, is going down and down. They are dying of starvation, due to adulteration of food and drugs and by the trigger-happy police let loose by this Congress Government like hungry wolves upon the starving people of our country. And Bihar, after Gujarat is a glaring example how the Congress Governments at the Centre and at the States feel, and feel rightly, that they cannot rule the country in the way that they have been ruling so long. They have made democracy a facade. They started rigging of elections in West Bengal in 1972, they have started doing it in other States also during either State-wise elections or bye-elections. That happened in Bihar also, and particularly in the case of the election of Mr. Ghafoor, now the Chief Minister of Bihar, it was rigged. He was not elected by the people. During that counting, people were teargassed; those who went near that counting booth, they were not allowed to go near because on the day of polling —however much Mr. L.N. Mishra may deny— despite his being the Railway Minister, trains stopped, buses stopped plying and the people were not allowed to go. Even about those who voted, the ballot boxes were changed, the ballot papers were changed and when the people challenged during that counting of votes, they were teargassed, lathi-charged and firing was resorted to by the police. That was how he came to power. I am not concerned whether Mr. Ghafoor is less corrupt or more corrupt. The entire system that they have produced from the Centre down to the State, is responsible for the state of affairs in our country. Today I have been listening to the speeches of the Congressmen with rapt attention. It shows how they are living in a fool's paradise with complacency and thinking that the poor people will have to undergo all privations, miseries, deaths and starvations

but they will not be allowed to raise their voice. How the entire State is now being reduced to a Police Raj can be seen from the expenditure on police. In 1950 the Central expenditure and State-wise expenditure on police, together, was Rs. 54.78 crores only. And Centre's police budget alone came to Rs. 166 crores in 1974, and in all the States it is Rs. 312.93 crores; altogether it is Rs. 478.93 crores. It shows why they cannot spend anything on taking away the land from the landed aristocracy, the big landlords, and distributing it to the landless labourers, to the poor peasants. They can spend money to kill those peasants who will raise their voice against such starvation and misery. I come from a State where these people, the landless labourers, the poor peasants, come by thousands because there is no employment in Bihar.

They come by thousands. When they do not get any employment they come to Calcutta to beg. You see them on every footpath, on every street. They were not born to beg. They were not habitual beggars. They have been reduced to beggary by your Government, by your administration. And who is responsible for that ? You are responsible for that. Is it not complacency to say that it is not the students but anti-social elements who took to rioting ? Sir, it is natural for them to act in this way. If you go into the pages of history this has happened with every ruling class. When their end draws near they forget all the past history; they do not remember it. May I ask who is responsible for the Gaya firing ? Why were the people, even some of the Congress leaders, beaten inside their own houses ? Their ladies were beaten. What action did you take against those police officers who were responsible for such goondaisni ? Did you take to task your own Ministers who ordered "shoot-at-sight" '? Sir I find that Mr. Dikshit has denied this allegation, in the Lok Sabha. You may deny it but all the local newspapers have reported that by the beating of drums and on loudspeakers shoot-at-sight was ordered on the poor people. Have you shot any blackmarketeer or adulterator of food, may I ask ? Sir, I heard this morning the Government say that they were thinking of amending the Act relating to adulteration of drugs. By drug adulteration hundreds of people are being killed every day. But not a single drug adulterator has been either' killed or arrestee" and hanged or shot at. But those poor people, students and peasants who raise their hands against this misrule are being shot at sight. That is how you are running the country. And still you call yourself progressive and democratic. It is a misfortune of the country that you are still ruling the country. You have got no right to remain in the Government, a Government which is responsible for 27 years of miseries in the country, for killing, firing and shooting down of our hungry people has no moral justification to stay in power. Whosoever asks for food is shot down. Whosoever stands by the poor people is shot down. You are taking advantage of the miseries and distress of the people. What else can you expect from the honest opposition except raising their voice against all this mischief ?

There is concentration of land in the hands of a few landlords in Bihar on the one side and on the other there are crores of landless and poor peasants roaming about in the streets of Calcutta for a morsel of food. And if any one fights for these poor peasants, students and middle classes, those who are working in the factories or offices, they are accused of taking advantage of the miseries of the people.

We have heard this pet theory long, long ago. People are not going to be duped by that any longer. So, Sir, I warn them. Have they got the courage to institute any probe into the Gaya firing, the massacre in Gaya, the torture and repression that was let loose there, the firing in Patna, in Betia and in other places in Bihar ? No, they will not do it. Now they are quarrelling about how many Ministers will be there, 14 or 30, or 30 or 46. It is their affair. It is none of the business of the people of Bihar or the people of India. They are not ashamed that when Bihur is burning, when people are dying of starvation, they are quarrelling among themselves, within their own party, as to who will get a seat in the Ministry and who will not, whose faction will get more seats and whose faction will get less. They are not ashamed of it. Here they are giving us sermons on democracy. But they are not able to control their own party. In Gujarat, who is responsible ? On the one hand you have starvation and poverty and the student movement, and, on the other, there is their own factionalism. Their own Chief Minister, who was chosen from here itself, from the Centre by Mrs. Gandhi, revolted when he was asked to resign. Then he went out of the Congress and joined his real place among the jotedars, among the landlords. And they are

[Shri Monorajan Roy.]

organising themselves against your party. What about the people ? They are dying, they are starving and you are not doing anything for them. Sir, that is how they want to carry on their administration and rule this country in the name of progressivism. I am sorry that some people seem to go about with a microscope to find progressivism or reaction—reaction how much 30 per cent, 40 per cent or 70 per cent and "progressive" how much, 20 per cent or 30 per cent or 60 per cent ? I do not know who are progressive. But progressive or reactionary, they all fight among themselves for seats in the Ministry and they are not worried about the starvation of the people, power shortage or any other misery. The miseries of the people know no bounds. To-day's miseries have surpassed all our past records. And in this situation, they are fighting among themslves. If any opposition member raises his voice against that, he becomes reactionary and anti-democratic. Fire him down or put him in jail ! Even the CPI has not been spared. They are also not being spared. If they raise their voice with the people or if they want to remain with the people, they will be crushed, as they have been crushing all opposition parties. I know this Government's days are coming to an end and the people of India will no longer tolerate this situation. For that, I gave you th; warning : don't try to put the blame on the opposition; try to put your own house in order and try to save the people and help the people and not the monopolists and the landlords alone. Thank you.

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : उपसभाध्यक्ष महोदय, मुझे इस बात का बड़ा दुख है कि विरोध पक्ष के नेता इस समय जो निर्णय लेते हैं और जो मांग करते हैं उसका क्या अन्जाम होगा इस पर कतई गौर नहीं करते । शायद बार-बार पराजित होने के कारण या और किन्हीं कारणों से वे यह सोचने में असफल हो रहे हैं कि जो फैसला हम ले रहे हैं और जो मांग हम कर रहे है वह देश के हित में होगी या देश के अहित में होगी । आज सुबह इस सदन में माननीय आडवानी जी ने, जो अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष हैं, प्रश्न उठाया था कि यह सरकार राष्ट्रपति के चुनाव को टालना चाहती है ।

श्री भैरों सिंह शेखावत : यह नहीं कहा था ।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : मैं चुपचाप सुन रहा हूं उनकी बात को, अब मुझे कह लेने दीजिए । उन्होंने यह कहा कि अगर यह प्ली ली जाएगी कि गुजरात की ऐसेम्बली इस समय नहीं है और यह प्ली लेकर राष्ट्रपति के चुनाव को टाला जाएगा और फिर यह मांग की जा रही है कि बिहार की ऐसेम्बली को भंग कर दिया जाए । अब श्रीमान्, आप गौर करें कि एक तरफ तो यह आरोप सरकार के ऊपर लगा रहे हैं कि राष्ट्रपति के चुनाव को टालने की कोशिश की जा रही है इसलिए कि गुजरात की ऐसेम्बली कंस्टीट्यूटेड नहीं है, दूसरी तरफ यह मांग करना कि बिहार की एसेम्बली को भंग कर दिया जाए, इनमें कहां समन्वय है ? कहीं कंसिस्टेंसी है ? कोई कंसिस्टेंसी तो होनी चाहिए आपकी मांग के अन्दर । जो भी आप मांग करें वह सोच विचार कर करें कि उसका क्या असर होगा . . .

(*Interruption*)

श्रीमान्, आपके संविधान में व्यवस्था है कि एक बार चुनाव हो जाएं तो उसके बाद विधान सभा और संसद् 5 साल तक चलेगी । आप आज कहते हैं कि विधान सभा को भंग कर दीजिए । आप कभी यह भी सोचते हैं कि आप वहां बहुमत में आ गये होते और कांग्रेस पार्टी यह मांग करती कि विधान सभा भंग कर दो तो आपको कैसा लगता ? तमिलनाडु के लोग, और भी लोग जो विभिन्न प्रान्तों में बहुमत में है वह आक्षेप लगाते हैं । . . .

(*Interruption*)

डा० राम कृपाल सिंह : केरल में आपने क्या किया? . . .

(*Interruption*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU) : Not only you have the right to speak you have the right to hear also. There cannot be a continuous commentry on the speeches.

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : मैं कह रहा था कि आप जब बहुमत में होंगे और कांग्रेस पार्टी के लोग कहेंगे कि भंग करो ऐसेम्बली को तो क्या हालत होगी ? इसलिए संवैधानिक व्यवस्था को, उसकी मर्यादा को कायम रखने के लिए यह लाजिमी है कि एक बार चुनाव होने के बाद 5 साल तक लोक सभा और विधान सभा चले । (*Interruption*) . . .

श्रीमन्, कहीं कोई लाइन होगी, कहीं कोई समय निश्चित, होगा कि एक बार चुनाव होने के बाद कितने दिन तक विधान सभा और लोक सभा चलेगी ? अन्यथा श्रीमन्, आज ये लोग हारे हैं वह मांग करते हैं, कल को कांग्रेस हारेगी तो यही मांग करेगी । उसका क्या अंजाम होगा ? किसी तरह की संवैधानिक व्यवस्था, किसी तरह की प्रजातांत्रिक व्यवस्था चलेगी या नहीं ?

श्रीमन्, बिहार में जो कुछ हो रहा है, आप यह गौर करेंगे कि यह कब शुरू हुआ । उत्तर प्रदेश के चुनाव का फल आ जाने के बाद यह शुरू हुआ ।

श्री ओमप्रकाश त्यागी (उत्तर प्रदेश) : गुजरात का रिजल्ट आने के बाद हुआ ।

श्री नागेश्वरप्रसाद शाही : एक बात और कह दूं श्रीमन् । आपकी मांग अगर यह है कि भ्रष्टाचार, बेकारी और मंहगाई को समाप्त करने के लिए विधान सभा भंग करो तो गुजरात की विधान सभा भंग हो गई । सारी विरोधी पार्टियां अगर यह प्रस्ताव कर दें कि गुजरात में भ्रष्टाचार, बेकारी और मंहगाई समाप्त हो गई तो मैं कांग्रेस पार्टी से कहूंगा कि देश भर की सभी विधान सभाओं को भंग कर दिया जाए । श्रीमन्, यही हो कि विधान सभा भंग कर देने से मंहगाई, बेकारी और भ्रष्टाचार समाप्त हो जाएगा तो यह जिम्मेदारी आप पर है, ईमानदारी के साथ मांग हो कि आप यह प्रस्ताव पास करें अपनी पार्टी की मीटिंगों में कि गुजरात में विधान सभा भंग होने के बाद कोई बेकारी, कोई मंहगाई और कोई भ्रष्टाचार नहीं रह गया है । यह प्रस्ताव पास कर के आप यह मांग करें कि बेकारी, मंहगाई और भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए विधान सभायें भंग की जाएं ।

श्री ओम प्रकाश त्यागी : बीमारी की जड़ तो दिल्ली में है ।

श्री नागेश्वरप्रसाद शाही : त्यागी जी, सुनिये । कुछ रीजन अप्लाई कीजिए । उत्तर प्रदेश में श्रीमन्, चुनाव का फल आया और कहने लगे कि साहब, चुनाव का फल तो बड़े गड़बड़ तरीके से आ गया और चुनाव का ऐसा फल क्यों आया इस पर विरोधी पक्ष के लोग गौर करें । 30 परसेंट और 34 परसेंट वोटों के बल पर कांग्रेस सरकार वहां बनी हुई है । जनता ने आप को 70 परसेंट वोट दिये और जनता के साथ आप ने गद्दारी की और आपने सरकार नहीं बनायी । इस लिए सरकार नहीं बनायी कि आप में आपस में यह तय नहीं हो सका कि अटल बिहारी वाजपेयी मुख्य मंत्री होंगे या चौधरी चरण सिंह जी मुख्य मंत्री होंगे । दोनों के पोस्टर निकलते थे, बड़े बड़े पोस्टरों में यह छपता था कि बहुगुणा को हटाओ, अटल बिहारी को लाओ । पूरे का पूरा उत्तर प्रदेश इन पोस्टरों से भरा हुआ है कि बहुगुणा को हटाओ और अटल बिहारी वाजपेयी को ले आओ और हमारे मित्र तो कहते ही थे कि चौधरी साहब तो मुख्य मंत्री होंगे ही । मुझे इस में कोई एतराज नहीं, लेकिन जिम्मेदार कौन है । अटल बिहारी जी और चौधरी चरण सिंह तय नहीं कर पाये कि कौन मुख्य मंत्री होगा और इन लोगों ने ही कांग्रेस की सरकार वहां बनवाई और आज दोष देते हैं दूसरों को । 70 परसेंट वोट ले कर सरकार नहीं बनायी और 30 परसेंट वोटों से कांग्रेस की सरकार बनी । कौन जिम्मेदार है इस के लिए । आप जिम्मेदार हैं आप आंख मूंद कर जब वोटों का नतीजा सामने आ गया तो बैठे हैं । (*Interruption*) 66 परसेंट हो सही । आप बैठिये ।

उपसभाध्यक्ष (**श्री वी० वी० राजू**) : आप उधर ध्यान न दीजिए, मुझे एड्रेस कीजिए ।

नागेश्वरप्रसाद शाही : और चुनाव के नतीजे के बाद चौधरी साहब ने कहना शुरू किया कि अब हम हिंसा में विश्वास करते हैं । उन्होंने यह कहा कि सरकार अब चुनाव से नहीं बदलेगी, अब वह हिंसा से बदलेगी, और मैं अपने आदरणीय मित्रों से कहना चाहता हूं कि चौधरी चरण सिंह जी वह व्यक्ति हैं जो एक सेकिंड में प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी जी के साथ चले जायेंगे । आज अगर प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी उन को लें ले तो वह चले आयेंगे । आप याद कीजिए । 1967-68 की कहानी जब चन्द्र भान गुप्त जी और दूसरे लोग उन को मुख्य मंत्री बना रहे थे, वह एक सेकिंड में भाग कर चले गये थे प्रधान मंत्री के पास और उन्होंने उन को वहां का मुख्य मंत्री बना दिया था । (*Interruption*) आप सुनते रहिये । श्रीमन् ऐसे लोगों को ले कर देश की राजनीति चलेगी । मैं बतलाऊं श्रीमन्, कि दूसरे नेता हैं माननीय बीजू पटनायक । मैं चाहता हूं कि देश में बड़ी ही साफ सुथरी और ईमानदार लोगों की सरकार बने । अगर कांग्रेसी लोगों से अच्छे लोग देश में हैं तो उन की सरकार बने और वह चलायें सरकार को मगर यह तो देश को धोखा देना है । जिस समय 1962 में देश की ओर चीन की सेनायें बढ़ रही थीं उस समय हमारे सिपाही कम्बल के बिना सीमा पर ठंडक से मर रहे थे और उन के लिए जो कंबल यहां से कलिंग एयर लाइन्स के जरिये भेजे गये उन को उन्होंने कलकत्ता के बाजार में बेच लिया ।

मैं पूछना चाहता हूं कि कांग्रेस को सरकार को हटा कर ऐसे लोगों की सरकार बनाना ठीक होगा । आप देख रहे हैं बिहार में क्या हो रहा है ? गोलियां चल रही हैं । गोलियां चलती हैं निरीह जनता मारी जाती है । यह बात सही है कि कम से कम ताकत इस्तेमाल होनी चाहिए लेकिन इसमें दो बातें विचारणीय हैं । एक तो यह विचारणीय है कि अगर दुकानें जलाई जाएं, बैंक लूटे जाएं, स्कूल, यूनिवर्सिटीज जलाई जाएं, दूसरे लोगों के घर जलाएं जाएं तो गोली चलेगी या नहीं चलेगी ? क्या छूट दी जाएगी लोगों को इस तरह से घर जलाने के लिए, पब्लिक प्रापर्टी जलाने के लिए ? इस सब कारण से वहां मजबूरन गोली चलानी पड़ती है । यह जरूरी है कि आग लगाकर गुंडे भाग जाते हैं और जब गोली चलती है तो निरीह जनता मारी जाती है । वह गुंडे नहीं मरते जो आग लगाते हैं । बेचारे निरीह जनता, जो सड़कों पर चलती हैं, गांव से शहर में आते हैं, बिल्कुल निर्दोष हैं, जो घरों में, बरामदों में, दुकानों में बैठे रहते हैं वह गोली खाते हैं ।

श्रीमन्, इसको नापना पड़ेगा, तोल करना पड़ेगा कि क्या इस वक्त सरकार को हटा करके उनकी सरकार बनाई जाए जो मांग कर रहे हैं हटाने की ? श्रीमन, हमने

[श्री नागेश्वर प्रसाद शाही]

उत्तर प्रदश में चौधरी चरण सिंह की सरकार को देखा है। माननीय राजनारायण से किए गए वायदों को चौधरी चरण सिंह ने तोड़ा। उन्होंने सवा छः एकड़ की लगान को माफ करने का वायदा करके उनको मुख्य मंत्री बनाया था और मुख्य मंत्री बनने के बाद उन्होंने कह दिया कि यह तो मूर्खों की मांग है, पागलों की मांग है। जो मांग करते हैं सवा छः एकड़ लगान माफ की वह पागल है। संसोपा ने आन्दोलन छेड़ा इसके खिलाफ ; आन्दोलन में वे लोग जेल में गए और चौधरी चरण सिंह ने यह आदेश जारी किया कि ये पोलिटिकल प्रिजनर्स नहीं हैं। ये क्रिमिनल्ज हैं। जेल मैन्युल को उन्होंने अमैन्ड कर दिया और जो व्यवस्था 50 सौ सालों से चली आ रही थी पालिटिकल प्रिजनर्स की, बैरेक्स में बाहर सोने की जो उनको सुविधा थी उसको चौधरी चरण सिंह ने मुख्य मंत्री की हैसियत से बदल दिया। उन्होंने इनको क्रिमिनल्ज बता दिया।

श्री राजनारायण : श्रीमन्, उस समय वह इन्दिरा जी के साथ थे। हमारे साथ आकर चरण सिंह जी बदल गए।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : विद्यार्थियों ने आन्दोलन किया। जिस समय चौधरी चरण सिंह मुख्य मंत्री थे उस समय विद्यार्थियों की केवल एक मांग थी कि बाढ़ आई हुई है इसलिए फीस माफ कर दी जाए। चौधरी चरण सिंह ने इन्कार किया माफ करने से। विद्यार्थियों ने आन्दोलन छेड़ा और यह कहा कि जहां चौधरी चरण सिंह जाएंगे वहां उनको घेरेंगे। गोरखपुर गए। वहां टाऊन हाल के मैदान में उनकी मीटिंग थी . . .

श्री राजनारायण : श्रीमान्, मेरा प्वाएंट आफ आर्डर है। बिहार पर यहां बहस हो रही है और ये उत्तर प्रदेश के बारे में कह रहे हैं।

श्री गुणानन्द ठाकुर : उपसभाध्यक्ष जी, बिहार की चर्चा उत्तर प्रदेश से उठी इसलिए उत्तर प्रदेश के बारे में कहना जरूरी हो गया है।

श्री राजनारायण : हम चेयर से कहना चाहते हैं, चेयर कैसी व्यवस्था कर रहा है ?

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : 5,000 पुलिस का इंतजाम किया चरण सिंह ने। पूरे टाउन हाल को घिरवा लिया।

उपसभाध्यक्ष (श्री बी० बी० राजू) : आप बिहार के मुताल्लिक कहिए।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : बिहार के मुताल्लिक कह रहा हूं। चूंकि विद्यार्थियों पर अन्याय हो रहा है, विद्यार्थियों पर गोली चल रही है, उसी का मुकाबला करते हुए उदाहरण दे रहा हूं। चौधरी चरण सिंह साहब ने श्रीमन् यह किया कि 5,000 पी०ए०सी० से घिरवा दिया, तब भी विद्यार्थी वहां गए अपना प्रदर्शन करने—गोरखपुर टाउन हाल मैदान में। चौधरी साहब ने फर्मान दिया विद्यार्थी नहीं हैं, गुण्डे हैं, इनको मार मार कर मरम्मत करो, ठीक कर दो। यह चीफ मिनिस्टर का वाक्य था कि विद्यार्थी नहीं गुण्डे हैं, उनको मार मार कर ठीक करो . . .

श्री राजनारायण : यह आदरणीय शाही जी का वाक्य है।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : और पुलिस टूट पड़ी उनके ऊपर और मार मार कर सैकड़ों विद्यार्थियों को हटा दिया। मैं श्रीमन् कहता हूं —क्या कोई व्यवस्था इन्होंने बताई, गफूर साहब की व्यवस्था बदले और कोई बेटर व्यवस्था आए तो ठीक है।

श्री राजनारायण : आएगी।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : मगर जयप्रकाश नारायण जी स्वयं कहते हैं कि वे ईमानदार आदमी हैं। तो क्या ईमानदार को हटा कर बेईमान आदमी बैठाएं ?

उपसभाध्यक्ष (श्री बी० बी० राजू) : अब समाप्त कीजिए।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : मैं समाप्त कर रहा हूं।

श्री राजनारायण : वे कांग्रेस के हैं, उनको बोलने दीजिए। शाही जी आप बोलते जाइए।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : श्रीमन्, मैं अपनी आखरी बात कह कर खत्म कर रहा हूं। मैं अपने मित्रों के बारे में कहना चाहता हूं। उनके नाम नहीं लूंगा। कुछ लोगों की नीति है—टु हंट विद द हाउंड एण्ड रन विद द हेयर। कांग्रेस से दोस्ती करके जो फायदा मिले उसे उठा लो और फिर अपने अपोजिशन को इमेज कायम करने के लिए कांग्रेस को गाली भी दे दो। तो श्रीमान्, मैं कहना चाहता हूं, दोनों बातें नहीं चल सकतीं—फायदा भी उठा लो दोस्ती करके और फिर जहां तुम को साथ रहना चाहिए वहां नहीं रहो। 16 तारीख की घटना पर श्री विद्याकर ने, शिक्षा मंत्री ने, कहा था कि जो लोग जाकर कपड़ा फाड़े, जूतों की माला पहिनाए, बेइज्जत किया, वे अपने सी०पी०आई० के वालण्टियर थे। इसलिए, श्रीमन् मैं कहना चाहता हूं दोनों नहीं चलना चाहिए।

श्री ओम प्रकाश त्यागी : शाही जी, इल्लिगल मैरिज का यही हाल होता है।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही : इसलिए विधान सभा भंग करके कोई मसला हल नहीं हो सकता।

SHRI N. G. GORAY (Maharashtra) : Sir, listening to this debate, I was reminded of the famous lines of Shakespeare :

There's a divinity that shapes
our ends,
Rough-hew them as we will.

It was only in the last session that we had an opportunity of discussing the situation in Gujarat. And at that time, if you recollect, Sir, I had said that it is most probable that after Gujarat, similar developments would take place in Bihar. I am really sorry, Sir, that what 1 said has come true...

AN HON. MEMBER : You are a prophet.

SHRI N.G. GORAY : Sir, I do not consider myself a prophet; I do not want to be one. But, Sir, I would certainly like to say that we ought to have been more prudent, because we were warned. So far as Gujarat was concerned, we could see a certain pattern developing, which was not known to us before. It was a complete break with tradition because the whole thing started with the students and never before in the history of this country we had come across a situation where the students took the lead.

SHRI G. LAKSHMANAN (Tamil Nadu) : I want to make a request. There are 70 new Members. Therefore, may I request that whenever any Member begins to speak, let him give his name, party and the place he hails from ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V.B. RAJU) : The Chair is announcing the names. All the parties are so arranged here that you will come to know them. You are going to be here for six years.

SHRI N.G. GORAY : Then, Sir, the students' movement at that time was confined to a few demands. As the days passed, it gathered momentum. The people were drawn into it and the time came when the Government had not only to ask Shri Chimanbhai Patel to resign, but they were forced to dissolve the Assembly itself It is almost the same thing that is happening, repeating itself, in Bihar. But, Sir, my sorrow is all the greater because I find that those who hail tried to analyse the situation in Gujarat had made certain mistakes and the same mis« takes are being repeated in analysing the Bihar situation also. The students are there. Jana Sangh is there. R.S.S. is there. Then the other discontented parties are there. Without coming to any conclusion and without understanding the real fact, the Congress is blaming all these and others and trying to find scape goats. Today's debate lias confirmed my opinion that wc are not trying to find out the truth. The scenario is that Shri Rajnarain and others of the opposition are on one side and the members of the Congress Party are on the other side and there is a slogging match between the two, this side finding fault with those people and those people trying to find fault with these people. How to we arrive at the truth ? What are the deeper causes ? Sir, we mention them only superficially. We say that the prices are rising. But is it enough to say that the prices are rising ? Sir, if there is a rise of 4%, 5 %, 10% or 15 %, one can understand, Sir, as you yourself pointed out, therise is 37 % to 30% and by the end of this year, most probably the rise will be 70%. Hsre is one of the potent reasons why there is so much discontent in the country. The students take up this cause because they are not aligned with any party. Sir, the parties have become irrelevant. Though I belong to a party. I take this opportunity to point out that the situation is growing so fast and so rapidly that the parties are becoming irrelevant. I would like to say that even the Congress Party is becoming irrelevant Let not the Congress Party or the Home Minister take pride in this fact that they have got a majority. I would like to ask what they do with it. You had claimed that you had a massive majority. Somebody said here that somebody is trying to dislodge Indira Gandhi from her seat of power. Sir nobody is trying to do that and nobody has the strength to do it. You have got a massive majority in the Parliament. You have got a massive majority in Bihar. You had a massive majority in Andhra Pradesh, you had a massive majority in Gujarat. But you found that you cannot hold that power. And that is why I am appealing to the congress people to try to understand this. Don't say that Mr. X or Mr. Y or Mr. Z is trying to unseat you. It is you yourself. Sir, if you read today's newspapers what do you find there ? Mr. Ghafbor is rushing back here. Newspapers are openly talking that Mr. Jagjiwan Ram is on this side, Mr. L.N. Mishra is on that side and Mrs. Gandhi is trying to samjao this man and that man. Are you not responsible for this ? Why do you blame the opposition parties ? There are so many factions amongst you that people have lost all faith in you. They say that you cannot control the prices. Sir, if the reports are correct, the Finance Minister himself said that to talk about curbing the prices is wishful thinking. It means that you have given up this atts-

mpt. You know that you just cannot curb the prices.

And, Sir, there is unemployment. You also admit that. The educated people are going about abegging. In Maharashtra, Sir, for one or two vacancies, a thousand people assembled in a small town of Vasmat near Parbhani. The officer who asked them Ho come for interview was absent. Then there was a big hue and cry. And the ultimate result was that two or three people were shot dead. That has now moved on to Aurangabad. In yesterday's newspapers you must have read that four young people were shot dead. I am not sparing my State. I am not trying to find fault with Bihar. I am saying that this particular tragedy is being enacted today in Gujarat, the next day in Bihar and the third day, it may be in some other State. It seems that we are under a curse, entering into a sort of tunnel which has no opening at all. Is that the position ? Are you under a curse ? Is that the position that even if such tragic events repeat themselves in one State and then in another and then in the third, it is not possible for us, who are considered to be the cream of the people, to sit; together and try to find out what is wrong with this country ? Sir, what is wrong with Bihar, ? What more could nature give you ? Such mighty rivers like the Ganga, Sone, Gandak and Kosi and such fertile land ? There is hardly a mineral in the world which is not there in Bihar. There are people who are going hungry. The land is thirsty. But there is no scheme to give water to the thirsty land. When coal is dug up, it cannot be taken to the consumer. These are the hard facts which are creating all this discontentment. It is not Jayaprakash Narayan. You must try to understand this. When I think of Jayaprakash Narayan, I am not thinking of 1942. I am thinking of as recent an event as what happened in Madhya Pradesh. When the dacoits whom you could not control could only think of one man to whom they would like to surrender. Have you forgotten all that ? Simply because he has said that in Bihar he stood solidly behind the students who are asking for the resignation of Mr. Ghafoor and for the dissolution of Assembly, you cannot blame him. The Congress should have more imagination. They should know who is their friend. Their friend means a real friend of democracy in this country who is the real riend of the toiling masses, who is working for them for the last 25 years without asking for any job, any office or any pretigious post and who is working night and day for the common man, and the common man recognizes him. So Sir, I would like to most humbly tell the Home Minister—he has made a good statement— that it is not as if the whole country is divided between the Congress and the opposition.

Sir, there are hundreds and thousands and millions of people in this country who would really like to have two square meals a day, even one square meal a day, who would like to go about their business honestly, who would like to live like respectable citizens and they do not want anything more than that. But, we are trying to politicalise everything. I thought Sir, when Bihar was taken up for discussion, that there would be some heart-searching and people would become introspective and find out as to why it was happening. I hav not heard a single speech like this from those Benches nor, I am sorry to say, from the Opposition Benches. Let them try to go deeper and try to be introspective and search their hearts and come to certain conclusions. I would like to warn the Opposition also, though I myself belong to the Opposition.

Sir, there is a saying : Do not ask for whom the bell tolls. It tolls for thee. It is a very pregnant saying. Do not suppose that because this bell is tolling, it is tolling for the Congress alone. It will toll for all the Opposition parties also. It is tolling the doom of democracy. It is time that we wake up. I would like Umashankarji, I would like Indiraji and I would like others to see to it that all this corruption, all this nepotism and all this inefficiency is rooted out. They must take a firm decision to do it. Otherwise, we will be only abusing each other without solving the basic problem and we will drift. It will be very difficult for us to have any Plan, whether it is Fifth Plan, or Sixth Plan. Nothing will happen. Can you implement any Plan in Bihar in this atmosphere 1 Can you do it in Maharashtra ? Can you do it in Gujarat ? Sir, we are thinking of so many things that we shall do. We say that so much of coal will be dug up, so much of steel will be mannfactured and so many railway lines will be constructed. Sir all this appears to be moonshine. When we look at the present situation in the country, this country cannot plan. This country cannot implement any Plans. This country cannot bring about the welfare of the people. We cannot implement any schemes. That is what we are coming to.

Sir, I would like to appeal to the Home Minister let him not think that we are trying to indulge in assassination of character. But, let him take note of this fact that in the lobbies, in the Central Hall, in the cities like Bombay, where they collect money, there are people who come and tell us that in such and such a hotel a particular Minister was sitting and there they had to give him money. How can you hide these facts from the people ? I am not mentioning any names. It is not necessary at all. But, there are people who say like that. They told us that they gave money to a particular Minister in a hotel called "Nataraj" in Bombay before the elections took place. Do you mean to say that they never tell us. They make a grievance of it to us and they tell hundreds of people. What remains of the credibility of the Government ? There is no credibility. People tell themselves, all right if they are there in majority or they are there in office, if they cannot unseat them by constitutional means, then they will try to unseat them by some other means. Try to understand why is it that people are talking like this.

If there is violence why is it so ? If it is necessary, we shall resort to it. Why are the people talking like that. Do you mean to say that people like to indulge in violence. Don't they know that it is the common man who gets shot. No leader ever gets shot. Sir, during last year alone more than 200 people might have been shot dead. Is there a single leader who has been shot dead. It is the common man, it is the young man, it is the young people, the new generation to which we look with so much hope, it is they who are being shot dead like birds.

And who is doing it ? Our own jawans; our own police. The young police shooting down a young man—may be his brother, his cousin. What has happened to the police ? Yesterday, Sir, I read that in Aurangabad six people were wounded out of whom four died That means it is "Shoot to kill". Can't you shoot below the waist ? Can't you shoot in the air ? Must you shoot always to kill the people ? How many people have died since independence, since the last four or five years ? Just have a tally and you will stand aghast. Is it what independence was meant for ? Is it democracy ? Is it a non-violence ? Does it mean that the Government which has police and army has a licence for violence ? This sort of diehardism will not work. You must show that you are trying to be as non-violent as possible. Some of the police, even at the risk of their own lives, must try to save the situation and not be trigger-happy.

(Time bell rings)

I would like to appeal in the end that Bihar is another warning. This is the second time the bell has rung. All of us must wake up. I would like to most respectfully submit to Jayaparakashalso that he also must wake up. You just cannot play with revolution. I am not against revolution. Theoretically I am not against violence either though I would not like to indulge in that. Theoretically, therefore, I am not against revolution. But I would like to say to Jayaprakash that if in Bihar you think nothing short of the uprising of the common man, nothing short of the dissolution of the Assembly, nothing short of dismissal of the Ghafoor Ministry is going to work and if you think that is the only solution, then you must not shirk to take the responsibility after this particular thing is achieved. There is no vacuum in politics; there cannot be any vacuum in politics. You just cannot say "All right, I have turned this ministry out now; let things take care of themselves". And, therefore, I wold like to appeal to the party in power as well as to the parties in opposition to see to it that we just do not ask the people to rise in revolt or try to drown that revolt in blood. But, both of us have a particular responsibility and a duty towards democracy and both of us must accept this challenge. If we do not accept this challenge, then, Sir, I feel there is going to be nothing but days of darkness. Thank you.

श्री नत्थी सिंह (राजस्थान) : उपसभाध्यक्ष महोदय, अभी इस सदन में कहा जा रहा था कि बिहार जल रहा है ।

[THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) in the chair.]

बिहार में क्या जल रहा है ? बिहार कैसे जल रहा है ? यह बात सही है, बिहार में सर्चलाइट का आफिस भी जला है, यह बात भी सही है कि बिहार में सरकारी दफ्तर भी जले हैं, यह बात भी सही है कि बिहार में सरकारी बसें भी जली हैं, और यह बात भी सही है कि बिहार में उनके शव भी जले हैं जो हिन्दुस्तान के ऐसे ही नागरिक हैं जैसे हम इस सदन में चुने बैठे हैं और जिन पर गोली चली और गोली के कारण मौत के घाट उतरे । उनके शव भी जले हैं । और इस सदन में बैठकर हम कभी खुश नहीं हो सकते, इस बात पर दुःख प्रगट किए बिना रह नहीं सकते

[श्री नत्थी सिंह]

कि बिहार में जो जो जला है वह हमारे लिए सोचने का विषय है, विचारणीय विषय है। लेकिन बिहार में कुछ और भी ज्यादा जला है, कुछ महत्वपर्ण चीजें जली हैं, कुछ हमारे सिद्धांत भी जले हैं।

यह सही बात है कि बिहार में महंगाई है, सारे हिन्दुस्तान में महंगाई है, बिहार में भूखमरी है, बेरोजगारी है, पिछड़ापन है और वहां के विद्यार्थी नौजवान, वे नौजवान जिस पीढ़ी के प्रतीक इस सदन में हैं, जिन्होंने आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया है, वे बिहार के नौजवान आज की इस महंगाई से, अभाव से पीड़ित हैं और छात्रों की समस्याओं के कुण्ठित हैं, उनके दिल में आग है कि इस समाज को कैसे बदलें? हम जानते हैं, समाज में जिस तरह की खराबियां आई उनके खिलाफ आज के नौजवान को, किसान को, मजदूर को, जनता को, अपनी आवाज बुलंद करने का हक है।

लेकिन आज हमें यह सोचना पड़ेगा कि क्या जनतंत्र को भी हम दांव पर लगा दें, उस जनतंत्र को जिसकी प्राप्ति के लिए हिन्दुस्तान ने कुर्बानियां दी हैं, हिन्दुस्तान के लोग जेल में रहें हैं, फांसी पर चढ़े है। आज यह परिस्थिति हमारे सामने है जहां हम कहते हैं कि गफ्फूर की मिनिस्ट्री भंग हो, वहां यह सोचना पड़ेगा कि जनतंत्र का तरीका कौन सा हो।

डा० रामकृपाल सिंह : जो केरल में अपनाया गया।

श्री नत्थी सिंह : मैं केरल की बात भी कह दूंगा। हम उन लोगों में से रहे हैं जिनका आजादी की लड़ाई में हिस्सा रहा है, जिन्होंने राजनारायण के साथ सोशलिस्ट पार्टी में भी जेल काटी है। ये बातें करके आप हमारा मुंह बन्द नहीं कर सकते। हम जानते हैं आज देश किस परिस्थिति में है। मुझे शिकायत नहीं है जनसंघ के भाइयों से, मुझे शिकायत नहीं है स्वतंत्र पार्टी के भाइयों से, मुझे शिकायत है उनसे जिन्होंने समाजवाद का नारा लगाया, जो समाजवाद के रहबर बने, जिन्होंने कहा है कि इस देश से विषमता मिटानी है, गरीबी मिटानी है और उसके बाद इस देश में समाजवादी समाज की स्थापना करनी है। आज हो क्या रहा है? एक विधान सभा भंग हुई, दूसरी विधान सभा भंग करो। आज विदेशी पैसा हमारे देश में आ रहा है। विदेशी लोगों की आंखे लगी हुई हैं। वे चाहते है कि देश में अराजकता फैले, अराजक तत्व बढ़ें और वे लोग इस देश के अन्दर किसी तरह प्रवेश कर सकें, फिर वह आनन्द मार्ग के जरिए से हो या और किसी जरिए से हो। जो समाजवाद की बात कहते हैं या अपने को समाजवादी कहते हैं वे उनके चंगुल में आ जाएंगे तो यह देश के जनतंत्र पर कुठाराघात होगा। आज सोचना यह है कि हम इस जनतंत्र को बचाएंगे कैसे?

1942 की बात हुई। मैं इतने पीछे नहीं जाना चाहता मैं चार सालों की बात कहना चाहता हूं, मैं 67 की बात कहना चाहता हूं, 69 की बात कहना चाहता हूं, 71 की बात कहना चाहता हूं। और 74 की बात कहना चाहता हूं। हिन्दुस्तान में 67 में एक परिवर्तन आया। वह परिवर्तन यह था कि एक पार्टी का राज टूटा, संविद सरकारें बनीं, लेकिन उसके बाद जनता का मोह भंग हुआ। उन लोगों ने कहा था क्रांति करो, कांग्रेस को बदल दो, उसके बाद देश में अमनचैन आएगा, एक सुन्दर विकल्प आएगा लेकिन हमने देखा,—भुगता, विकल्प सुन्दर नहीं आया, लड़-खड़ा कर गिर गया और लोग कहने लगे कि जो शासन में आए हैं, वे कांग्रेस से अच्छे नहीं हैं। उसके बाद हिन्दुस्तान की राजनीति में एक राजनीतिक संकट आया। लोग कहते है कि आर्थिक संकट है, आर्थिक संकट तो है ही, लेकिन उसके मूल में हिन्दुस्तान में राजनीतिक संकट है और वह राजनीतिक संकट यह था कि 67 के बाद दो तरह की राजनीति चली। हिन्दुस्तान का हर दल टूटा। कोई दल नहीं कह सकता कि वह टूटा नहीं। 67 के बाद एक तो सुविधा की राजनीति चली, दूसरी सिद्धांत की राजनीति चली। किसी प्रकार सत्ता में आ जाए, यह सुविधा की राजनीति थी। मुझे यह कहते हुए संकोच नहीं कि 69 में श्रीमति इन्दिरा गांधी ने हिम्मत की, कांग्रेस टूटी, कांग्रेस तोड़ी, लेकिन सिद्धांत की राजनीति पर। हिन्दुस्तान के गरीब के लिए उन बैंकों के लाकर खुले, जो चन्द मुट्ठी भर पूंजीपतियों के हाथ में थे। उस वक्त की देश की राजनीति का तकाजा था कि देश को किधर ले जाया जाए। उस समय सिद्धांत के आधार पर बैंकों के राष्ट्रीयकरण द्वारा गरीबी मिटाने के लिए एक कदम बढ़ाया गया इसी संसद में प्रिवी पर्स उन्मूलन का बिल आया। मैं उन दिनों राजस्थान विधान सभा का सदस्य था। और कमेटियों के सिलसिले में यहां आया था, मैंने दोनों सदनों की कार्रवाही देखी थी उस वक्त। बहुत से नेतागण थे जो प्रीविपर्स उन्मूलन के पक्ष में थे, लेकिन सुविधा की राजनीति यहां तक बढ़ी कि आज वे उनसे मिल रहे हैं जिन लोगों ने इस बात के लिए जोर दिया कि राजाओं के प्रिवीपर्स बने रहें। उसे हम भूल नहीं सकते। जो हिन्दुस्तान की रियासतों में पैदा हुए हैं, जिन्होंने उन रियासतों के आन्दोलन में हिस्सा बंटाया है, जिन्हें राजाओं ने दुहरी गुलामी में जकड़ रखा था वे यह भूल नहीं सकते कि कोई दल कहे कि राजाओं के प्रिवी पर्स बने रहें—समाजवाद के रहबर यह कहें, उन पार्टियों के साथ गठबंधन करें चाहे वह सात सवार हों या आठ सवार और फिर कहें कि हम सिद्धांत की राजनीति चला रहे हैं। इसीलिए आज जनता की निगाह कांग्रेस पर है। 69 के बाद 71 में इतना भारी विश्वास लेने के बाद क्या कारण है कि आज युवक गुस्से में हैं, क्या कारण हैं कि किसान परेशान है, क्या कारण है कि मजदूर के मन में बेचैनी है?

उसके मन में एक सही बात है । वह चाहता है कि सेंस आफ अर्जेन्सी हो, उसको कायम रखिये, उसमें ढीलापन नजर आ रहा है । लेकिन सुविधा की राजनीति के हिसाब से हिन्दुस्तान में जिन्होंने समाजवाद की खिलाफत की, हिन्दुस्तान के गरीबों को हक दिलाने की खिलाफत की, उनके साथ मिलकर तथाकथित समाजवादी हिन्दुस्तान को जब एक नई दिशा देने की बात कहते हैं तो लोग यह सोचते हैं, जनता इस बात का गौर करती है कि हिन्दुस्तान की राजनीति में नया सृजन हो रहा है या सत्ता की प्राप्ति के लिए सुविधा का एकीकरण हो रहा है । मैंने बहुत चाहा था, बहुत सपने देखे थे कि गरीबी, भुखमरी विषमता के खिलाफ जो युद्ध छिड़ा हुआ है उस महाभारत में लोग भीम का पार्ट अदा करेंगे । लेकिन मुझे दुख होता है कि डा० लोहिया के उठ जाने के बाद ये लोग भीम का नहीं दुस्शासन का पार्ट अदा करते हैं । मैं इस बात से इत्तिफाक करता हूं कि ये सारी जो घटनायें हो रही हैं ये देश को चौंकाने वाली घटनायें हैं गुजरात को हम यह कहकर छोड़ सकते हैं कि गुजरात पाकिस्तान से लगा हुआ है । इसलिए जब जनता में आक्रोश बढ़ा तो हमने विधान सभा को भंग कर दिया । बिहार में अगर यह बात दोहराई जाती है तो हिन्दुस्तान में जनतंत्र के लिए खतरा है । इसलिए सारी चुनौतियों का मुकाबला करना होगा और इसका मुकाबला करने के लिए हमें याद रखना होगा कि वह गरीब हमसे क्या क्या उम्मीद रखते हैं ।

कीमतें बढ़ी, । आप कह सकते हैं इसमें इंटरनेशनल राजनीति आई, इस पर हमारा कंट्रोल नहीं । लेकिन मैं अपने दल से कहना चाहता हूं कि अगर वह सेंस आफ अर्जेन्सी होती, वह प्रायोरिटीज़ हमारे दिमाग में रहती तो आज बिहार में गुजरात में चाहे कोई भी दल हो, जनता के आक्रोश को अपने साथ नहीं ले जा सकते थे । तेल की तेजी के साथ साथ अगर हम यह फैसला कर देते कि प्राइवेट कारें नहीं चलेंगी, तेल केवल सामूहिक ट्रांसपोर्ट को मिलेगा, किसान को पैदावार बढ़ाने को मिलेगा तो आज युवक का मन कुछ और होता । इसलिए हमें यहां बैठकर सोचना होगा कि हम जो आसानी के साथ का रास्ता अपनाते हैं उसकी बजाये देश की जनता का मनोबल जो हमने जीता है उसको कायम रखने के लिए और इन चुनौतियों का जवाब देने के लिए, उनका मुकाबला करने के लिए देश में जनतंत्र की रक्षा करने के लिए हम समाजवादी समाज, की स्थापना हेतु सिद्धांत की राजनीति चलायें और सैद्धांतिक ध्रुवीकरण हो । जब यहां अपनी बात पूरी नहीं कर पाते हैं । तो जनतांत्रिक व्यवस्था में अहिंक सविनय अवज्ञा आन्दोलन के हक को कायम रखने के लिए, व्यक्तिगत आजादी की अक्षुण रखने के लिए हमें सेंस आफ अर्जेन्सी को बनाये रखना है ताकि इस देश में जनतन्त्र सुरक्षित रहे ।

इन शब्दों के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं ।

SHRIDWIJENDRALAL SEN GUPTA (West Bengali : Madam Vice-Chairman Bihar is a lesson for all of us. In fact, it is an accident that, after Gujarat, incidents of such a big mag mtude took place in Bihar. It might take place in any other part of India because the problems everywhere are the same. So far as West Bengal is concerned, which is'the neighbouring State of Bihar, there is the same problem of scarcity of foodstuff, price-rise and may be corruption is not there to the extent prevailing in Bihar or in Gujarat. I am not on that question now I am on the question that there has been an upsurge and it would be wrong to underplay the same. We must go deeper to diagnose the disease. The disease is that our Government has failed to discharge its elementary duties.

There may be a thousand and one excuses But the facts are there. Everybody wants necessities of life. And if there is a failure on the part of the Government to meet the same what will the people do? They have one alternative that is to tolerate; that is sympathetic tolerance or sympathetic reaction and another will be intolerance and violent reaction. Intolerance and Violent reaction stem from a feeling that this Government is a bad one.

AN HON. MEMBER : There is a third one.

SHRI DWIJENDRALAL SEN GUPTA- Madam Vice-Chairman, fortunately for us we have yet cases of sympathetic tolerance in most of the States and violent reaction only in a few cases. I do not know what will happen if si multaneously more States react violently I am not canvassing in favour of violence-1" am trying to analyse the disease and the root cause of it. My friends from the Congress side have argued, and argued eloquently, that ihey have the backing of the people, that is why they are there in the Government. So, democracy demands their survival. Democracy means that they should continue in Government for full term of five years because they have got the people's mandate. Normally, it is so. But who can deny that election resets are determined not by the people but by the purse, big money. At least money plays a very important part. And when you collect money, you do not go to the poor people, you go to the big people and when you go to them, then you promise them some thing if not straightaway, at least tacitly. And when you do that thing, you lose the moral right to claim that you are running the Govern-

[Shri Dwijendralal Sen Gupta] ment by the will of the people. More so, the people's reaction becomes violent when they see that many of their ills and sufferings are due to the fact that the price rise goes to the benefit of the big pepole who financed the party in power and correspondingly, the poor people's suffering is certain and absolute. This is a vicious circle. You call it democracy. People refuse to take in as democracy. If you believe in democracy, you should create a climate so that people can rightly believe that you have behind you the mandate of the people in a fair and free election. If in a free and fair election there is the mandate of the people in the strictest sense of the term, then there is democracy, and then you have the moral right to say, "Do not disturb us for five years. Give us more time." Otherwise, people will rise in revolt. They will say, the ruling party have come to power through unfair means, and we have a right to oust them. So if you find that there are angry demonstrations or there is'a demand for the dissolution of the Assembly or for dissolving a Cabinet, apparently it may be undemocratic, but at the root of it you will find a very serious disease.

Nobody trusts that these elections are fair and that these governments are legal and have a moral right to rule over the people. That is a patent fact. So who destroys democracy is a big question? Is it the Opposition or those who have come to power by illegal means has got to be decided.

Madam, there are speakers on both sides who have eulogised, and very rightly over the contribution of Shri Jayaprakash Narayan. But there is one party, the C.P.I., which has openly come out in criticism of Shri Jayaprakash Narayan and has termed him as an American agent, that he is in the pay of the big business. I refer to the UNI news, alleged by Shri Bho-gendra Jha, M.P. at a Bihar Sharif meeting, published in today's paper. All this is pure character assassination. 1 trust the Communist Party is a responsible party...

SHRI KALI MUKHERJEE (West Bengal) : Your trust is wrongly placed.

SHRI DWIJENDRALAL SEN GUPTA: You know them better. What do they gain by such mean accusations ? I ask. By making such irresponsible utterances do they not make themselves the object of ridicule ? Now people say that these people are here to say something which serves their ulterior motives.

Madam, if there is one man in the country who without a plebiscite or referendum can be acclaimed as a national leader it "is Jayaprakash Naryan. If anybody can lead the country to real democracy and if there is anybody who possesses real sense of democracy it is Jayaprakash Narayan. Unfortunately, he is not in politics. Had he been in politics perhaps the shape of politics would have been different. Madam, while I admit that the Congress is the biggest party in India and the others are in a microscopic minority, that is not enough credential of the democratic character of Congress. The Congress is running the whole show because of the goodwill earned by the erstwhile Congress with co-operation of all of us, without much in stock-in-trade of their own. This goodwill was not earned by only those who sit on that side of the House. We on this side of the House were also once upon a time in the Congress, and we were in it in its very bad days. But we left the Congress when they came to power. Therefore you have to take this historic fact into account. Now if you really want to correct yourselves you have to see onething. Reconsider the position as to whether you have come to power by honest or dishonest means. If it was dishonest, you have forfeited the right to rule. I agree you win at the election. But you must know that election is not the last word on the subject. You have won many elections. But ultimately you have faild. If you really want to succeed, if you really believe in democracy better learn to lose elections and sit in the Opposition. You have developed a strange feeling that unless you are in power you cannot serve. You have been in the Opposition in some States for some time. But the unfortunate position is that in most States you came to power after that, by unfair means, not with the support of the people.

Now, coming to the episode of Searchlight. It is mysterious. Unfortunately, our Home Minister is here.. .(Interrptions) ..... unfortunately because I never thought that would have to tell something unplatable in his face. I am sorry that he gave the whole credit for Gujarat uprising to the R.S.S. and the Jana Sangh. Thereby he has lionised the RSS and the Jan Sangh. What terrible harm he has done to the democratic movement, he does not know. The same thing he did in respect of Bihar also. In West Bengal when there is some trouble you give the whole credit to the CPM...

SHRI KALI MUKHERJEE : Which they do not deserve.

SHRI DWIJENDRALAL SEN GUPTA: .. as if there is no democratic movement to party there. There is a democratic movement in every place. Do not isolate one party to black-mail it; it will not pay you dividends. You do not like that the Jan Sangh should be pampered You do not like that the CPM should be pampered. You do something to blackmail them. But ultimately it helps them. This is the anlaysis of the political situation which you should take note of. And what is the position ? After the first day's incidents in Bihar, the Home Minister, a responsible man, said the RSS and the Jan Sangh have done, it, the Anand Marg has done it.

SHRI RAJNARA1N : And the CIA.

SHRI DWIJENDRALAL SEN GUPTA But five days after that, the Chief Secretary of Bihar Government says "We are still exploring to find out who is responsible". So, what was your source of information ? If the Chief Secretary of Bihar does not know who is the culprit and who has done it, how can the Home Minister from here, from Delhi, give such a statement ? It is an irresponsible statement. That is why I did not like to tell him this to his face. No body wants to hear the truth.

Now, Madam Vice-Chairman, we have developed a habit of finding out some scape goat, but we will not look to ourselves. If we want to correct ourselves, we must look to oui selves first and then to others around us. That is the proper way. And that is the way how Mahatma Gandhi at least tried to do things. if you were your own enemy, you do not require others to be your enemy. That has been position of the Congress itself. (Time bell rings). Madam, one thing more.

In the "Searchlight" affair one CPI M.L.A. was arrested. Am I correct, Mr. Rajnarain ?

SHRI RAJNARAIN : Yes.

Dr. RAMKRtPAL SINHA : Yes, Mr. Lai Behari.

SHRI DWIJENDRALAL SEN GUPTA: The CPI M.L.A. was arrested certainly not out of malice. If a Jan Sangii M L.A. is arrested, we can understand it is out of malice. If an SSP man is arrested, may be it is out of malice. But the CPI is a party which is friendly to the congress and a CPI M.L.A. was arrested near the "Searchlight" office. What does it indicate? Unfortunately none of them is present there. No one of them is here. Please correct me if I am wrong. I have no malice against the C.P.I. But I want certain facts. The CPI people read oat some papers, some letter to a Government officer. How did lie get that letter ? So, it appears to be a planted letter. Some letter allegedly by a Jan Sangh leader was read out. How did he get the original ? So, it also appears to be false or a planted. I am surprised that these friends who speak like this consider others to be fools, as if Members shall accept without analyses whatever they will say, whatever they will place before the House. If you have got the cyclo-styled copy, you must have the original. Where is that ? A CPI M.L.A. was arrested, and these are the letters. The whole thing is bunkum, if read together. Then the next question is, why the Government did not respond to the frantic requests of the "Searchlight" authorities for help and protection ? The "Searchlight" authorities were making frantic efforts. Is the Bihar Governmsnt of the Central Government run by the Jan Sangh or the SSP or by the Congress ? Why didn't the Congress give police help ? Why didn't they do their duty ? All these only suggest that there was something clandestine in it and the Congress owes an explanation to this house. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Mr. Home Minister.

SHRI NIREN GHOSH : Madam, before the Home Minister begins I would like to make a humble suggest;on to him also so that he can clarify it in the course of his speech. Does the Government feel that some how or other the people of India have lost confidence, that the Congress cannot deliver the goods ? Does the Government feel that real social revolution....

SHRI D.D. PURI (Haryana) : Madam is there any point of order in it ? He is making a speech. You called the Minister.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI UMASHANKAR DIKSHIT) : Let him complete the question.

SHRI D. D. PURI: He can make his points afterwards.

SHRI NIREN GHOSH: No, the Minister can clarify my points during his reply now. I am making a submission. I am not raising any point of order. You are an old Member. Please do not interrupt me. Does the Government feel that in the situation we are confronted with, social revolution in the real sense is the only remedy, and, if that does not occur or is not brought about, chaos is going to ;egulf the country and nobody can check it ? What is the position ?

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : Madam Vice-Chairman, I was here at the commencement of the discussion on the existing situation in Bihar, and althougn I was out for about an hour or a little more, I have, on my return, gone through the notes which my colleagues have taken of the speeches made in the meantime. I do not know whether it is the prooer way to do so in replying to a debate of this kind, but I wish to refer to the last two speakers before I make general observations on the points mads by all the honourable Members who have spoken on this occasion.

Madam, my friend, Shri Goray, whenever he intervenes, speaks with effect. We do not always agree with him. If we had agreed, we would have been in the same party, on the same side. But whatever he says, one feels that it comes from the bottom of his heart. He does bring his personal emotion and his whole being seems to support the stand that-he takes. Madam I take the observations he made in good part; in fact, in the very spirit in which he has tendered his advice. But both he and Mr. Sen Gupta have tried to oversimplify the situation, and also, my friend, Mr. Niren Ghosh. Mr. Niren Ghosh thinks that the entire situation can be divided into two parts; 'yes' to his question, 'no' to his question. The question he has put is whether the Government, the Congress Government, the ruling party Government, has lost the confidence of the people or has not lost the confidence of the people. He has also referred to the social revolution. I do not at all deny. 1 maintain, that the country has been passing through a multi-pronged revolution, a social revolntion, an economic revolution, and a revolution from backwardness to modernity. A society, a country, steeped in agricul tural civilisation, has been, under the guidance of a great leader like Jawaharlal Nehru, frantically trying to transform itself from a slow-moving agricultural society into a modern industrial-cum-agriculturat society where it can take part along with the other nations of the world in the multi-faceted process of development through which the world, the humanity, is passing. But what has happened in these two places just cannot be called social revolution. Is that his idea or definition of a social revolution ?

SHRI NIREN GHOSH : I can give a definition. It is there. It is a thorough transfer of power from the landlord and bourgeois classes to the common people. That is the social revolution.

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : Shri Goray did strike a responding chord in my mind. He said that we—both Treasury Benches and opposition parties—are politicali-sing everything. Modern life is such that Government takes the responsibility for almost everything that affects the life of man—from birth to death. We cannot go back to the laissez-faire condition where die individual was left to his fate and when Government considered themselves responsible only to provide some sort of law and order or to protect people from thieves and robbers or from outside invaders. Today the conditions are different. This country and the entire human society have advanced far, far ahead from that position. Today we have to make arrangements for the pregnant mother, for the little child after he or she is born, for his free primary or even secondary education and for other convenient conditions for his subsequent and higher education. We have to make arrangements for his medical care, for provision of employment and so on right upto the stage when oldage pension has. to be given...

SHRI DWUENDRALAL SEN GUPTA : And his funeral expenses.

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : In such a situation no Government can completely shirk their responsibility and merely say that 'we shall take a detached view of the situation'. The whole life is politicalised. The processes of Government and the processes of political parties are so intermingled or move so close to each ^ther that it is not possible, however much we try, to depoliticalise our lives. What are we expected to do in the situation that has developed in a year or so ? What has happened inside the country and what has happened outside the country ? What are the happenings

which have brought about the present situation. Is it not correct that but for the fact of unprecedented shortages, this situation would not have arisen ? Is it not correct that this high-jump in price levels is prevailing in most parts of the world, particularly developed communities and is it not because of induction of large amount of currency into the system ?

Is the present situation not an amalgam not a consequence of the totality of these forces operating more or less at the same time in a particular sequence ? Now, is it implied that the big price hike that has taken place in the other, countries has not affected us ?

SHRI MONORANJAN ROY : In the capitalist countries.

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : Yes, in the capitalist countries. Capitalist countries are also countries and they constitute quite a large part of the world. Now, we have chosen a singular part and we have not gone the capitalist way nor have we gone to the other way which quite a large part of the world has accepted. But we have chosen a difficult path and a unique path for which there is hardly any model to follow. There has been a Labour Government in England and there is one now. In Australia and Canada also there have been Labour Governments and the Scandinavian countries are called socialist countries with democracy functioning fully in their governments and their parties. But is there any country in the world even remotely similar to India with all its .conditions, with its history and with its castes and with its 200 years of imperialist subjugation and economic suppression ? There is no country in the world with similar conditions and we have to chalk out a path of our own. Therefore, Madam, my request and my counter-appeal, as it were, to friends like Gorayji is this : We have come to highly complicated situation partly, of course, due to conditions which we were not able to control and partly due to errors which, in the State Governments, in the working of the Central Government, in the working of the party, could have, very probably have, occurred. Despite all these things, what are we expected to do ? I started asking this question. Is it our responsibility or not to act when a house is being burnt, when somebody is being attacked or when an individual is intimi-d ted into doing something which he does not want to do ? Are we to behave as detached spectators, stand by and let all these things to happen ? Madam, so long as we are in the position in which destiny has placed us, we cannot shirk that responsibility and we cannot say, 'Let anything happen. Let anything happen to the men and women. Let property be destroyed or let the houses be burnt" and so on. Some friends on the other side referred to the burning of the house of the Assembly Secretary and he was making a grievance of the fact with some justification that relief did not reach in time. Of course the Secretary himself had walked out of the house as also his family. All the same, that very undesirable thing happened for which we feel really sorry. But, in such circumstances, however unpleasant the duty may be, it is a duty cast upon us to afford such protection with the help of the police forces that the Government has at the Centre and in the States and, in this respect, even if it means unpopularity, misunderstanding and misapprehension, Madam, we are helpless in a matter like this, becausethere are certain duties which no government can really avoid or shirk.

Now, Madam, it is said that there is a pattern, there is a similarity of pattern, between what happened in Gujarat and what has happened in Bihar and we have been warned that this disease might spread and that serious consequences might flow from it.

Madam, I am making a proposition, with all due respect to the Opposition, that if shortages had not occurred, if prices had not risen as they have risen,—and I still claim that this has happened due to circumstances completely beyond control—then I can say without fear of contradiction that none of these revolutionary methods, for which so much is being claimed, would have been resorted to.

Some friend here was saying that we were giving credit to Jan Sangh by saying that Jan Sangh and RSS have done this. If you call it a credit, if you call misleading the people matter of credit or if you call instigating the people a something of credit, well, Jan Sangh may have all of it. I was really surprised that Mr. Bhupesh Gupta, who often gives expression to his righteous reaction and anger, reacted in the same way. What he meant was : Why are you not giving this credit to us ?... (Interruptions). For one thing, Madam, if they do anything like that, we will not hesitate to

[Shri Umashankar Dikshit.] lame them. They have taken jolly good care on very single occasion of this character that they separated themselves from others. But what has happened in Bihar ?....

DR. RAMKRIPAL SINHA : What was Lai Behari doing ?... (Interruptions).

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : If you write to me, I will give you complete, accurate information on any point you want.

I stated in the other House, and I am repeating here, that we have given certain information, based on reports which the State Governments has given to us, which we have got checked by responsible officers of our own, who have gone round, who have met people, who have seen things, who have taken statements. And on that basis, we have made the statement in that House. I will repeat it here that only eight people were killed, that only fifteen persons were injured, that only eight rounds were fired—two rounds, one round two rounds, one round and two rounds...

(Interruptions) ;

DR. RAMKRIPAL SINHA : Madam,...

(Interruptions)

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : I am not afraid of his questions. But let me state the facts which are related to the situation. Between about 3 o'clock and 5.30 P.M., if shooting takes place, if people are injured, if somebody dies, then is it suggested that those injured people are spirited away, or some of the dead bodies are cremated or buried ? who can do that ? This happened in daylight. When rounds were fired at a crowd in three places five times, large groups were there. As I said in the Lok Sabha, I again repeat—it is quite possible, though I do not think it has happened— that someone may be thinking that if he made a complaint or if he showed his injury to the police, he might get into trouble. Thinking that he was doing something wrong in the crowd, he might have kept himself back. I made an appeal then, and I again make this offer here, that anybody who was injured and therefore did not come up for fear of getting into trouble— if he comes forward and makes a statement— will not come into trouble, because we want to be hundred per cent certain that the facts we state are correct.

Now, for anybody to say that 100 people got killed or 200 people got injured does not stand to reason.

(Interruptions)

DR. RAMKRIPAL SINHA : Madam, on a point of information. I gave a list of the names.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : You cannot ask for information in the midst of the speech.

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT ! We are not going away. We are here. You can ask for a statement at any other time. This is not the last day.

DR. RAMKRIPAL SINHA : I had given the list of names of persons killed. I had read it in his House.

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT: Madam, it is not enough to mention names only. There are other particulars also, i.e. address etc.

DR. RAMKRIPAL SINHA : I have given it to the House.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Let him complete.

श्री राजनारायण : होम मिनिस्टर रेस्पांसिबल आदमी हैं । सम्मानित सदस्यों का कर्तव्य है कि उनसे जानकारी लें । (*Interruption*) हाउलिंग क्यों की जाती है ?

श्री उमाशंकर दीक्षित : कोई हाउलिंग नहीं करेगा,

3TTT fTTT ^fepr i j was saying that if he gives particulars, we shall make all possible enquiries. But let him understand this seriously that it was not passible in the circumstances in which the firing took place for casualties to be concealed. It was not possible because in that crowd hundreds of people were there acid they would not have allowed it. If somebody got a small scratch and he did not consider it worthwhile to report, then it is different.

DR. RAMKRIPAL SINHA: I have given 8 names.

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : List does prove nothing. One can give any list.

DR. RAMKRIPAL SINHA : The list contained the names of the persons who were killed and whose names are not given in the Government list. I have given the list to the House today. What does the hon. Minister say about that ? The hon. Minister says that only 8 persons were killed. I challenge and in support of my point, I have given a further list of 7 or 8 names in my speech and I would like the hon. Minister to tell us what he has got to say about it.

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT: I have heard him. Let him not go on repeating. He is wasting the time of the entire House.

श्री राजनारायण : उपसभाध्यक्ष जी, वे टाइम वेस्ट नहीं कर रहे । हमारे साथ दर्जनों वकील पढ़े हैं गया में । मैं बनारस गया था तीन दिन पहले वे सब आकर मिले । वे जानते थे कि मैं बिहार नहीं आ सकता । उनका कहना था कि सौ से कम किसी तरह नहीं मरे ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : कहने की बात तो मैं रोक नहीं सकता । लेकिन एक बात मैं कहता हूं कि सब अस्पतालों में हमारे आफीसर गए, सबके नाम लिखे, सबके पते पूछे । सबका पता हमने लगा लिया । अब अगर कोई अस्पताल नहीं जाता, डाक्टर के यहां जाकर खबर नहीं देता, न पुलिस को खबर देता है तो हमारे पास ऐसा कोई साधन नहीं है कि हम जान लें ।

डा० रामकृपाल सिंह : इतनी लाशें पुलिस उठा ले गई ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : मैंने इसका उत्तर दे दिया है । इस पर कोई विश्वास नहीं करेगा ।

SHRI D. D. PURI : It is a figment of his imagination.

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT :

There was a talk about the pattern and so on. It was also said that we were wrong in giving credit or importance to one party. But the fact of the matter is that in Bhar it was not one party or two parties. When the Sangharsh Samiti was formed of the young men, practically all the parties were three, including Congress (Organisation), S.S.P., S.P., Jana Sangh and C.P.M. Only C.P.I, remained separate...

श्री राजनारायण : वह तो रूलिंग पार्टी के साथ है ।

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : ... .only the incident on the 16th—it cannot be denied—had to do something with the activities of the C.P.I. Madam, the point that I am submitting for the consideration of the House is that all thi parties took part in it.

In the Youngmen's Committees, all the parties took part and gave encouragement and moral and material support. That is what I was saying. Therefore, if there is credit, let-everybody share it. And if there is discredit, let anybody deny it or say whatever he or she thinks about it.

It was said here by Mr. Gunanand Thakur and some other friends that we have neglected Bihar economically, that nothing has been done and that special attention has to be paid in order to improve the economic conditions in Bihar. I entirely agree with the spirit of the logical re-quest arising out of the argument. So far as the facts go, it is not correct to say that it was neg-lected. It is true that in the Fourth Plan period, the performance over the total period was not as good as it should have been because, against an approved outlay of Rs. 531 crores in the Fourth Plan, the actual expenditure by the end of March, 1974, was roughly about Rs. 485 crores, that is about Rs. 50 crores less. But so far as the last two years are concerned Mr. Rajnarain will be glad to know that in 1972-73 and 1973-74, the performance of the Government was much better than before. For agricultural programmes, the approved outlay was Rs. 1605 lakhs and the actual expenditure was Rs. 1952. lakhs. For irrigation, Rs. 2544 lakhs was the approved outlay and Rs. 2,378 lakhs was the actual expenditure; a little less in this case. In the case of power, the outlay was Rs. 2750 lakhs and the actual expenditure was Rs. 3,900 lakhs. The approved outlay for general education was Rs. 1768 lakhs and the actual expenditure was Rs. 1766 lakhs. In the year 1973-74, for the agricultural programmes, Rs. 2,200 lakhs was approved and the same amount of Rs. 2,200 lakhs was invested. In irrigation, Bihar has really made some large strides. Against an approved outlay of Rs. 2,869 lakhs, Rs, 3,624 lakhs were actually utilised. Similarly, in power, against an approved outlay of Rs. 3,614 lakhs, Rs. 3,914 lakhs were invested. Like that, in other fields also. Of course, those figures are not so important. But I wish to give the information with full responsibility that in the last two years as in the other States in India, in Bihar also in irrigation, power, education, roads, etc. very considerable improvement has taken place, and funds were made available and they were utilized.

DR. RAMKRIPAL SINHA : I would like to have some information. In the proposed Fifth Plan, the outlay is only to the tune of Rs.

[Dr. Ramkripal Sinha] 1250 crores. That is not 10 per cent of the Central Plan as it should be... (Interruptions) SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : The allocation has been increasing consistently every five years...

DR. RAMKRIPAL SINHA : But not proportionately.

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : The backward State will remain backward and it cannot certainly jump overnight. I will give one impressive figure and then close this part of the discussion.

during the 18 years period, i.e., between 1951 and 1969, investment on Central industrial projects in Bihar amounted to Rs. 514 crores, which works out to 18 percent of the total investment on such projects as per its population percentage of 10.7 per cent.

What I read was up to 1969 only. Then, secondly, up to March 1972, as against the total investment of Rs. 4,792 crores in Central industrial projects approximately Rs. 1,064 crores were invested in Bihar, which is about 22 percent. In the three years after 1969, 30 per cent of the Central industrial investment was in Bihar.

Madam, it is not as if there has been indifference or deliberate neglect. But, of course, the allocation could have been larger in order to make up for the past leeway. That, of course, would be desirable. But, even then nobody should run away with the impression that in the last two years the Government did not make good effort or that on the general lines on which other States have progressed, Bihar has not progressed. In fact, in the industrial field very considerable investment, more than proportionately due, was made in the development of Bihar. Now, so far as... (Interruptions)

श्री राजनारायण : जब आप ये फिगर्स देते हैं तो यह भी दें कि दूसरें राज्यों को आपने कितना दिया और बिहार और उत्तर प्रदेश को कितना दिया । अगर तुलना करेंगे तो बिहार में कम पायेंगे । आप कहते हैं तो मैं ये फिगर्स पढ़ दूं ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : आप वह पढ़ेंगे तो दो रामायणें चलेंगी । मैं इतना ही कहूंगा कि जो असंदिग्ध है उतना कहने का मुझे अधिकार है । अब श्रीमन्, मैं उद्योग के संबंध में कहना चाहता हूं । That in industries

DR. RAMKRIPAL SINHA : I want to know whether the hon. Minister is going to institute a Commitee of both the Houses. (Interruptions)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : I am not allowing you.

SHRI RAJNARAIN : मैडम, यह कांव कांव तो रोकिए ।

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती पुरबी मुखोपाध्याय) : आप बैठिये ।

SHRI GUNANAND THAKUR : इस तरह से तो काम नहीं चल सकता है ।

SHRI RAJNARAIN : या तो आप कंट्रोल करें या उनको अपनी बात कहने दीजिए ।

DR. RAMKRIPAL SINHA : Madam, you are the custodian of the rights of the Members. दोनों सदनों की जांच समिति बनाने में सरकार को क्या आपत्ति है । सब रहें उसमें ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : I am not allowing this. Just a minute. We have been discussing this question for hours and hours. The Minister must get a chance to reply to the main points raised in the House. I will not allow interruptions from anybody in this House.

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : Now, Madam, one point has been made by more than ont hon. Member and it has been alleged that it is not enough to be elected because elections have not been done properly, that there have not been free and fair elections. Madam, I do not know wherefrom our friends got this impression for the first time. Till the end of the last General Elections everybody in India and abroad, that is, anybody who was politically conscious and was interested in this subject said that Indian elections were of the fairest and freest kind. Even foreigners have testified to this fact. Now, one allegation was made...

SHRI RAJNARAIN : फारेनर्स जरूर करेंगे ।

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : All the foreigners are not our friends.

Madam, one allegations was made and it was repeated continuously for a number of weeks and months. It was said that there was some invisible ink. Madam, we just did not know what

to do about it. We just went and saw the Secretary. We went and saw the Chief Election Commissioner. All the available 7 papers were gone through where they were printed, those that were actually used and so on but we found absolutely not race or evidence of any kind of invisible ink. It was just some sort of election stunt and it did confuse the people for some time but thereafter everybody closed the chapter and everybody kept quiet because all felt convinced that that had no basis.

P.M.

श्री राजनारायण : हमें पूरा हक है कि मिनिस्टर साहब से सफाई मांगे । अगर मिनिस्टर साहब यह कहेंगे कि इलेक्शन में किसी तरह की गड़बड़ी नहीं हुई तो मैं उनसे अदब के साथ कहूंगा कि कैसे नहीं हुई, बताएं । पैटीशन अभी चल रहा है ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : मैं बताता हूं, क्यों हम मानते हैं कि चुनाव में हमारी तरफ से कोई अनुचित तरीके नहीं बरते गए । उसका कारण मैं यह बताना चाहता हूं कि यह बात खास कर उत्तर प्रदेश के चुनाव के बाद कही गई है और कई चीजें बार-बार कहीं गई हैं । उत्तर प्रदेश के कुछ विरोधी नेताओं ने कही हैं और कुछ बाहर के लोगों ने भी उसी आवाज को उठाया है ।

My submission in this respect is this I was reading the newspapers everyday. On 29 occasions, as reported in daily papers, the meetings that were addresed by the Congressmen, from the Prime Minister downwards were disturbed deliberately. I went to about 40 places. At one place a big glass of my pickup was broken. Eight to nine stones were thrown into it. Two or three came very near my body and the splinters fell all over the places. There was hardly a meeting which was not disturbed. Who is responsible for making the elections unfair- ? Is that the fair and free way of running elections ? The Rajnarain's Party and the BKD in particular was indulging in these activities. Madam, no wonder in U.P. there has been an old tradition that...

श्री राजनारायण : वहां बंसी लाल जी भेजे गए ।

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : That is why they are angry that some of their moves have not succeeded fully this time. This is what I wanted to say.

श्री राजनारायण : कभी नहीं । असत्य ।

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : Madam, Harijans and other people of the backward classes who are not really so strong, who are backward economically, backward in terms of caste, have been consistently intimidated from election to election, in every election. In one particular booth—I am referring to the earlier 1967 elections—all the votes, mind you Madam, all the votes were caste in favour of Choudhry Charan Singh only. It cannot be that all the hundred per cent votes ...

SHRI RAJNARAIN : On a point of order.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : What is your point of order ?

श्री राजनारायण : मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है । दीक्षित जी आप बैठ जाइए । इस वक्त हम बिहार पर डिस्कशन कर रहे हैं । उत्तर प्रदेश के चुनाव में सरकार ने कितनी बेइमानी की, वह विषय अलग है । मैं चाहता हूं कि आप इस सदन की कमेटी बना दें । मेरे पास बहुत से फोटो हैं जिनमें यह है कि किस तरह से सरकार ने सरकारी कर्मचारियों से बेइमानी कराई । रायबरेली में चार बार हमारे उम्मीदवार को हराया गया ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : राजनारायण जी, मेरी एक बात तो मान लें जो मैं अपने अनुभव के आधार पर बता रहा हूं । जिन-जिन जगहों में मैंने जाकर भाषण करने का प्रयत्न किया, जहां पर मैंने दौरा किया उनमें आपका त्रिगुटी-गठन ज्यादातर था । उसमें आप भी शामिल हो जाते हैं । . . .

श्री राजनारायण : प्रधान मंत्री से लेकर छोटे-छोटे गवरू तक उनकी मीटिंग में गए हुए हैं । गफूर साहब हमारे साथ बलिया में बोल रहे थे । केवल 150—200 पी० ए०सी० के जवान थे । गफूर ने कहा हम कोई भाषण नहीं करेंगे जब कोई पब्लिक नहीं है, मैं जाऊंगा और पी० एम० को पूरी स्थिति की जानकारी कराऊंगा । सरकार चाहती नहीं हैं, न प्राइम मिनिस्टर चाहती है, न दीक्षित जी चाहते हैं . . .

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Mr. Rajnarain, you are again making a speech.

श्री उमाशंकर दीक्षित : आप राजनारायण जी ऐसा गलत उदाहरण पेश करते हैं जिससे हम सब आपके रास्ते पर जाने वाले हैं । आप कृपा करके संयम करो ।

श्री राजनारायण : हमारे रास्ते पर दीक्षित जी आ जाएं तो मुल्क का कल्याण हो जाए ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : हम तो, अगर आप समझा दें कि आपके रास्ते से कल्याण होगा, तो जाने के लिए तैयार होंगे और अगर आप न समझाएं तो आपको हमारे रास्ते पर जाना होगा ।

श्री राजनारायण : जनतंत्र की खूबी है—समझो और समझाओ ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : आप तो अपनी ही बात मानते है, दूसरे की नहीं मानते । आपको समझावे कौन ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Mr. Rajnarain, you are not the only person present in this House.

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : What I was trying to say is that this allegation sounds very hollow in the face of all the facts I have referred to just now—that a consistent attempt was made by the Opposition parties in U. P. to disturb practically every meeting that the Congress workers tried to address. Now, is that the way to ensure freedom and fairness of elections ? If it is not, I have met the point.

श्री राजनारायण : जनता ने अपने गुस्से का इजहार किया ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : महोदया, राजनारायण जी ने, कोई विशेष, विवादास्पद बात नहीं कहनी चाही और मुझे खुशी है कि राजनारायण जी ने आज विवादास्पद बात कही भी नहीं है । आपने अधिकांश जो विषय रखे उनका संबंध बिहार की वर्तमान परिस्थिति से न्यूनतम था । वही मैं सोचता रहा, खींचता रहा, कहीं न कहीं इसका संबंध आगे पीछे मिलेगा, लेकिन कहीं नहीं मिला । जैसे उन्होंने बताया पीपुल्स वार में सी०पी०आई०वाले करते थे । मान लीजिए कि करते थे, अब नहीं करते, लेकिन बिहार से इसका क्या संबंध है ?

श्री राजनारायण : बिहार में सी०पी०आई० कांग्रेस से मिल कर सारी बंगलिंग करवा रही है । मुझे अफसोस है, दीक्षित जी सी० पी० आई० के हाथों खेल रहे हैं (*Interruption*) और महोदया, मैं दीक्षित जी को इसका केडिट दूंगा कि दीक्षित जी सी०पी०आई० की नस को पकड़ रहे हैं, मगर प्रधान मंत्री जी उसको नहीं पा रही है ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : अब मेरे ऊपर आरोप नहीं लगाइए और हमारे बीच में झगड़ा न कराइए । मैं झगड़े में नहीं पड़ूंगा ।

श्री इन्द्रदीप सिंह : बिहार का इश्यू है, लेकिन उत्तर प्रदेश वाले ही सब समय ले रहे हैं । गफूर साहब का इलेक्शन मधुबनी में कैसे हुआ इसका जिक्र किया जाए—ट्रेनें बंद की गईं, बसें बंद की गईं ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : मुझे थोड़ा सा समय, 5—7 मिनट से ज्यादा नहीं लेना है । मैं केवल तर्क उपस्थित करता हूं । मुझे और कोई विशेष आग्रह नहीं है । आपने गांधी जी के वचन का उद्धरण किया । मेरा कहना है कि गांधीवाद में या गांधी जी के वचनों में अगर आपकी शत प्रतिशत नहीं, 90 प्रतिशत भी आपकी आस्था हो, उसमें विश्वास हो, तो आप गांधी जी का उदाहरण दीजिए. लेकिन यदि आप प्रत्येक श्वास में, प्रत्येक वचन में, प्रत्येक कार्य में गांधीवाद के विरुद्ध काम करते रहे तो मेरा कहना है कि ऐसे माननीय सदस्य को गांधी जी का नाम लेने का विशेष अधिकार नहीं है ।

श्री राजनारायण : विनम्रता से निवेदन है कि माननीय दीक्षित जी एक भी उदाहरण दें कि मैं गांधी जी के मार्ग से हटा हूं । 48 बार दीक्षित जी के राज्य में मैं जेल गया हूं, मेरी दाढ़ी नोची गई है, मुझको घसीटा गया है । 14 साल हम कांग्रेस के राज में जेल में काटे हैं ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : हमारा और राजनारायण का मेल खाता है, यदि वे गांधी जी के विचारों पर, आदर्शों पर, सिद्धांत पर विश्वासत करते हैं, उन पर चलते हैं, उस हालत में हम उनके बहुत निकट हैं, क्योंकि हमारा भी जीवन भर यही प्रयत्न रहा है कि हम गांधी जी के आदर्शों के निकट रहें ।

श्री राजनारायण : आप खुद कहते हो कि गांधी जी को मानते हो ?

श्री उमाशंकर दीक्षित : जी हां ।

श्री राजनारायण : हरगिज नहीं ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : तो फिर हमारा और आपका मेल नहीं खाएगा । हमारी शिकायत है कि यह बात अनुचित थी कि छात्रों को शिक्षण से हटा लिया जाए ।

श्री राजनारायण : जैसे गांधी जी ने कहा था 'डू आर डाइ', वैसे ही हमने कहा करो या मरो । आज छात्रों की मांग है, भ्रष्टाचार मिटाओ, बेकारी मिटाओ, गवर्नमेंट को हटाओ । वे उसे ले लें या मर जाएं ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : जो छात्रों के बारे में कहा कि वे शान्त न हों, यह उद्देश्य की कोई सेवा नहीं की, उसके साथ न्याय नहीं किया । जो लड़के हमने देखे हैं, जिनके हमारे पास चित्र हैं, जिनकी हमारे पास सूचनाएं हैं, वे कोई बड़े यूनिवर्सिटी के लड़के हों 18, 20 या 22 वर्ष के, ऐसी बात नहीं है । अधिकांश लड़के स्कूलों में पढ़ने वाले हैं । 12, 13, 14 वर्ष के, 18 साल से ज्यादा मुश्किल से मिलेंगे । ऐसे बच्चों को उनकी पढ़ाई से निकाल लेना,

उनसे यह कहना कि जाकर लोगों को धमकावें, घबड़ावें, यह उनको जीवन की कैसी शिक्षा दे रहे हैं ?

डा० राम कृपाल सिंह : 1922 की ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : 1922 में एक विदेशी साम्राज्य के विरुद्ध अभियान चल रहा था । साम्राज्यवाद विरोधी अभियान और देश के अन्दर विधि द्वारा चुनी हुई सरकार के विरुद्ध आन्दोलन—जिसे जब आप बदल भी सकते हैं—उन्हें एक जैसा बताएं तो आप अन्याय कर रहे हैं अपने समाज के साथ ।

श्री राजनारायण : . . . अपनों से भी मुहब्बत हो नहीं सकती ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : शायरी की तरफ आप चले गए । उससे कुछ सांस्कृतिक लाभ हो सकता है ।

श्री राजनारायण : शायरी तो मैं आपको रात दिन सुना सकता हूं ।

श्री उमाशंकर दीक्षित : मैं यह कह रहा था कि जो बच्चों को सिखाया जा रहा है और उनको कहा जाता है "नवीन घटना है, नवीन मार्ग निकला है", यह उचित नहीं है । महात्मा गांधी ने जो सन्, 20, 21 और 22 में विद्यार्थियों को निकाला था उसके साथ इसकी एकरूपता कर देना अपने देशवासियों के साथ अन्याय करना है । जो रुख हमारा अंग्रेजों के प्रति था या दूसरे अत्याचारियों के प्रति था, विदेशी साम्राज्यवादियों के प्रति था, जो दो सौ साल तक हमारे ऊपर शासन करते रहे, वही रुख हमारा अपने शासन के प्रति हो, यह मानने योग्य बात नहीं है ।

एक बात मैं और बताना चाहता हूं कि विरोधी दल क्यों हमसे नाराज हैं । जहां मल्टी-पार्टी सिस्टम आफ गवर्नमेंट है । In a multi-party system of Government, wherever there are more than one party, wherever there is free society, any new party can be formed besides the ruling party and there the opposition parties expect sooner or later to take over from the ruling party. The distortion in the situation is... (Interruptions) Let him not now excite other people and create trouble and unnecessarily waste the time of the House. My request to him is, let him keep patience for a while. The point that I want to submit for everybody's consideration is this. The reason why the Congress Party has occupied positions of office and power for such a long time is because the Congress Party was the one Party which was most effective in bringing freedom to the count-try. That is why the people are supporting the Congress Party. Otherwise, I am sure . . .

श्री राजनारायण : डिस्टार्शन आफ फैक्ट्स नहीं होना चाहिए । दीक्षित जी आप समझदार आदमी हैं । उस समय कांग्रेस पार्टी नहीं थी, राष्ट्रीय मंच था । गांधी जी की हत्या के बाद कांग्रेस बदल गई । अब कांग्रेस पार्टी है ।

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT :

श्री राजनारायण : आप सही बातें क्यों नहीं बोलना सीखते ? जिस समय वह कांग्रेस थी वह राष्ट्रीय मंच था । गांधीजी के मरने के बाद कांग्रेस, कांग्रेस पार्टी में बदल गई । Gandhiji was not the only leader of the Party. The Indian r- ational Congress had an eminent array of leaders like Maulana Azad, like Sardar Vallabhbhai Patel, like Pandit Motilal Nehru, like Jawaharlal Nehru. It was not only Mahatma Gandhi. He led us, but there were millions of followers of Mahatma Gandhi...

THE VICE CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI M JKHOPADHYAY) : Mr. Raj-narain, pleas; sit down. I will not allow you to get up again because you are only interrupting. You may not agree with his point of view, but he has a eight to place his point of view.

श्री राजनारायण : यह इतिहास की बात है ।

(Interruption)

THE "ICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI M JKHOPADHYAY) : Please, no running commentary. It is going to be 7.15 and I will not allow this. Please sit down.

SHRI UMASHANKAR DIKSHIT : Madam, befo re I close, I only wish to submit that so long as e ;agerated statements and pictures are placed before the House we are bound and will continut to place the other side of the pic-ture, howevt r unpleasant it may appear to the other people. It is our duty to place those facts.

आपने कहा कि हम सही नहीं बोलते । तो जब तक आपके जैसे विरोधी नेता गलत बात कहते रहेंगे, तब तक हम सही बात कहते रहेंगे । और हमारे पास दूसरा मार्ग नहीं है । लेकिन अन्त में मेरा निवेदन यह है कि जैसा गोरे जी ने कहा था कि आज की परिस्थिति इस प्रकार की है, आर्थिक स्थिति इस प्रकार की पहुंची है कि इसमें शासक दल को और विरोधी दलों को आज की परिस्थितियों पर विचार करना चाहिए और जो पहले की भावनायें हैं परस्पर विरोध की या गलतफहमियां हैं उनको एक तरफ रख कर इस बात पर विचार करना चाहिए कि वर्तमान परिस्थिति में क्या करने से देश खतरे के रास्ते पर न जाने पावे; क्योंकि एक बात आप समझ लीजिए, जैसा कि सेन

[Shri Umashankar Dikshit]

गुप्ता जी ने कहा और भाइयों ने भी कहा कि अराजकता हो सकती है या अराजकता हो गई है या उस मार्ग पर हम जा रहे हैं। तो कोई भी दल जिसका प्रतिनिधित्व पार्लियामेंट के अन्दर है वह यह नहीं चाहेगा कि इस देश में अराजकता फैल जाए। अगर अराजकता फैलेगी तो किसी भी दल को लाभ होने वाला नहीं है। यह भविष्यवाणी मैं कर सकता हूं। अगर यहां पर तानाशाही आयेगी तो इसी कारण से आयेगी कि हम आपको बुरा कहें और आप हमको बुरा कहें और जनता कहेगी कि ये दोनों बुरे हैं। इसलिए गोरे जी ने जो सुझाव दिया है हमें उस पर चलने की कोशिश करनी है। सारी परिस्थिति पेचीदा है। इसमें अगर आप कहते हैं कि भाव कम कर दो, जैसे कि कोई बादशाह था, कैन्यूट, उसने समुद्र से कहा कि रुक जाओ, मगर वह रुका नहीं। कैन्यूट बेचारा देखता रहा। यह जो चीजों का भाव बढ़ गया है। और हमने हुक्म दे दिया या आपने दे दिया कि रुक जाओ, इससे रुकने वाला नहीं है। इसलिये गहराई से परिस्थिति पर विचार करना चाहिए। आर्थिक राजनीतिक, सामाजिक परिस्थिति पर विचार करके ऐसा रास्ता निकालना चाहिए, जिससे कम से कम विवाद दलों के बीच हो। इसके लिए जो गोरे जी ने विचार व्यक्त किये हैं, मैं उनका धन्यवाद करता हूं और आशा करता हूं कि जो भी भ्रान्तियां बिहार के संबंध में हो रही हैं वह नहीं रहनी चाहिएं। और जैसे मृत्यु या घायल होने के बारे में जो कोई भी समाचार मिले हैं वह हमको दें, हम उन पर विचार करेंगे। हमने बताया कि किस अवस्था में ऐसा हो सकता है, कोई गलतफहमी रही हो या उनके पास सही खबर न आई हो। उस अवस्था के सिवाय ऐसी बात संभव ही नहीं है। लेकिन फिर भी मैं इस बात से इंकार करता हूं कि जो आप कह रहे हैं वह झूठ कह रहे हैं। जब तक हम अपना संतोष नहीं कर लेंगे, सारा पता नहीं लगा लेंगे इस प्रकार से कि आप को भी हम समझा सकें, तब तक हम उसके लिए आप को भी इन्कार नहीं करेंगे। तो ऐसी कोई सूचना वह यदि देंगे या उन की पार्टी के कोई भाई देंगे तो उस पर हम सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे और उस के बारे में जो भी उचित कार्यवाही होगी वह करेंगे।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : The House stands adjourned till 11.00 A.M. tomorrow.

The House then adjourned at twentyone minutes past seven of the clock till eleven of the clock on Wednesday, the 24th April, 1974.

MGIPNT K—9/Raiva Sabha/74—12-8-74-595 Bks.